हिन्दी पद्य साहित्य और अनुवाद

COURSE CODE: B21HD02LC

Hindi Language Core Course
For Under Graduate Programmes

Self Learning Material

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

हिन्दी पद्य साहित्य और अनुवाद

Course Code: B21HD02LC

Semester - IV

Hindi Language Core Course For Undergraduate Programmes Self Learning Material

(With Model Question Paper Sets)

SGOU

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

हिन्दी पद्य साहित्य
और
अनुवाद

Course Code: B21HD02LC
Semester - IV

Hindi Language Core Course
For UG Programmes

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

ISBN 978-81-970303-8-3

9 788197 030383

DOCUMENTATION

Academic Committee

Dr. Jayachandran R.
Dr. P.G. Sasikala
Dr. R. Sethunath
Dr. B. Ashok
Dr. Pramod Kovvaprath
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. Vijayakumar B.

Development of the content

Dr. Jayasree O., Dr. Divya S., Dr. Rathee D., Dr. P.G. Sasikala, Krishna Preethi A.R.

Review

Content : Prof. N. Vijayakumar, Dr. N. Shaji, Dr. N. Mohanan
Format : Dr. I.G. Shibi
Linguistics : Prof. N. Vijayakumar

Edit

Prof. N. Vijayakumar, Dr. N. Shaji, Dr. N. Mohanan

Scrutiny

Dr. Indu G. Das, Christina Sherin Rose, Krishnapreethi A.R.

Co-ordination

Dr. I.G. Shibi and Team SLM

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Lisha S.

Production

August 2024

Copyright

© Sreenarayanaguru Open University 2024

YouTube

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. This material covers a full course in Hindi language and literature. It is part of the required language studies in the curriculum. The course introduces learners to the Hindi language and literature broadly, hoping to inspire them to explore similar areas further. The content is organised logically to provide a clear and consistent learning experience.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P.

01-08-2024

Contents

BLOCK 01 प्राचीन और मध्यकालीन रचनाएँ 01

इकाई 1 कबीरदास 02

इकाई 2 तुलसीदास 06

इकाई 3 सूरदास एक पद 11

BLOCK 02 छायावाद की कविताएँ 18

इकाई 1 भिक्षुक निराला 19

इकाई 2 किरण जयशंकर प्रसाद 31

BLOCK 03 प्रगतिवादी कविता 37

इकाई 1 प्रेत का बयान नागार्जुन 38

BLOCK 04 समकालीन कविता 46

इकाई 1 वक्त अरुण कमल 47

BLOCK 05 हाइकु कविताएँ 52

इकाई 1 कटे जंगल सुरंगमा यादव 53

BLOCK 06 अनुवाद 65

इकाई 1 अनुवाद : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप 66

इकाई 2 अनुवाद का महत्व और उद्देश्य 70

इकाई 3 अनुवाद 73

Model Question Paper Sets 77

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK 01

प्राचीन और मध्यकालीन रचनाएँ

SOU

इकाई 1

कबीरदास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भक्तिकाल की हिन्दी कविता के सौंदर्य की झलक
- कबीर युगीन राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक परिस्थिति की जानकारी
- कबीर की मुख्य रचना की विशेषताएँ समझना

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

समाज सुधारक कबीरदास हिन्दी साहित्य के निर्गुण भक्ति धारा के सर्वप्रमुख कवि है। मूर्तिपूजा के कट्टर विरोधी और भक्ति युग के बडे क्रांतिकारी कवि है। निर्गुण ब्रह्म की उपासना का संदेश उन्होंने दिया है। उनका जन्म निम्न जाति में हुआ था। वे अनपढ हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

कबीरदास का जीवन चरित एवं व्यक्तित्व, भक्ति और दर्शन

Discussion / चर्चा

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भक्ति भावना से ओतप्रोत अत्यंत समृद्ध साहित्य सृजन इस काल में हुआ। इस काल की रचनाओं को इतिहासकारों ने चार शाखाओं में विभाजित किया है- सगुण भक्ति धारा की दो शाखाएँ है- राम भक्ति और कृष्ण भक्ति। निर्गुण भक्ति धारा की दो शाखाएँ - ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी। कबीरदास निर्गुण भक्ति के ज्ञानाश्रयी शाखा के सशक्त हस्ताक्षर है। कबीरदास बहु आयामी व्यक्तित्व है। वे संत, भक्त, कवि, दार्शनिक, समाज सुधारक, क्रान्तिकारी और सबसे बढ़कर समन्वयवादी और मानववादी थे। समकालीन शासन व्यवस्था, समाज की अधार्मिकता, अनाचार, अंधविश्वास, पाखण्ड आदि सब की उन्होंने निर्मम आलोचना की। उनकी आलोचना का आधार ज्ञान, विवेक और मानवता थी।

कबीर की रचनाओं का संग्रह 'बीजक' है जिसके तीन भाग है- साखी, सबद और रमैनी। कबीर और केरल के श्रीनारायण गुरु दोनों के जीवन की सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक परिस्थितियाँ समान थीं। दोनों के दृष्टिकोण, दार्शनिक चिंतन, सुधारवादी व्यवहार आदि में बहुत समानताएँ दिखाई देती है। कवि रवीन्द्रनाथ टागोर कबीर से प्रभावित थे।

रहस्यवादी कवि हैं। निर्गुण ब्रह्म को भावना का विषय बनाकर अपनी रहस्यवादी प्रवृत्ति का परिचय देते हैं। अज्ञात सत्ता को संपूर्ण संसार में देखते हैं, परमात्मा के मिलन के आनंद की अनुभूति भी उनके काव्य में उपलब्ध होती हैं। जीवन की क्षणिकता और बाह्याडंबर की व्यर्थता पर प्रकाश डालते हैं।

कबीर के समय की राजनीतिक परिस्थिति

भारतीय इतिहास में कबीरदास का समय घोर राजनीतिक उथल-पुथल और संक्रांति का माना जाता हैं। सामान्य जनता में राजनीतिक चेतना का अभाव था। पूरे भारत में केंद्रीय शासन का अभाव था। इस समय मुसलमानी शासन से लोग उदासीन थे क्योंकि संपत्ति एवं अधिकार सुल्तान और उनके सामंतों तथा उच्च पदाधिकारियों तक सीमित था।

धार्मिक परिस्थिति

मध्यकाल में धर्म की दशा अत्यंत शोचनीय थी। हिन्दू धर्म में वर्णाश्रम व्यवस्था अपने विकृत एवं कराल रूप में थी। इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा सत्ता के बल पर हो चुकी थी। हिन्दु जाति पाखंड और अनाचारों में डूबकर दिशाहीन हो गयी थी।

मूर्तिपूजा और अन्य विश्वास में डूबी जनता पूर्ण रूप से पथभ्रष्ट थी। इस्लाम धर्म भारत पर आक्रमण करने वाले विदेशियों का धर्म था। हिन्दूओं को तलवार के बल पर मुसलमान बनाया जाता था।

सामाजिक परिस्थिति

जनता सामाजिक शोषण से पीडित थी। लोग विलासी थे। शासन व्यवस्था अस्थिर थी। छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त देश में हमेशा युध्द होता था। जनता का शासक पर विश्वास नष्ट हो गया और उन्होंने ईश्वर की शरण ली। मूर्तिपूजा, बाल-विवाह, पर्दाप्रथा, सतीप्रथा जैसी कुरीतियों का खूब प्रचार हुआ। लोगों के अनपढ होने के कारण सही रास्ते की ओर ले चलना मुश्किल था।

निर्गुण भक्ति

निर्गुण भक्ति हिन्दी सहित्य के इतिहास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण शाखा है। ईश्वर को निर्गुण निराकार मानना निर्गुण भक्ति काव्य की आधारभूत मान्यता है। ईश्वर समस्त सृष्टि में व्याप्त है। मूर्ति या मंदिर बनाना व्यर्थ है। अवतार वाद जाति-पांति और ऊँच-नीच के भेद में अविश्वास तथा समाज में व्याप्त बुराइयों और अनाचारों का विरोध आदि निर्गुण भक्ति की विशेषताएँ है। कबीर के विचार में राम और रहीम दोनों एक है।

रामानंद

रामानंद कबीर के गुरू थे। नीरू और नीमा नामक जुलाहे दंपतियों से पालित कबीर को ब्राह्मण रामानंद ने अपना शिष्य बनाने से इनकार किया।

एकदिन प्रातः काल ब्राह्म मुहूर्त में रामानंद पंचगंगा घाट पर स्नान केलिए जाते वक्त कबीर सीढियों पर जाकर लेट गया। जब कबीर पर रामानंद का पैर लगा तब उनके मुह से ‘राम राम’ शब्द निकला। कबीर ने राम शब्द को गुरुमंत्र मान लिया। कबीर के लिए गुरु ईश्वर से ऊपर है। क्योंकि ईश्वर को जानने का सही मार्ग गुरु प्रदान करता है।

कवि परिचय

कबीरदास भक्ति युग के बडे क्रांतिकारी कवि एवं मूर्तिपूजा के कट्टर विरोधी हैं। कहा जाता है कि कबीरदास अनपढ है। शिष्यों ने उनकी रचना को लिपिबद्ध किया। कबीर के प्रमुख शिष्य धर्मदास ने उनकी बोलियों का संग्रह ‘बीजक’ नाम से तैयार किया जिसके तीन भाग है ‘साखी’, ‘सबद’ और ‘रमैनी’। साखी दोहे, सबद पदों और रमैनी चौपाइयों का संकलन है। भाषा पर उनका जबरदस्त अधिकार था, इसलिए आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवदी ने उन्हें ‘वाणि का डिक्टेटर’ कहा है। उनकी रचना में भाव एवं रस की योजना है। संयोग और वियोग श्रृंगार के सुंदर चित्र आपके रहस्यवादी दोहों में उपलब्ध है। उनकी भाषा सधुक्कड़ी कहलाती है। वास्तव में वह एक खिचडी भाषा है। उसमें कई भाषाओं का समन्वय है:- ब्रज, अवधी, पंजाबी, राजस्थानी आदि।

मृत्यु

लोई कबीर की पत्नी थी, बेटा कमाल और कमाली बेटी थी। उनकी मृत्यु के बारे में भी किंवदंतियाँ है। विधवा ब्राह्मणी के कोख में जन्म लेने से वे हिन्दू, पालन-पोषण मुसलमानों से होने से मुसलमान दोनों थे। हिन्दु उनके शव का अग्नि संस्कार करना चाहते थे लेकिन मुसलमान उसे कब्र में गाढ़ना। अंत में कफन उठाकर देखा तो लाश के स्थान पर फूलों का ढेर ही था। लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं है। जो भी हो उनका देहांत मगहर में हुआ था।

1. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।

   मोल करो तलवार का पडा रहन दो म्यान।।

शब्दार्थ

साधू	-	सन्यासी
ज्ञान	-	आत्मज्ञान
मोल करो	-	मूल्य करो
तलवार	-	खड्ग
पडा रहन दो	-	छोड
म्यान	-	तलवार की धार का आवरण

व्याख्या

कबीरदास भक्तिकाव्य की निर्गुण धारा के प्रतिनिधि कवि है। असाधारण प्रतिभा संपन्न कबीर निर्गुण संत कवि है। साखी में

भक्ति का भरमार है।

साधु संतों का ज्ञान को ज़्यादा महत्व देते हुए कवि कहते हैं कि साधु की जाती पूछने की जरूरत नहीं। उसमें ज्ञान का भंडार है। साधु के ज्ञान को महत्व देना ही उचित है। उससे ज्ञान की बातें पूछ लीजिए। जिस प्रकार तलवार खरीदते समय हम तलवार के धार की जाँच करते है, उसके म्यान के सौंदर्य पर ध्यान नहीं देते। साधु का महत्व जाति में नहीं, उसके ज्ञान में है। तलवार की धार की जाँच होती है, न उसके म्यान की। साधु का महत्व गुण-ज्ञान में है। जाति कबीर के विचार में मूल्यहीन वस्तु है। ज्ञान तलवार की धार के समान है। कबीर हमेशा जाति की निंदा करते थे। कबीरदास बाह्याडंबर का कट्टर विरोधी है। साधु के ज्ञान ग्रहण करने और तलवार के महत्व को समझने का उपदेश देते है।

2. गुरू गोविन्द दोऊ खडै, काके लागूं पाय।

बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय।

शब्दार्थ

गोविन्द	-	ईश्वर
दोऊ	-	दोनों
काक	-	किसके
लागू पाँव	-	पैर छूकर प्रणाम करना
बलिहारी	-	न्यौछावर
बनाय	-	परिचय देना

कबीरदास जीवन में गुरू को ज़्यादा महत्व देते है। गुरू की महिमा बताते हुए कबीर कहते हैं कि गुरू और ईश्वर दोनों सामने खडे हैं तो पहले किसका प्रणाम करना चाहिए। कबीर के अनुसार हमें पहले गुरू के चरण छूकर प्रणाम करना है क्योंकि गुरू ने ही हमें ईश्वर का परिचय दिया है। उनके विचार में गुरू हमें अंधकार से उजियाला की ओर ले जाने वाला है। हमारे अंदर जो अज्ञान या कलंक है गुरू उसे दूर करता है। कबीरदास के अनुसार गुरू का स्थान सर्वोपरी है। ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीर जीवन पर्यंत ज्ञान को सबसे अधिक महत्व देते थे। क्योंकि इसी के बल से उन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया था। उनके विचार में ईश्वर से भी अधिक वंदनीय गुरु हैं। क्योंकि ईश्वर के सभी गुणों की पूर्ण जानकारी गुरु को प्राप्त है। इसलिए वह ईश्वर के बारे में शिष्य को बताता है। गुरु ज्ञान है, इसलिए ज्ञान के सामने अपने को समर्पित करना ही महत्वपूर्ण न्यौछावर है।

Critical Overview / अवलोकन

भक्तिकाल के प्रमुख संत कवि कबीरदास हिन्दी साहित्य के प्रमुख रचनाकार है। वे न केवल कवि, बल्कि समाज सुधारक, भक्त, दार्शनिक आदि कई रूपों में सामने आते हैं। ईश्वर की महिमा का गान करने से ज्यादा कबीर गुरु का महिमा की गान करते हैं। उनकी चिंतन प्रक्रिया अद्भुत है। तत्कालीन समाज में प्रचलित हर रूढी का उन्होंने विरोध किया। उनकी रचनाओं का संकलन उनका शिष्य धर्मदास ने की थी। और यह हिन्दी साहित्य एवं भारतीय समाज दोनों केलिए बहुत ही लाभदायी रही है।

Recap / पुनरावृत्ति

- भक्तिकाल
- निर्गुणभक्ति
- कबीरदास
- गुरू रामानंद
- कबीर का जीवन
- कबीर की रचना

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कबीरदास का जन्म कहाँ हुआ?
2. कबीरदास किस धारा के कवि है?
3. कबीर के माँ-बाप कौन है?
4. कबीर के गुरू कौन हैं?
5. कबीर का ईश्वर कौन है?
6. कबीर की रचना कौन-सी है?

Answers उत्तर

1. काशी
2. निर्गुण
3. नीरु और नीमा
4. रामानंद
5. राम
6. बीजक

Assignments प्रदत्त कार्य

1. कबीर का व्यक्तित्व
2. कबीर के गुरू
3. कबीर की भक्ति
4. कबीर की रचना
5. कबीर का दर्शन

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुकल
2. हिन्दी भक्तिकाल - नंददुलारे वाजपेयी
3. कबीरदास - हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. कबीर की प्रासंगिकता - डाॅ. भरत

इकाई 2

तुलसीदास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- सगुण हिन्दी कविता में तुलसीदास
- तुलसीदास के युग का परिचय
- तुलसीदास की रचनाओं की झाँकी

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

तुलसीदास भारतीय भक्ति आंदोलन के महान उपलब्धि हैं। उनकी गणना हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवियों में की जाती हैं। उनकी प्रतिभा सर्वतोन्मुखी थी। वे भक्त, कवि, लोकनायक और समन्वयकारी थे। वे भारतीय परंपरा के उच्चतम मूल्यों के समर्थक थे। उन्होंने लोकप्रचलित रुढियों को समाप्त करने अैर जनता के जागरण केलिए साहित्य सृजन से प्रयास किया था। वे रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

तुलसीदास का जीवन चरित, व्यक्तित्व, भक्ति एवं दर्शन

Discussion / चर्चा

तुलसीदास सगुण भक्ति आंदोलन के प्रमुख कवि और रामकाव्य परंपरा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। रामचरितमानस तुलसीदास की सबसे महत्वपूर्ण रचना है। भक्ति को उन्होंने जन-जन की संपत्ति बना दिया। तुलसीदास मानव कल्याण और करुणा के कवि हैं।

तुलसी युग राजनैतिक परिचय

भारतीय इतिहास से मालूम होता है कि तुलसीदास के युग में मुसलमानों का शासन था। तुलसीदास मुगल शासक हमयून और अकबर के समकालीन थे। कई रियासतें पारस्परिक झगडों में उलझी थी। उत्तर भारत में राजनीतिक अस्थिरता थी। सत्ता के बल पर जबरदस्त मत परिवर्तन होता था और हिन्दू जाति शासन व्यवस्था से अत्यंत पीडित थी।

धार्मिक परिस्थिति

तुलसी के युग में जनता मुगलों के शोषण और आतंक से भयभीत थी। तत्कालीन धर्म के आगे तुलसी ने रघुकुल राम के धर्म और परिवार का आदर्श प्रस्तुत किया। भाई चारे का उत्तम उदाहरण राम-लक्ष्मण-भरत जैसे धार्मिक आदर्शों या नैतिक मूल्यों के द्वारा अनुपम नमूना रखा। धर्म के ठेकेदार माननेवाले राजा लोग विलासी तथा क्रूर होते थे। तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में तत्कालीन समाज के धार्मिक पतन का अनोखा चित्रण किया था।

सामाजिक परिस्थिति

तुलसी युग की सामाजिक परिस्थिति अत्यंत शोचनीय थी। वर्णाश्रम व्यवस्था कायम थी। ऊँच-नीच का भेदभाव सब कहीं व्याप्त था। राजा लोग भी विलासमय जीवन से पृथक नहीं रहे। मुसलमानों ने बहुपत्नीत्व पर विश्वास रखते थे।

तुलसीदास की भक्ति भावना

महात्मा तुलसीदास वैष्णव परंपरा के सगुण भक्त हैं। युगद्रष्टा तुलसी ने युग को राम भक्ति की अजस्र धारा में डुबोने

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

का कार्य किया है। उनके द्वारा प्रसारित रामभक्ति की लहरें आज भी उत्तर भारत में व्याप्त है। उन्होंने व्यक्ति-कल्याण के साथ लोक कल्याण के भक्तिमार्ग का उपस्थापन किया। उनकी वाणी के प्रभाव से हिन्दू जाति में नया जागरण हुआ। उनकी भक्ति व्यक्ति और समाज के कल्याण की थी। भक्ति के चार भेद है- सख्य, दास्य, वात्सल्य तथा माधुर्य- इनमें दास्यभक्ति को ही सर्वोत्कृष्ट माना है। इसके अन्तर्गत पूर्ण आत्मसमर्पण अनन्यता, दैन्य और अनवरत लगन के भाव समाविष्ट है। उनकी भक्ति वेद-सम्मत है। उनमें भागवत् पुराण तथा आध्यात्मरामायण की नवधा भक्ति का समन्वय रूप प्रकट है।

कवि परिचय

तुलसीदास के जीवन चरित संबंधी बाह्य सामग्रियों के आधार पर जन्मतिथि, जन्मस्थान, परिवार आदि के बारे में विद्वानों में मत-भेद हैं। कई विद्वान तुलसी का जन्म 1532 ई. को माना है। तुलसीदास का जन्म चित्रकूट जिले के राजापुर गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। कुछ विद्वान जिला एटा में स्थित सीरों को जन्मस्थान मानते हैं। किंवदंती है कि अशुभ मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण माँ-बाप ने बच्चे को त्याग दिया था। उनके बचपन का नाम रामबोला थ। बचपन बहुत ही कष्टों में बीता। अंत में उसकी भेंट महात्मा नरहरिदास से हुई। उन्हीं के मुह से तुलसी ने प्रथम बार सूकर खेत में रामकथा सुनी थी। इस रामकथा ने उनके हृदय में बचपन से ही भक्ती का बीज बोया था। उनकी पत्नी है रत्नावली। तुलसी अपनी पत्नी पर अत्याधिक आसक्त थे।

रत्नावली एक दिन जब उसकी अनुपस्थिति में अपने भाई के साथ मायके चली गई तो तुलसी रातों रात बरसात की उमड़ी हुई नदी पार कर ससुराल आ पहुँचे। रत्नावली ने लोकलाज परै उनकी भर्त्सना की। पत्नी के व्यंग्य ने तुलसी के मर्म को ठेस पहुँचाया। इस घटना से वह सांसारिकता से विमुख होकर वैरागी हो गये। उसने नाना पुराण, निगमागम का अध्ययन करके अपनी प्रतिभा का विकास किया। अयोध्या में आकर रामचरितमानस की शुरूआत की और काशी में काव्य की पूर्ति हुई।

तुलसी की नारी

नारी समाज व्यवस्था की महत्वपूर्ण इकाई है। तुलसी भक्ति के मार्ग में नारी को बाधास्वरूप मानते हैं क्योंकि वह संसार को माया में फँसाए रखनेवाली है। नारी विश्व की साक्षात् माया है उसकी राय में स्वतंत्रता नारी को बिगाड़ देती है।

कुछ विद्वान तुलसीदास को नारी निंदक मानते है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं -

“चुग-व्यापक विराग एवं तप की भावना के कारण तुलसी ने नारी के उस रूप का विरोध किया है जो तप और निवृत्ति में बाधक है।”

किन्तु तुलसी ने नारी के आराध्यरूप का चित्रण किया है, वह उनकेलिए सहनशीलता, धैर्यशाली गुणों का मूर्तरूप है।

उदा - कौसल्या, सीता, सुमित्रा, पार्वती आदि। तुलसी केलिए नारी त्याग, ममता और कर्तव्य का प्रतीक है।

तुलसी का रामः

तुलसी का राम गुणवान, वीर्यवान धर्मनिष्ठ, सत्यनिष्ठ और दृढ़ व्रति हैं। तुलसीदास अपनी उपासना मूर्तिभाव को मर्यादापुरुषोत्तम माना है। वे कभी पारिवारिक, धार्मिक और राजनैतिक मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करते। वे लोक कल्याण की भावना से परिपूर्ण प्रेम और त्याग के प्रतीक थे। तुलसी ने अपने उपास्य को लोकरंजक के रूप में प्रस्तुत किया है। परिवार, प्रजा, देश आदि केलिए राम का जो महान त्याग है, वह तुलसी की प्रतिभा का परियाचक है।

दार्शनिक विचार एवं समन्वय भावना

तुलसीदास विशिष्टाद्वैतवादी कवि है। उनका राम निर्गुण होता हुआ भी सगुण साकार है। उसने जगत को भ्रमात्मक माना है। रामानंद की चिंतन परंपरा के पोषक तुलसीदास विशिष्टाद्वैत को अपनाते हैं। आपके दार्शनिक विचारो में अद्वैतवाद और विशिष्टाद्वैतवाद का समन्वय मिलता है। उन्होंने सभी दार्शनिक सिद्धांतों का समन्वय अपनी रामभक्ति पद्धति में किया। तुलसी की दृष्टि में रामभक्ति ही समन्वय का मूलमंत्र है।

सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं दार्शनिक क्षेत्र में ही नहीं पारिवारिक क्षेत्र में भी समन्वय स्थापित करने का कार्य तुलसी ने किया है। पूरे परिवार को स्नेह सूत्र में बाँधकर लोकमंगल की ओर ले जाने का उनका सफल प्रयास प्रशंसनीय ही है। सामाजिक क्षेत्र में द्विज, शूद्र, राजा तथा प्रजा के बीच समन्वय स्थापित करके धर्म का आदर्श प्रस्तुत करना उनका लक्ष्य था। समन्वयकारिता के लोकमंगलकारी चेतना काम करती है और यही कारण है कि तुलसीदास भारत के महान

लोकनायक कहलाते हैं ।

तुलसी की काव्य भाषा

तुलसी ने अन्य भक्तिकालीन कवियों की तरह काव्य भाषा को समृद्ध करने का भरपूर प्रयास किया। अपने युग के जनसाधारण की सांस्कृतिक आकांक्षा और सांस्कृतिक आवश्यकता की पूर्ति के दायित्व को नया रास्ता दिया। जन भाषा को सच्चे प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। रूढ़िवाद और पतनशील मूल्य व्यवस्थाओं के विरुद्ध संघर्ष करनेवाले तुलसी की वाणी लोगों को बहुत प्रिय बन गयी। तुलसी को संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अवधी और व्रजभाषा की अच्छी जानकारी थी। अपनी काव्य कृतियों में अभिप्रेत विषयवस्तु और भाव के अनुसार विविध प्रकार के छंदों का प्रयोग उन्होंने किया है। रामचरितमानस अवधी भाषा में लिखी गयी है। लोकगीतों में प्रचलित सोहर छंद का उपयोग किया। तुलसी ने प्रमुख रूप से पाँच छंदों का प्रयोग किया है, जैसे - दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सवैया। अलंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति आदि। तुलसीदास काव्य में अलंकारों को यथोचित स्थान देने के पक्षपाती थे। रूपक उनका सर्वप्रिय अलंकार है। मानस का सबसे बडा रूपक स्वयं रामचरितमानस रूपक है। उसने किसी अलंकार का प्रयोग मात्र चमत्कार प्रदर्शन केलिए नहीं किया है।

भाषा

मध्ययुग का अन्य कोई कवि भाषा की इतनी शक्ति लेकर काव्य क्षेत्र में अवतीर्ण नहीं हुआ। शब्दभंडार की विशेषता के साथ ही काव्य के अनुकूल ही वाक्य-विन्यास, शब्द-चयन लोकोक्तियों एवं मुहावरों का उचित प्रयोग, नाद-सौंदर्य एवं चित्रमयता तुलसी के भाषा साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं। ग्रामीण अवधी का जैसा सुन्दरतम प्रयोग अयोधायाकांड में हुआ है वैसा अन्यत्र नहीं है। वह सदैव भाषा को जनमानस की विचारधारा का माध्यम मानते हैं। अनुभूतियों को सशक्त अभिव्यक्ति देने में तुलसी की सर्जनात्मकता अद्वितीय है। भावों एवं विचारों को व्यक्त करनेवाली उसकी भाषा में हृदय को प्रभावित करने की शक्ति है। अवधी तथा ब्रजभाषा दोनों काव्य-भाषाओं पर उनका समान अधिकार है। संस्कृत में भी उनका समान अधिकार था। रामचरितमानस के हर सोपानों की शुरुआत तुलसी ने संस्कृत में की है।

मृत्यु

तुलसीदास की अंतिम तिथि विवादग्रस्त है। उनके जीवन के अंतिम बीस-पच्चीस वर्ष काशी में विताया गया। बचपन के समान अंतिम दिन भी कष्ट में बीते। उनकी तबियत खराब थी। वे महामारी से पीडित थे। 1623 में तुलसीदास का निधन हुआ ।

तुलसी साथी विपत्ति के, विद्या विनय विवेक।
साहस, सुकृति, सुसत्य-व्रत, राम भरोसे एक ।।

शब्दार्थ

साथी	-	मित्र
विपत्ति	-	संकट का समय
साहस	-	धैर्य
सुकृति	-	सुकृत
सत्यव्रत	-	सत्य निष्ठ
राम भरोसा	-	ईश्वर की चिंता

व्याख्या

गोस्वामी तुलसीदास जन साधारण को नैतिक मूल्यों के महत्व सिखानेवाला कवि है। जीवन की सफलता केलिए नीतियुक्त बातों को अपने वश में रखना चाहिए। कवि कहते हैं मानव जीवन सुख दुःख का मिश्रण है। विपत्ति के समय लोग सबसे ज्यादा सहारा संपत्ति और रिश्तों में खोजते है। जीवन में कोई संकट आए तो ये सात गुण आपको बचाएँगे- विदया, विनय, विवेक, साहस, सत्कर्म, सत्य-निष्ठा और भगवान के प्रति विश्वास। विपत्ति के समय घबराकर हार नहीं मानना, अच्छे कर्म, सही विवेक और बुद्धि से काम लेना चाहिए। आपातकाल में साहस और सत्कर्म आपका साथ देते हैं।

प्रस्तुत दोहे में कवि जीवन की नैतिकता पर प्रकाश डालते हैं। विपत्ति में सत्यनिष्ठा और ईश्वर पर विश्वास अत्यंत सहायक है।

आवत ही हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुळसी तहां न जाइए, कंचन बरसे मेह ।।

शब्दार्थ

आवत	-	आते
हरषै	-	हर्ष
नैनन	-	नयनों में
सनेह	-	स्नेह

तहाँ	-	वहाँ
कंचन	-	सोना
मेह	-	बादल

व्याख्या

स्नेह और प्रेम की महिमा बताते हुए तुलसीदास कहते हैं कि जिस स्थान पर लोग आपके जाने से प्रसन्न न होवें और जहाँ लोगों कि आँखों में आप केलिए प्रेम या स्नेह ना हो ऐसे स्थान पर भले ही धन की कितनी भी वर्षा हो रही है आपको नहीं जाना चाहिए। स्नेह और प्रेम के सामने सारी चीज़ें तुच्छ है।

प्रस्तुत दोहे में कवि स्नेह और ममता के महत्व पर प्रकाश डालते हैं।

हमारे आने से जिस के मन में हर्ष नहीं वह हमसे प्यार नहीं नफरत करता है। जिसकी आँखों में प्यार नहीं है वह हमें घृण करता है। ऐसे स्थानों की उपेक्षा करना ही विवेकी का काम है।

Critical Overview / अवलोकन

तुलसी हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन कवि है। वे भक्तिकाल के सगुण भक्ति के रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि है। उनकी विश्वविख्यात रचना रामचरितमानस उनकी कीर्ति का आधारस्तंभ है। वे लोकनायक, समन्वयकारी आदि विशेषणों से अलंकृत है। अपनी विशेष रचनाशैली एवं प्रतिभा से वे जनमानस में एक अलग जगह बना ली है। उन्होंने हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने में अपना अतुलनीय योगदान दी है।

वे मात्र हिन्दी साहित्य के ही नहीं वरण् भारत केलिए और पूरी दुनिया केलिए भी अमूल्य धरोहर है। उनकी दार्शनिक चिंतन एवं समन्वय भावना हर समाज केलिए उपयोगी है। उनकी जनकल्याण भावना हर अधिकारी केलिए प्रथप्रदर्शक है। उनके जैसे अतुल्य प्रतिभा का उदय हिन्दी साहित्य केलिए भी लाभदायी रहा है। जबतक यह दुनिया है, तबतक उनकी रचना तथा उनका व्यक्तित्व दूसरों केलिए प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

Recap / पुनरावृत्ति

- तुलसीदास
- तुलसी की रचनाएँ
- दार्शनिक विचार
- समन्वय भावना
- भाषा

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. तुलसीदास की भाषा कौन सी है?
2. तुलसीदास का जन्म कब हुआ?
3. तुलसीदास किस परंपरा के कवि है?
4. तुलसीदास के बचपन का नाम?
5. तुलसीदास के माँ-बाप कौन है?
6. तुलसीदास की पत्नी कौन है?

Answers उत्तर

1. अवधी
2. 1532
3. रामभक्ति
4. रामबोला
5. आत्माराम – हुलसी
6. रत्नावली

Assignments प्रदत्त कार्य

1. तुलसीदास का व्यक्तित्व।
2. तुलसीदास का रचनाओं का परिचय।
3. रामचरितमानस की विशेषताएँ।
4. तुलसीदास की दार्शनिकता।
5. तुलसीदास की भाषा।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. तुलसीदास - रामचंद्र शुक्ल
2. गोस्वामी तुलसीदास - श्यामसुन्दर दास
3. तुलसीदास - माता प्रसाद गुप्ता
4. तुलसीदास और उनका युग - राजपति दीक्षित

SGOU

इकाई 3

सूरदास

एक पद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- मध्यकालीन-भक्तिकालीन हिन्दी कविता के सौंदर्य शास्त्र को समझता है
- सूरदास के समय की सामाजिक, राजनीतिक, भक्ति संबंधी परिस्थितियाँ, कृष्ण भक्ति धारा का महत्व, कृष्ण भक्त कवियों के सामाजिक दृष्टिकोण आदि की जानकारी प्राप्त होता है
- सूरदास के गुरु वल्लभाचार्य, गोसाई विट्ठलनाथ आदि का परिचय प्राप्त होता है
- अष्टछाप में कवियों के स्थान एवं उनकी मुख्य रचनाओं की विशेषताएँ समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का मेरुदंड है। महात्मा सूरदास भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा के कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। कवि सूरदास की भाषा ब्रजभाषा है। डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने सूरदास की काव्य कृतियों की विशेषता प्रकट करते हुए लिखा है कि सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है और रूपकों की बारिश होने लगती हैं। सूरदास ने भगवान कृष्ण के बाल्यकाल का अत्यंत मनोरम एवं सजीव वर्णन किया है। श्रृंगार एवं वात्सल्य रस के चित्रण में सूरदास अद्वितीय हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सूरदास के समय की साहित्यिक परिस्थितियाँ, अष्टछाप, वात्सल्य रस, श्रृंगार रस, सख्य भाव

Discussion / चर्चा

काव्य में श्रृंगार एवं वात्सल्य रस के विन्यास में सूरदास सिद्धहस्त है। इसीलिए उन्हें वात्सल्य रस का सम्राट कहते हैं। श्रृंगार और ज्ञान रस का भी बडी खूबी से वर्णन किया है। सूर के काव्यों में ब्रजभाषा की कोमलकांत पदावली नैसर्गिक रूप में अभिव्यक्त है। भाषा में ऐसा लालित्य एवं प्रभाव दूसरे कवियों में देखने को नहीं मिलता है। सूर हिन्दी साहित्य के सूरज हैं। कहावत है- सूर सूर, तुलसी शशि उडगण केशवदास।

सूरदास के समय की सामाजिक परिस्थितियाँ:

भारतीय इतिहास के मध्यकाल में उत्तर भारत मुस्लिम शासन के अधीन था। हिन्दू लोगों को धीरे-धीरे इस्लाम धर्म अपनाना पडा। धर्मांतरण ज़ोरों पर चल रहा था। हिंदुओं में अंधविश्वास, जाति-प्रथा, छुआछूत, विधवाओं के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार आदि फैला हुआ था। अमानवीय व्यवहार सह-सहकर निम्न जाति के लोगों का जीवन असहृय हो चुका था। बाल-विवाह, सती-प्रथा आदि दुराचार चारों ओर फैले थे। स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी। पुरुष बहु-विवाह कर आडंबरपूर्ण जीवन बिताते थे। इस समय हिंदू समाज की अवस्था बड़ी शोचनीय थी। भक्ति काल के पूर्वार्द्ध में समाज दो वर्गों में विभक्त हो चुका था। पहला उच्च कुल जात बादशाह, राजा, सेठ, साहूकार और सामंत आदि थे। दूसरे वर्ग में किसान, मज़दूर, पद-दलित जैसे साधारण लोग थे। सामाजिक जीवन अस्थिर मूल्यहीन, आदर्शरहित और दिशाहीन था। सामाजिक जीर्णता सामान्य

जीवन को नरकतुल्य बना दिया था। तब सामाजिक बदलाव एक अनिवार्य विषय बन गया था।

सूरदास के समय की राजनीतिक परिस्थितियाँः

राजनीतिक दृष्टि से देखें तो भक्ति काल में उत्तर भारत में तुग्लक वंश से लेकर मुगल वंश के शासन काल रहे थे। ये शासक अन्यायी और अधिकार-मोही थे। उनमें सांप्रदायिक चिंता प्रबल थी। बादशाह अलाउद्दीन खिलजी जैसे शासक एक ओर अत्याचार करते थे, दूसरी ओर साम्राज्य की सीमा का विस्तार करते थे। इस समय कई हिंदुओं ने धर्मांतरण कर लिया था। भक्ति कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ हिन्दुओं के लिए अनुकूल न थीं। भक्ति काल के शासक किसी न किसी बात पर परस्पर युद्ध करते थे। इन युद्धों का कारण धर्म और सीमा विस्तार होता था। इस समय को अशांति का काल कहना सर्वथा उचित है।

भक्तिकाल (सन् 343-1643) युद्ध, संघर्ष और अशान्ति का समय था। इस अवधि में तीन प्रमुख मुस्लिम वंशों- पठान, लोदी और मुगल का साम्राज्य रहा। उत्तर भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। इनको हडप कर अपने साम्राज्य का विस्तार शासकों का लक्ष्य था। फलस्वरूप राजनैतिक क्षेत्र हमेशा यूद्ध और अस्थिरता से अशांत था। जनता का विश्वास शासक से ईश्वर की ओर होने लगा।

सूरदास के समय की धार्मिक परिस्थितियाँः

भक्तिकाल धार्मिक दृष्टि में उन्नति का काल है। उत्तर भारत में शुरु होने से पहले भक्ति आंदोलन का शुभारंभ दक्षिण भारत में हुआ था। अतएव भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत से उत्तर की ओर प्रवाहित हुआ। तब हिन्दुओं में ही नहीं, मुसलमानों में भी धर्म के नाम पर कुछ अंधविश्वास जमे हुए थे। पूजा, नमाज़, तीर्थ यात्रा, माला-जप, रोज़ा आदि कार्यक्रम भारी मात्रा में चलता था। पथ भ्रष्ट लोगों में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों और आडंबरों को रोकने में तत्कालीन संतों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कलुषित परिस्थिति में कबीर ने समाज सुधार का, तुलसीदास ने समन्वयवाद का और सूरदास ने भगवान कृष्ण के लोकरंजन रूप-वर्णन द्वारा तत्कालीन वातावरण बदलने का भरसक प्रयत्न किया।

सूरदास के समय की आर्थिक परिस्थितियाँः

सूरदास के समय लोगों की आर्थिक स्थिति बड़ी शोचनीय थी। इस समय के अधिकतर लोगों को जीने के लिए आवश्यक आमदनी न थी। खेती-बारी मुख्य काम था। धनिकों को कोई दुख-कष्ट न था। इसलिए धनिकों का जीवन आडंबर पूर्ण था तो दरिद्र अत्यंत संकटपूर्ण जीवन बिताते थे।

मध्यकाल में उत्पादन की अधिकांश हिस्सा कृषि से प्राप्त था। इसलिए शासकों ने कृषि के क्षेत्र का विस्तार किया। क्योंकि यह राज्य के राजस्व की प्राथमिक स्रोत थी। इसकाल में व्यापार और वाणिज्य का खूब विकास हुआ था। लेकिन इससे साधारण विशेषकर निम्न जाति के लोगों के जीवन में कोई असर नहीं हुआ। आर्थिक व्यवस्था कृषि प्रधान थी। वाणिज्य और व्यापार देश - विदेशों में होता रहता था। सूरदास की रचनाएँ अपने समाज का दस्तावेज़ माना जाता है।

सूरदास के समय की सांस्कृतिक परिस्थितियाँः

इस काल को समन्वय, संस्कृति के विकास का काल कहना उचित है। इस समय के कवियों ने भक्ति से उत्पन्न साहित्य को संगीत से जोड़ा था। तब संगीत और चित्रकला का खूब विकास हुआ था। मुगल शासक ने कला और संगीत को खूब प्रोत्साहन दिया था। हिन्दी भक्ति काल का साहित्य, सांस्कृतिक एकता का ज्वलंत उदाहरण है। मध्यकालीन संस्कृति में लोक और शास्त्र सम्मत जीवन धाराएँ विद्यमान थीं। सहिष्णुता मूलक धार्मिक भावना विकसित हुई। उपनिषद, अद्वैतवाद आदि पर अनेक मतों का प्रचार हुआ।

सूरदास के समय की साहित्यिक परिस्थितियाँः

सूरदास के समय की राजभाषा फ़ारसी थी। उच्च वर्ग के हिंदू लोग संस्कृत भाषा का अध्ययन करते थे। उर्दू, सैनिकों की भाषा के रूप में विकसित हुई थी। वृंदावन में ब्रज भाषा और अवध में अवधी भाषा का प्रचार था। संत कवियों की बोलचाल की भाषा सधुक्कड़ी नाम से उनके बीच प्रचलित थी। भक्ति काल में विविध प्रकार के काव्यों की रचना हो चुकी थी, जिसमें प्रबंध, मुक्तक और गीतिकाव्य आदि हैं। इस काल के कवि निर्गुण और सगुण भक्त थे। यह कहना अनुचित न होगा कि इस समय का साहित्य मन, मस्तिष्क और हृदय की अशांति को शांति के रूप में परिवर्तित कर देता था। कृष्ण भक्ति का व्यापक प्रचार हुआ और कृष्ण के कई रूपों का वर्णन इस काल की रचनाओं में मिलता है।

कृष्ण भक्तिः

कृष्ण भक्तिधारा भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा का एक अजस्र प्रवाह है। हिन्दी साहित्य में कृष्ण भक्ति काव्य का

महत्वपूर्ण स्थान है। कृष्ण, भगवान विष्णु के अवतार हैं। कृष्ण के चरित्र के आधार पर रचित रचनाएँ कृष्ण भक्ति साहित्य के नाम से जानी जाती है। कृष्ण भक्ति काव्य धारा का आधार ग्रंथ श्रीमद् भागवत है। काशी के महाप्रभु वल्लभाचार्य ने अपने इष्ट देव कृष्ण की भक्ति के प्रचार-प्रसार को नेतृत्व दिया था। वल्लभाचार्य द्वारा संस्थापित पुष्टि मार्ग ने कृष्ण भक्ति धारा को गतिशील बना दिया।

अधिकांश कृष्ण भक्त कवियों ने वृंदावन में प्रचलित ललित-कोमल ब्रजभाषा को काव्य-भाषा के रूप में स्वीकार किया है। कृष्ण भक्त कवियों ने कृष्ण के बालक रूप का वर्णन करने के साथ-साथ उनकी विविध लीलाओं का अनुपम एवं आकर्षक तथा हृदयस्पर्शी वर्णन भी किया है। कृष्ण भक्ति के प्रचार-प्रसार में आचार्य वल्लभ एवं उनके सुपुत्र गोसाई विट्ठलनाथ ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

वल्लभाचार्यः

महाप्रभु वल्लभाचार्य श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक थे। वे वैदिक शास्त्र में पारंगत थे। वेद, वेदांत, दर्शन, पुराण और कथादि में महान ज्ञानी थे। इसके अलावा जैन, बुद्ध, शैव, शाक्त आहि धर्मों के विद्वान भी थे। उन्होंने भारतीय दार्शनिक चिंतन को समन्वयात्मक दृष्टि प्रदान की। इनके द्वारा प्रतिपादित शुद्धाद्वैतवाद, भक्तिमार्ग को पुष्टिमार्ग कहते है। पुष्टि का अर्थ है पोषण या ईश्वर का अनुग्रह। पुष्टिमार्ग में प्रेम के भाव को सर्वाधिक महत्व देते हैं। भक्त आराध्य के प्रति आत्मसमर्पण करता है। भगवान अपने अनुग्रह से भक्त को पुष्ट कर देते हैं तब वह आनंद से भर जाता है। वल्लभाचार्य और उनके पुत्र विट्ठलनाथ के आठ शिष्यों ने कृष्ण-भक्ति धारा के अपने रचनाओं का देश भर में प्रचार किया। इन्हें 'अष्टछाप' के कवि कहते है जिनमें सबसे प्रमुख सूरदास हैं।

पुष्टिमार्ग के स्थापक महाप्रभु वल्लभाचार्य कृष्ण भक्ति धारा के महान नायक हैं। आचार्य वल्लभ का जन्म सन् 1479 में तथा मृत्यु 1531 में मानी जाती है। उन्होंने अपने अनुयायियों को भगवान कृष्ण की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित करने को प्रोत्साहित किया। उनका कृष्ण भक्ति पंथ आगे पुष्टिमार्ग के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

गायत्री सूत्र भाष्य, शास्त्रार्थ प्रकरण, जैमिनी सूत्र भाष्य, भागवत टीका सुबोधिनी, पृष्टि-प्रवाह-मर्यादा-भेद, सिद्धांत रहस्य आदि कई कृतियाँ वल्लभाचार्य के नाम पर मिलती है। उन्होंने भाषा के रूप में संस्कृत और ब्रजभाषा को स्वीकार किया है।

गोसाई विट्ठलनाथः

गोसाई विट्ठलनाथ महाप्रभु वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र एवं कृष्ण भक्ति धारा के श्रेष्ठ सन्यासी भी रहे हैं। उनका जन्म सन् 1515 में काशी में और मृत्यु सन् 1585 में मथुरा के गोवर्धन गिरी की गुफा में हुआ था। वल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक और 'अष्टछाप' के स्थापक के रूप में हिन्दी साहित्य में विट्ठलनाथ का महत्वपूर्ण स्थान हैं। विट्ठलनाथ संगीत और चित्रकला में पारंगत थे। वे भक्ति मार्ग में जाति और वर्ण नहीं मानते थे। विट्ठलनाथ ने अपने पिताजी के चार शिष्यों (सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास तथा कृष्णदास) और अपने चार शिष्यों (चतुर्भुजदास, गोविन्दस्वामी, नंददास तथा छीतस्वामी) को जोड़कर 'अष्टछाप' नामक आठ कवियों का एक संघ स्थापित किया। अष्टछाप ने आगे कृष्ण भक्ति धारा को तेज़ी से प्रवाहित किया।

निष्कर्षः भक्ति काल की स्वर्णिम चमक के पीछे कई संतों, आचार्यों, महात्माओं एवं कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिसमें कृष्ण भक्त कवियों का स्थान अद्वितीय है। सगुण या निर्गुण हो, राम भक्त हो या कृष्ण भक्त, ज्ञानमार्गी हो या प्रेममार्गी-उनके निस्वार्थ कर्म से भक्ति-मुक्ति तथा शांति सर्वत्र व्याप्त हुई। अलग-अलग धारा बनकर बहने पर भी उसका उद्‌भव और विलयन एक ही स्थान पर हुआ। अर्थात भक्ति की अलग-अलग धारा बनकर बहने पर भी सब धाराएँ एक ही परमात्मा में विलीन हो गयी।

कवि परिचय

सूरदास के तीन ग्रंथ प्रामाणिक माने जाते हैं-

1. सूरसागर
2. सूरसारावली
3. साहित्य लहरी

सूरसागरः

कृष्णभक्त कवि सूरदास का ब्रजभाषा में रचित महाकाव्य है सूरसागर। इसमें भगवान कृष्ण का बालरूप, सख्यरूप और प्रेमरूप का अद्वितीय चित्रण हैं। सूरसागर में विषय, कृष्ण की बाललीला सौंदर्य, कृष्ण और राधा के प्रेम भाव, मुरली माधुरी और वियोग श्रृंगार के पद हैं। वियोग और श्रृंगार संबन्धी 'भ्रमरगीत' में सूरदास ने कला के सर्वश्रेष्ठ रूप का दर्शन कराया हैं। सूरसागर में भक्ति के दो रूप दिखाई देते हैं। एक विश्व, दैन्य, दास्य और सख्य रूप और दूसरा कृष्ण की लीलागान का।

'सूरसागर' श्रीमद्भागवत के आधार पर रचा गया महाकाव्य है। विद्वानों के मत में इसमें सवा लाख पद है। अभी तक लगभग पाँच हज़ार पद संकलित कर प्रकाशित हो चुके हैं। इस महाकाव्य में बारह स्कन्ध है। इसका मुख्य वर्ण्य विषय श्री कृष्ण लीला है। साथ ही साथ विनय, वैराग्य, सत्संग एवं गुरु महिमा से संबंधित पद भी इसमें उपलब्ध है।

सूर सारावली:

सूर सारावली में भगवान कृष्ण कुरुक्षेत्र से लौटने के बाद की घटनाएँ, संयोग लीला, वसंत हिंडोला एवं होली आदि प्रसंगों के वर्णन हुए हैं। इसकी रचना स्कन्धात्मक है जबकि सूरसागर लीलाक्रम को महत्व दिया गया है। सूरसागर का सार होते हुए भी यह स्वतंत्र रचना है।

साहित्य लहरी:

साहित्य लहरी एक लघु ग्रंथ है। इसमें रस, अलंकार और नायिका-भेद आदि का वर्णन हुआ है। इसका मुख्य रस श्रृंगार है।

मृत्यु:

वल्लभाचार्य के पौत्र तथा विट्ठलनाथ के पुत्र गोकुलनाथ कृत चौरासी वैष्णवन की वार्ता के अनुसार सूरदास की मृत्यु सन् 1584 में गोवर्धन पहाड़ के निकट स्थित पारसौली (उत्तर प्रदेश में मथुरा जिले के गोवर्धन ग्राम से एक सवा मील दूर स्थित गाँव) में हुई।

पद

चरण-कमल बंदौ हरि राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कुछ दरसाई॥
बहिरौ सुनै, मूक पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुणामय, बार-बार बन्दौं तेहि पाई॥

प्रस्तुत पद सूरदास विरचित 'सूरसागर' महाकाव्य के प्रथम स्कंध का शुभारंभ या मंगलाचरण है। यह विनय-भक्ति संबन्धी पद है। 'सूरसागर' सूरदास द्वारा हिन्दी साहित्य को प्राप्त अमूल्य ग्रंथ है। यह भक्ति काल की महान उपलब्धियों में से एक है। इसकी शैली मुक्तक और राग बिलावल है।

काव्य रचना की गेय शैली को पद (छन्द) कहते हैं। पद शैली का विकास लोकगीतों की परंपरा से माना जाता है। पद मात्रिक छन्द है। साधारणतः पदों के साथ किसी राग का निर्देश भी मिलता है। पद शैली की मुख्य दो परंपराएँ चली है। ये दोनों परंपराएँ हिन्दी काव्य-साहित्य में मिलती है। पद शैली में पहला है- संत कवियों के सबद संप्रदाय। दूसरा भक्तिकालीन कृष्ण भक्त कवियों की लोकगीतों की शैली में रची पद-शैली। सूर का प्रस्तुत पद लोकगीतों की शैली का पद है। भक्ति काल में भक्ति भावना की अभिव्यक्ति के लिए पद शैली का प्रयोग हुआ है। सूर का अधिकतर काव्य पद शैली में रचित है। 'सूरसागर' पद शैली का उज्वल ग्रंथ है।

काव्य पदों की शब्दावली:

चरण कमल- से श्रीकृष्ण के परम-पवित्र चरणों की ओर इशारा हुआ है। हरि का वास्तविक अर्थ ईश्वर है, इधर कृष्ण की ओर इशारा है। 'रंक चलै सिर छत्र धराई' से तात्पर्य दरिद्र के धनिक होने की ओर है।

छंद:

प्रस्तुत पद गेय शैली का है। इस पद में रूपक अलंकार है। अलंकार का अर्थ होता है- आभूषण। कविता में सौंदर्य-वर्धन के लिए अलंकार का प्रयोग होता है। चरण कमल बंदौ हरि राइ - पंक्ति में रूपक अलंकार है। क्योंकि चरणों की तुलना कमल से की गयी है। उपमेय को उपमान के रूप में कर दिया जाए तो रूपक अलंकार होता है। प्रस्तुत पद में चरण (उपमेय) को कमल (उपमान) के रूप में प्रयुक्त किया है। इसमें रूपक अलंकार के सिवा पुनरुक्ति प्रकाश और अनुप्रास अलंकार का भी प्रयोग हुआ है। प्रस्तुत पद में भक्त कवि सूरदास ने अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण की महिमा का वर्णन करते हुए उनके चरणों की वंदना की है।

महात्मा सूरदास श्रीकृष्ण की गुण-विशेषता व्यक्त करते हैं कि जिस पर श्रीहरि (कृष्ण) की कृपा हो जाती है, उससे असंभव बात भी संभव हो जाती है। भगवन श्रीकृष्ण के अनुग्रह से लंगड़ा आदमी पहाड़ पार कर सकता है। अंधे को सबकुछ देखने का सुअवसर प्राप्त हो जाता है। बहरा पुनः सुनने लगता है। कृष्ण भगवान की कृपा से गूंगा बोलने लगता है। कृष्ण-कृपा से रंक या दरिद्र, राजा के समान छत्र धारण कर अमीर बन सकता है। सूर कहते है कि मैं ऐसे दयालु एवं करूणामय प्रभु श्रीकृष्ण के चरणों की वंदना बार-बार करता हूँ।

विश्लेषण:

भक्तों को भगवान ही सर्वोच्च है। भक्त अपना हर दिन और हर क्षण परमात्मा से जोड़कर मोक्ष पाना चाहता है। भक्त का

सबसे बड़ा चरितार्थ होता है मोक्ष-प्राप्ति। उसका विश्वास यह है कि भक्ति, मुक्ति का एकमात्र मार्ग है। मुक्ति से तात्पर्य है कि भौतिक जीवन-जगत से आध्यात्मिक जगत की ओर की यात्रा।

श्रीकृष्ण भक्त वत्सल तथा करुणानिधि है। वे कभी भी अपने भक्तों को नहीं छोड़ते हैं। भक्तों पर हर वक्त उनकी कृपा-कटाक्ष की वर्षा होती है। अर्थात कृष्ण अपने भक्त को तनिक भी दुख न देना चाहता, बदले सब के प्रति करुणामय हो जाते हैं।

भक्त की भलाई भगवान की करुणा पर है। इसके माध्यम से भक्त और भगवान एक बन जाते हैं। इसलिए सूर कहते हैं कि श्रीहरि (कृष्ण) की कृपा होने पर लंगड़ा व्यक्ति बड़े-बड़े पर्वत पार कर लेता है। कृपा-सिंधु श्यामसुंदर अन्धे की आँखों पर ज्योति देकर उसे सबकुछ देखने का अवसर प्रदान करता है। आराध्य भगवान कृष्ण के अनुग्रह से बहरा आदमी सुनने लगता है। कृष्ण की कृपा से गूंगा पुनः बोलने लगता है। श्री नंद के कृपा से दरिद्र से दरिद्र व्यक्ति भी धनिक हो जाता है। ऐसे भक्त-प्रिय भगवन श्रीकृष्ण के कमल रूपी परम-पवित्र चरणों की वंदना करना भक्त अपना सौभाग्य समझता है। सूरदास भगवत चरणों में बार-बार प्रणाम समर्पित करते हैं।

सूरदास के मत में जिनमें भगवान कृष्ण की कृपा हो उन्हें कुछ भी असंभव नहीं है। कृष्ण अपने भक्तों के सारे असंभवों को संभव कर देता है।

महात्मा सूरदास अंधे थे लेकिन उनके पद यह साबित करते हैं कि उनकी बाहरी आँखों में जितना अंधापन था, भीतरी आँखें उससे सौ प्रतिशत प्रकाशमान थी। मनुष्य जीवन का अर्थ केवल खाना, पीना और सोना नहीं है। ऐसा जानवर भी कर सकता है। मनुष्य विवेकी और जागरूक है। सूरदास स्पष्ट करना चाहते हैं कि विवेकी और जागरूक मनुष्य श्रीहरि की आराधना करके अनुपम एवं अपूर्व सुख पा सकते हैं। भगवान का अनुग्रह ही भक्त की मुक्ति है।

प्रथम चरण की व्याख्याः

सूरदास पहले शीर्षस्थ कृष्ण-भक्त हैं बाद में महान कवि। वे अपने आराध्य भगवान कृष्ण के कमल-रूपी चरणों की वंदना करते हुए कहते हैं कि भगवत चरणों का आकर्षण सर्वोपरि है। भगवान कृष्ण के पैर कमल जैसे हैं, जो परम पवित्र हैं। उनकी वंदना करना मोक्ष दायक है। ऐसा करने से भक्त अनगिनत उपकार-उपलब्धि पा लेते हैं। उदाहरणार्थ कृष्ण की कृपा से लँगड़ा व्यक्ति पहाड़ को पार कर लेता है। अन्धे को सबकुछ दिखाने वाले, बधिर को सुना देने वाले, गूँगों को बोलने का अवसर देने वाले, दरिद्र को धनिक बनाने वाले श्रीहरि की भक्त-वात्सल्य-प्रियता अद्भुत और अनोखी है। ऐसे करुणामय श्रीकृष्ण के चरणों की बार-बार वंदना करने से भक्तों को सबलता ही नहीं, सफलता भी मिलती है।

शब्दार्थः

चरण	-	पैर
बंदा	-	वंदना करना
राई	-	राजा
जाकी	-	जिसकी
गिरी	-	पहाड़
पंगु	-	लंगड़ा
लघै	-	पार कर जाता है
मूक	-	गूंगा
रंक	-	निर्धन, गरीब, दरिद्र
छत्र धराई	-	राज-छत्र धारण करना (धनिक बन जाना)
तेहि	-	उसके
पाई	-	चरण

संत व सन्यासी अनुभवी हैं। उन्हें तीनों लोकों के बारे में अपरिमित ज्ञान है। इसलिए संत के वचनों को महत्व देना चाहिए। मनुष्य अपने जीवन को भक्ति के मार्ग पर चला देता है तो भगवान उसके निकट आ पहूँचता है। जब मनुष्य अपना तन और मन भगवान को समर्पित करता है तब भगवान उसे सभी सुख देता है। निराशा से भरपूर मन में भगवान कृष्ण आशा पैदा करते हैं। भगवान के सामने आत्मसमर्पण करना ही ईश्वर के अनुग्रह का, मोक्षा का मार्ग है।

Critical Overview / अवलोकन

सूरदास को पूर्ण विश्वास था कि कृष्णाराधना से असंभव बात भी संभव हो जाती है। मनुष्य को जो असाध्य होता है, वह भगवान को साध्य है। क्योंकि सब कुछ भगवान के द्वारा चयनित है। सूरदास मानते हैं कि श्रीकृष्ण सृष्टि, स्थिति और संहार का अधिनायक है। ब्रह्म की हर गतिविधि महा विष्णु के अवतार कृष्ण की इच्छानुसार चलती है। भक्त प्रिय कृष्ण संसार-रूपी समुद्र पार कराने वाले जहाज़ है। कृष्ण की भक्ति स्थायी है बाकी सब अस्थायी। इसलिए सूरदास आजीवन

श्रीकृष्ण की महिमा का गान करते रहे। वे हर ब्राह्म मुहूर्त में मथुरा के श्रीनाथ के मंदिर की दरवाज़ा खोलते समय अपनी इष्ट भगवान को नये-नये गीत से अर्चना करते थे।

सूरसागर का उपरोक्त पद कृष्ण के आराधक तथा अनन्य भक्त कवि सूरदास के महत्वपूर्ण पदों में एक माना जाता है। यहाँ सूरदास अपने आश्रय तथा अवलंब श्रीकृष्ण के कमल-रूपी चरणों पर अपने को समर्पित करते है। वे कृष्ण के परम-पवित्र चरणों पर आत्म-समर्पण कर साष्टांग प्रणाम कर रहे हैं। इसमें शंका नहीं है कि भगवान पर भक्त का सबसे बडा पवित्र कर्म आत्म समर्पण ही है।

Recap / पुनरावृत्ति

- भक्तिकाल।
- सगुण भक्ति।
- कृष्ण भक्ति।
- सूरदास।
- गुरु वल्लभाचार्य।
- अष्टछाप।
- विठ्ठलनाथ
- सूर के काव्य।
- काव्य विशेषताएँ।

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सूरदास का हरि कौन है?
2. सूर-कृतियों की मुख्य भाषा क्या है?
3. सूरदास के गुरु कौन है?
4. अष्टछाप के संस्थापक कौन है?
5. सूरदास किस काल के कवि थे?

Answers उत्तर

1. श्रीकृष्ण।
2. ब्रज।
3. वल्लभाचार्य।
4. विठ्ठल नाथ।
5. भक्ति काल के सगुण भक्ति धारा।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments प्रदत्त कार्य

1. भक्त और भगवान के संबंध में एक सारगर्भित निबंध लिखिए।
2. भक्ति मार्ग में सूर का स्थान निर्धारित करते हुए एक भाषण तैयार कीजिए।
3. अंधे की अंधता केवल बाहर ही है। - इस विषय में टिप्पणी लिखिए।
4. कृष्ण के प्रति सूरदास की भक्ति कौन-सी है?
5. कृष्ण की कृपा से भक्तों को मिलने वाले गुण और विशेषताएँ बताइए।
6. सूरदास ने कृष्ण के चरण की कौन-सी विशेषता बताई है?
7. पठित पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि सूर एक अग्रणी कृष्ण भक्त कवि हैं?

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. हिन्दी भक्तिकाल - नन्ददुलारे वाजपेयी।
3. सूरदास - डॉ. श्यामसुंदर दास।
4. सूरदास - डॉ. हरबंसलाल वर्मा।

BLOCK 02

छायावाद की कविताएँ

इकाई 1

भिक्षुक

निराला

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- छायावाद एवं छायावाद की प्रवृत्तियों के संबंध में जानकारियाँ हाज़िल करता है
- छायावाद के प्रवर्तक एवं छायावाद के चार स्तंभों के बारे में जानकारियाँ प्राप्त होता है
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की रचनाओं एवं उनकी रचना वैशिष्ट्य को समझता है
- भिक्षुक जैसे दीन-दलितों के प्रति समाज की दृष्टिकोण समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

छायावाद हिन्दी साहित्य के रोमांटिक उत्थान की वह काव्य धारा है जिसका आरंभ लगभग सन् 1918 से माना जाता है। द्विवेदी युगीन काव्य की प्रतिक्रिया में छायावाद का जन्म हुआ। हिन्दी काव्य की जो धारा विषय वस्तु की दृष्टि से स्वच्छंद प्रेमभावना, प्रकृति में मानवीय क्रिया कलापों तथा भाव-व्यापारों के आरोपण और कला की दृष्टि से लाक्षणिकता प्रधान नवीन अभिव्यंजना पद्धति को लेकर चली, उसे छायावाद कहा गया है। लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय जी के शब्दों में- "द्विवेदी युग का काव्यगत इतिवृत्तात्मकता तथा स्थूलता और आदर्शों की प्रतिक्रिया और अंग्रेज़ी के अध्ययन के फलस्वरूप छायावाद का जन्म हुआ।"

Keywords / मुख्य बिन्दु

छायावाद, लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता, वैयक्तिक अनुभूति, रहस्यभावना, स्वच्छंदतावादी, दार्शनिकता

Discussion / चर्चा

हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद युग का अलग स्थान एवं पहचान है। विद्वानों ने छायावादी युग का समय सन् 1918 से 1936 तक माना है। 'छायावाद' शब्द का प्रयोग सबसे पहले मुकुटधर पांड़ेय ने किया। उन्होंने सन् 1920 में जबलपुर से निकली 'श्रीशारदा' पत्रिका में "हिन्दी में छायावाद" नामक अपने निबंध में व्यंग्यात्मक रूप से इस शब्द का प्रयोग किया जो बाद में इस कविता केलिए रूढ़ हो गया और स्वयं स्वच्छन्दतावादी कवियों ने इसे अपना लिया।

छायावाद : विभिन्न परिभाषाएँ

छायावाद केलिए अनेक विद्वानों ने अपने अपने ढंग से अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं। यथाः-

डॉ. नगेन्द्र के शब्दों में- "स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह छायावाद है। और एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है, जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है।"

छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा के अनुसार -

"छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिये जो प्राचीनकाल में बिम्ब प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य अपने दुःख में उदास और पुलकित जान पड़ती थी।"

नंददुलारे वाजपेयी जी ने कहा "छायावाद सांसारिक वस्तुओं में दिव्य सौंदर्य का प्रत्यय है।"

डॉ. रामविलास शर्मा के मत में "छायावाद स्थूल के प्रति

सूक्ष्म का विद्रोह नहीं रहा वरन् थोथी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामंती साम्राज्यवादी बन्धनों के प्रति विद्रोह रहा है।"

छायावाद काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

साहित्यिक खड़ीबोली का स्वर्ण युग के नाम से जाना जानेवाली छायावाद हिन्दी साहित्य परंपरा के एक महत्वपूर्ण कड़ी है जिसे द्विवेदी युग का ऐतिहासिक विकास कहा जा सकता है। द्विवेदी युग की कविता नीरस, उपदेशात्मक और इतिवृत्तात्मक थीं। छायावाद में इसके विरूद्ध विद्रोह करते हुए कल्पना प्रधान भावोन्मेषयुक्त कविताएँ लिखी गयीं। छायावाद की प्रमुख प्रवृतियाँ निम्नलिखित हैं -

1. वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति

छायावाद व्यक्तिवाद की कविता है, जिसका आरंभ व्यक्ति के महत्व को स्वीकार करने और करवाने से हुआ। छायावाद के कवियों ने निजी सुख-दुःख, आशा-निराशा, उतार-चढाव, हर्ष-विषाद की अभिव्यक्ति अन्य कवियों की अपेक्षा अपने काव्यों में खुल कर की। उन्होंने समग्र वस्तुजगत को अपनी भावनाओं में रंग कर देखने का प्रयास किया। जयशंकर प्रसाद के 'आँसू', पंत के 'उच्छवास' महादेवीवर्मा का 'नीर भरी दुःख की बदली' निराला की 'जुही की कली' आदि व्यक्तिवादी अभिव्यक्ति के सुन्दर दिग्दर्शन है। महादेवी वर्मा ने स्वयं स्वीकार कर लिया है कि "आज का साहित्यकार अपनी प्रत्येक साँस के इतिहास लिख लेना चाहता है।"

2. प्रकृति चित्रण की प्रधानता

छायावादी कवि हृदय प्रकृति के रूप सौंदर्य में खूब रमे। उन्होंने प्रकृति को काव्य में सजीव बना दिया है। छायावादी कवियों ने प्रकृति के अनेक रूपों में जैसे आलंबन रूप में, उद्दीपन रूप में, नारी के रूप में, मानवीकरण के रूप में, रहस्यात्मक अभिव्यक्ति के साधन के रूप में चित्रण किया है। इसलिए ही डॉ. देवराज ने छायावाद को प्रकृति काव्य कहा है। छायावादी कवि सौंदर्यानुभूति से अभिभूत है। वे अपने सौंदर्य का उद्घाटन प्रकृति के माध्यम से करते हैं।

छायावादी कवियों का प्रकृति चित्रण आत्मीय भावनाओं से भरा है। उन्होंने प्रकृति के अनंत चित्राकंन से उसके प्रति असीम श्रद्धा और विश्वास की भावना अपनी कविताओं में व्यक्त किया है। छायावादी कवि की प्रकृति प्रेम संबंध में महादेवी जी का कहना है कि "छायावाद का कवि न प्रकृति के किसी रूप को लघु या निरपेक्ष मानता है न अपने जीवन को, क्योकि वे दोनों ही एक विराट रूप समष्टि में स्थित रहते हैं। और एक व्यापक जीवन से स्पन्दन पाते हैं।"

3. श्रृंगार भाव की प्रधानता

छायावादी कवियों ने श्रृंगार भावना को प्रधानता दी है, श्रृंगार के दोनो पक्षों संयोग एवं वियोग का सुन्दर चित्रण किया है। किंतु इनकी श्रृंगार भावना सूक्ष्म तथा मानसिक है। इन्होंने नारी के आत्मिक सौंदर्य एवं प्रकृति पर नारी-भावना के आरोप से श्रृंगार भावना को विशेष सौन्दर्य प्रदान की है। इनकी श्रृंगार भावना में स्थूलता एवं अश्लीलता का प्रायः अभाव मिलता है। नारी का अद्वतीय सौंदर्य चित्रण कामायनी के श्रद्धा सर्ग में प्रसाद ने किया है।

4. रहस्यभावना की अभिव्यक्ति

छायावादी कवियों ने जीवन, जगत् आदि को रहस्यमयी दृष्टि से देखा हे। प्रकृति में उस अज्ञात सत्ता के प्रति जिंज्ञासा प्रकट किए हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा के मत में- "परमात्मा की छाया आत्मा में पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा में। यही छायावाद है।" आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में– "छायावाद शब्द का अर्थ दो अर्थो में समझना चाहिए, एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ इसका संबंध कथावस्तु से है अर्थात् जहाँ कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलंबन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद का दूसरा प्रयोग काव्यशैली या प्रतीक विशेष के व्यापक अर्थ में।" इसलिए ही वे सब कहीं अज्ञात सत्ता के दर्शन करते हैं जो सर्वत्र व्याप्त है। अतः छायावादी कवि इस सत्ता के साथ अपना रागात्मक संबंध जोड़ते हैं और उस अज्ञात सत्ता से मिलने की आकुलता का वर्णन बड़ी तत्परता से करते हैं।

महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति का आधार उनके अंदर की गहन पीड़ा है। उन्होंने अपनी वेदना प्रणयानुभूति के माध्यम से अपने प्रियतम से सम्बद्ध साधा है। उनके प्रियतम की अस्पष्ट झलक उन्हें प्रकृति के तत्वों में भी मिलती है। उनकी आत्मा के साथ आँख-मिचौनी खेलता हुआ भी वह दिखाई देता है। निराला भी अपनी लौकिक अनुभूतियों को अलौकिक रूप में व्यक्त किया है।

5. सांस्कृतिक व राष्ट्रीय चेतना

छायावाद का केन्द्रीय भाव मुक्ति या स्वतंत्र्य ही है। मुक्ति की कामना से प्रेरित होकर छायावादी कवियों ने ओजस्वी स्वर में

जागरण गीत लिखा। मुक्ति की उनकी यह कामना और राष्ट्रीय चेतना केवल राषट्रगीतों तक सीमित नहीं है। उनके अधिकांश रचनाओं में हम यह देख सकते हैं। द्विवेदी युगीन बंधनप्रियता और आदर्शवादिता का विरोध करते हुए छायावादी कवियों ने युग के यथार्थ के बाह्य स्वरूप से बढकर उसकी सूक्ष्मता पर अधिक बल दिया है। तत्कालीन वातावरण तो गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन का था। यहीं नहीं सभी छायावादी कवि इसके सहभागी रहे थे। अतः राष्ट्रीय जागरण की गोद में पले-पनपे छायावाद विदेशी पराधीनता और स्वदेशी जीर्ण-शीर्ण रूढियों से सदा अस्वस्थ था। इसलिए सदियों से विदेशियों के गुलामी भारतीय जनता को अपने गौरवमय अतीत और सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराना छायावादी कवि अपना ध्येय मानते थे। उनकी रचनाओं में इसका स्पष्ट झलक मिलते हैं।

6. नारी-सौन्दर्य एवं प्रेम का चित्रण

छायावादी कवियों में नारी सौंदर्य के प्रति विशेष आकर्षण रहा। उन्होंने नारी को प्रेम का आलंबन बनाया है। इस धारा के कवियों ने नारी सौंदर्य एवं प्रेम का चित्रण करते समय स्थूल क्रिया-व्यापारों की अपेक्षा सूक्ष्म भाव-दिशाओं को अधिक महत्व दिया है। छायावादी कवियों केलिए नारी के प्रेयसी का रूप ही अधिक भाते थे। आपके प्रेमवर्णन की खासियत यह है कि इन्होंने निजी प्रेमानुभूति की व्यंजना की है। निराला ने प्रकृति के माध्यम से नारी के कोमल भाव- भंगिमा का जो चित्र खींचा है वह सामान्य जन-मानस को भावविभोर कर दिया। सौन्दर्य को निहारने की कला में पंत में जो सूक्ष्मता है वह अनुपम है। महादेवीजी के प्रेमवर्णन में ईश्वरीय विरह की प्रधानता है। उन्होंने आत्मा की चिरंतन विकलता और ब्रह्मा से मिलने की आतुरता के सुन्दर चित्रण संजोए हैं।

इसप्रकार छायावादी कवियों अपने प्रेम वर्णन द्वारा रागात्मक जीवनचर्या का जो स्वाद पाठक समक्ष रखा वह हिन्दी केलिए नहीं विश्व साहित्य के ही एक अनोखी कड़ी है। नामवरसिंह के शब्दों मे- "छायावादी कवियों ने प्रेम को जो इतनी प्रधानता दी, उससे नीरस जीवन में सरसता का संचार हुआ। सुधार-युग की अस्वाभाविक सधुक्कड़ी वृत्ति से छुट्टी मिली; नीरस जीवन यापन के स्थान पर रागात्मक जीवनचर्या आरंभ हुई; जीने का स्वाद कुछ और बढ़ गया।"

7. स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति

छायावादी कवियों की प्रमुख विशेषता उनकी स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति है। इन कवियों ने अपने हृदय के उद्गारों को व्यक्त करने केलिए किसी प्रकार की रूढियों या शास्त्रीय बन्धनों को नहीं स्वीकारा। छायावादी कवियों ने 'मैं' की शैली अपनाई, लेकिन इस 'मैं' में समूचा समाज सन्निहित है। छायावादी कवियों के संबंध में काव्य विषय एक जटिल समस्या नहीं। उनकेलिए कोई भी विषय काव्य वस्तु केलिए उपयुक्त था। वे पुरानी पिटी-पिटाई रास्ते पर चलना अनुचित समझते थे। इसलिए ही उनके काव्य में सौंदर्य प्रेम और चित्रण, प्रकृति चित्रण आदि की सब कहीं स्वच्छन्द प्रवृत्ति देखने को मिलते हैं।

8. वेदना एवं करुणा की अभिव्यक्ति

छायावादी काव्य में वेदना, करुणा एवं निराशा की अभिव्यक्ति प्रभूत मात्रा में हुई है। जीवन में मानव मन की आकांक्षाओं और अभिलाषाओं की असफलता पर कवि हृदय क्रन्दन करने लगता है। छायावादी कवि सौंदर्य प्रेमी हैं, किंतु सौंदर्य की क्षणभंगुरता को देख उनका मन व्याकुल हो उठता है। कवियों ने अपने व्यक्तिगत जीवन की अभिव्यक्ति तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलनों की असफलता की भावभूमि में चित्रित किया है। उनके राय में सच्ची कविता का मूल भाव वेदना एवं करुणा ही है। प्रसाद 'आँसू' काव्य में वेदना और करुणा का साकार रूप प्रस्तुत करते हैं।

महादेवी वर्मा के काव्य का प्राणतत्व उनकी वेदना और पीड़ा है। उन्हें करुणा की कवयित्री कहा जाता है। आपने अपना काव्य वेदना और करुणा की कलम से लिखा। आपने जीवन के सुख-दुःख को सहज स्वीकार करती है, उनके मुताबिक यह संसार दुखमय है। उन्होंने अपने काव्य में वेदना को इतनी तीक्ष्णता से अंकित किया है कि शेष अनुभूतियाँ उनकी पीड़ा के रंगों में रंगी हुई जान पड़ती है।

निराला का संपूर्ण जीवन संघर्षों से भरा था। कवि आम आदमी की तरह अपने दुख की अभिव्यक्ति न करके अपने को अटूट बनाए हुए, अपने दुख व वेदना की अभिव्यक्ति को उदात्त शोकगीत लिखकर, अपनी पुत्री सरोज का तर्पण करते हैं। अपनी एकमात्र पुत्री सरोज की असामयिक मृत्यु पर लिखे गये शोकगीत 'सरोजस्मृति' में वेदना के उद्रेक कलात्मक ढंग से किया गया है।

9. दार्शनिकता

छायावादी कवि मूलतः सर्वात्मवादी हैं। चिंतन और दर्शन उनकी खासियत है। प्रसाद जी अपने युग के सर्वोत्कृष्ट दार्शनिक कवि है। उनकी रचनाओं में बौद्ध दर्शन, अद्वैतवाद,

मानवतावाद आदि देखने को मिलते हैं। प्रसाद ने अपने महाकाव्य कामायनी में काश्मीरी शैव संप्रदाय के प्रत्यभिज्ञा दर्शन से प्रभावित होकर जीवन में इच्छा, ज्ञान और क्रिया के समन्वय की आवश्कता पर बल दिया है। प्रसाद ने ब्रह्म के अस्तित्व पर सदैव विश्वास किया है। पंतजी के काव्यों में भी समन्वयवाद, मार्क्सवाद, मानवतावाद का दर्शन मिलते हैं। निराला की रचनाओं में भी इसीप्रकार की दार्शनिकता हम देख सकते हैं। कवि कहते हैं कि जय या पराजय, सुख या दुख, आशा या निराशा जीवन की हर स्थिति का उत्तरदायी वह अन्तर्भामित ब्रह्मा है, वही सत्य है, शेष मिथ्या है। महादेवीजी ने जगत की क्षणभंगुरता का वर्णन किया है।

10. नारी के प्रति गरिमामयी दृष्टिकोण

नारी के प्रति छायावादि कवियों ने सर्वथा नवीन दृष्टिकोण अपनाया है। हिन्दी साहित्य में छायावाद से पूर्व किसी भी युग में नारी को वह गौरव स्थान प्राप्त नहीं था जो छायावाद में नारी को मिला। इस युग में नारी को दया के स्थान पर अपने अधिकार की माँग को उठाने का सौभाग्य मिला। डॉ. नामवरसिंह के अनुसार- "नारी के प्रति पहले जो दया का भाव था, वह बदल गया। इस युग में नारी ने पुरुष से दया के स्थान पर अपने अधिकारों की माँग की। इस अधिकार भावना ने नारी-पुरुष के बीच कहीं समानता का भाव पैदा किया, कहीं स्पर्धा का भाव और कहीं उसकी शक्ति स्वीकारने का भाव। कुल मिलाकर भिखारिणि अब मानसिक रूप से स्वामिनी बनी।" इन कवियों ने नारी को समस्त बन्धनों से मुक्त करने तथा उसे समाज में सम्मानजनक स्थान देने का प्रस्ताव रखा। छायावाद के सभी कवियों ने नारी की दीनता, शोषण, कठोर श्रम का मानवीय धरातल पर वर्णन कर नारी मुक्ति की आकांक्षा व्यक्त की है।

पंत ने समाज में फैली शोषण का विरोध किया और उससे नारी की मुक्ति केलिए आवाज़ उठाया। वे समस्त जड परंपराओं से नारी को मुक्त करना चाहते थे। पंत के अनुसार नारी को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त नहीं होंगे तो मानव-जीवन के विकास के रथ आगे नहीं बढ़ेगा। निराला नारी को शक्ति के रूप में देखते हैं। उनके मत में नारी समस्त जड़-पुरातन बन्धनों एवं परंपराओं को तोड़ने में सक्षम है। महादेवी वर्मा ने नारी के हृदय में बसी हुई पीड़ा एवं उसकी करुणापूर्ण परतंत्रता का चित्रण कर मुक्ति की आकांक्षा व्यक्त की है। जयशंकर प्रसाद नारी के सौंदर्य को संसार के सौंदर्य और सुख का मूल कारण मानते हैं। यहाँ नारी वासना का साधन नहीं है, बल्कि प्रेयसी, जीवन सहचरी, माँ आदि विविध रूपों में चित्रित है। उसका मुख्य रूप प्रेयसी का ही है। यह प्रेयसी पार्थिवजगत की स्थूल नारी नहीं है, वरन् कल्पना लोक की सुकुमारी देवी है। छायावादी कवियों ने नारी को पुरुष की प्रेरक शक्ति के रूप में स्वीकार किया। उनकी नारी दया, क्षमा, करुणा, प्रेम जैसे गुणों से संपन्न हैं। इसप्रकार छायावादी कवियों की दृष्टि में नारी विलास की सहचरी न होकर पुरुष को उच्चभूमियों तक ले चलनेवाली शक्ति है।

11. प्रतीकात्मकता

छायावाद नवीन शैली और अभिव्यंजना को लेकर हिन्दी साहित्य में अवतरित हुआ। इस काल के कवियों ने प्रतीकात्मकता को अपने काव्य का सर्वप्रमुख गुण घोषित किया है। उन्होंने अपने काव्य में सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रकृति के उपादानों को प्रतीक बनाकर की। पाश्चात्य प्रतीकवादियों की तरह छायावादी कवियों ने भी स्थूल के स्थान पर सूक्ष्म की, आदर्श के स्थान पर यथार्थ की, लौकिकता के स्थान पर अलौकिकता की, प्रत्यक्ष के स्थान पर अप्रत्यक्ष की प्रतिष्ठा की। प्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने स्वीकार किया है- "हिन्दी में छायावाद शब्द का जो व्यापक अर्थ रहस्यवादी रचनाओं के अतिरिक्त और प्रकार की रचनाओं के संबन्ध में भी गृहण हुआ है, वह इसी प्रतीक शैली के अर्थ में। छायावाद का सामान्य अर्थ हुआ प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करनेवाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन।" छायावादी कवि ने लाक्षणिकता और ध्वन्यात्मकता के साथ भाषा और शैली में नवीन अभिव्यजना को प्रकट किया। छायावादियों का प्रत्येक शब्द कटा-छंद और ध्वनियुक्त है।

12. प्रकृति का मानवीकरण

प्रकृति चित्रण के वजह से ही छायावाद को स्वच्छन्दतावाद समझा जाता हैं। छायावादी कवियों केलिए प्रकृति ही सबकुछ है। उनकेलिए प्रकृति की प्रत्येक छवि विस्मयोत्पादक एवं अपने काव्य की प्रेरणा शक्ति है। उन्होंने प्रकृति का मानवीकरण किया है। छायावाद के प्रत्येक कविता में यह दर्शनीय है।

उदाहरण देखिएः

अन्तरीक्ष में अभी सो रही है ऊषा मधुबाला
अरे खुली भी नहीं अभी तो प्राची की मधुशाला।

जुही की कली नामक कविता में निराला कहते हैं-

निर्दय उस नायक ने
निपट निठुराई की,
कि झोंकों की झाडियों से
सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली
मसल दिए गोरे कपोल गोल

पंत जी पर्वत प्रदेश में पावस कविता में यों कहते हैं-

गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरूवर
है झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेक्ष, अटल, कुछ चिंता पर।

महादेवी वर्मा जी की पंक्तियाँ देखिएः

तब कलियाँ चुपचाप उठाकर
पल्लव से घुंघट सुकुमार
छलकती पलकों से कहती है,
कितना मादक है संसार।

इसप्रकार अनेक नवीन काव्य प्रवृत्तियों को लेकर प्रस्फुटित छायावादी काव्यधारा हिन्दी साहित्य की परंपरा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इसने केवल बीस वर्ष के इतिहास से एक 'एपिक' रचा है। कल्पनाशीलता के बीच में जन्मे इस काव्यान्दोलन में व्याप्त जीवनमूल्य, जिजीविषा तथा संस्कारजन्य आदर्श हिन्दी साहित्य का अमूल्य तोफा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी छायावाद का मूल्याकंन इसप्रकार किया है- "छायावाद क्रमशः बनाया हुआ रास्ता नहीं है, उसमें एक तथ्य है। भाव और रूप की दृष्टि से द्विवेदी-युग की इतिवृत्तात्मक तथा श्रीधर पाठक और मुकुटधर पांडेय की स्वच्छन्दतावादी कविताओं के बाद छायावादी कविताओं का उतना भव्य उत्थान आश्चर्यजनक लगता है। पूर्ववर्ती कविताओं के साथ छायावादी रचनाओं को पढ़कर सहसा ऐसे प्रतीत होता है कि इतना लंबा रास्ता इन कवियों ने दो-तीन वर्षों में ही कैसे तय कर लिया?" वस्तुतः हम निस्सन्देह कह सकते हैं कि छायावाद खड़ीबोली हिन्दी के सुवर्ण काल ही है।

छायावाद के प्रवर्तक

छायावाद के आदि प्रवर्तक के संबंध में आलोचकों में काफी मतभेद हैं। प्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्लजी छायावाद के आदि प्रवर्तक के रूप में मुकुटधर पांडेय और मैथिली शरण गुप्त को मानते हैं। नंददुलारे वाजपेयी ने पंत तथा उनकी कृति 'उच्छवास' से छायावाद का आरंभ माना है। वहीं इलाचन्द्र, जयशंकर प्रसाद को छायावाद का जनक मानते हैं। प्रभाकर माचवे और विनयमोहन शर्मा माखन लाल चतुर्वेदी को छायावाद का प्रथम प्रवर्तक मानते हैं। लेकिन सर्वमान्य मत आदि प्रवर्तक के रूप में नहीं बल्कि छायावाद के चार स्तंभ के रूप में है ।

छायावाद के चार स्तंभ

1. जयशंकर प्रसाद
2. सुर्यकांत त्रिपाठी निराला
3. सुमित्रनंदन पंत
4. महादेवी वर्मा

1. जयशंकर प्रसाद (1889-1937)

जयशंकर प्रसाद छायावाद के सर्वश्रेष्ठ कवि है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी लेखक अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विधाओं में उन्होंने अपनी प्रतिभा की झलक दिखायी। कामायनी उनका महाकाव्य है। उन्हें काफी पुरस्कार भी प्राप्त है। अड़तालीस वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। (जयशंकर प्रसाद जी के सम्बद्ध में अगले अध्याय में विशद अध्ययन किया जाएगा।)

2. सुमित्रानंदन पंत (1900-1977)

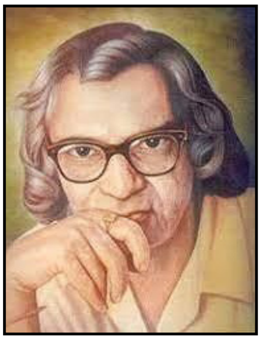

प्रकृति के सुकुमार कवि नाम से जानेवाले सुमित्रानंदन पंत का जन्म उत्तरांजल के अल्मोड़ा जिले के कौसानी गांव में 20

मई 1900 ई को हुआ। बचपन में उनका नाम गोसाई दत्त था। महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर उन्होंने बिना बी.ए. किये ही महाविद्यालय छोड़ दिया और घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, बँगला और अंग्रेज़ी भाषा- साहित्य का अध्ययन किया। सात वर्ष की उम्र में ही उन्होंने कविता लिखना शुरु कर दिया। कौसानी के प्राकृतिक सौंदर्य का प्रभाव पंत पर अंत तक रहा। अंग्रेज़ी-रोमांटिक कवियों के अतिरिक्त मार्क्स, फ्रायड, गाँधी, अरविंद के दर्शन से वे प्रभावित थे। इसलिए ही पंत की काव्ययात्रा अनेक पडाओं से गुज़री। उनकी प्रारंभिक रचनाओं मे प्रकृति और सौंदर्य के जो रमणीय चित्र मिलते हैं वह अनुपम है। पहले प्रकृति के प्रति आपके मन में इतना मोह पैदा हो गया था कि ये जीवन की नैसर्गिक विराटता और विविधता में पूरी तरह से आसक्त न हो सके। वे सदा कल्पना जगत में विचरण करते थे। लेकिन बाद में प्रकृति में ही नारी रूप देखने लगे।

पल्लव और गुंजन जैसी रचनाएँ इसका दिग्दर्शन हैं। लेकिन प्रकृति के इस नारी-चित्रण में कवि सर्वत्र पवित्रता ही देखना चाहते हैं। पल्लव को आलोचक वृन्द ने छायावाद का पूर्ण उत्कर्ष मानते हैं। डॉ. नगेन्द्र का कहना है कि "पल्लव की भूमिका हिन्दी में छायावादी युग के आविर्भाव का ऐतिहासिक घोषणा-पत्र है"। पल्लन में प्राकृतिक रहस्य की भावना ज्ञान की ज्ञिज्ञासा में परिवर्तित होता है। उनके ही शब्दों मे- "प्रकृति को मैंने अपने से अलग सजीव रहनेवाली नारी के रूप में देखा है।" उनकी अनेक कविताओं में प्रकृति प्रेम और आदर्शवादिता का सामजंस्य देखने को मिलते हैं।

पंतजी की अंतिम कविताओं में अरविंद दर्शन पर आधारित आध्यात्मिक नवमानवतावाद का स्पष्ट झलक मिलते हैं। अरविंद का विचार है कि सृष्टि का विकास अति मानवत्व की ओर हो रहा है। इस परिवर्तन के फलस्वरूप मानव प्राणी दिव्य प्राणियों में रूपांतरित हो जाएँगे। उस समय मानवता आध्यात्मिक ज्ञान संपन्न प्राणियों को जाति का रूप ले लेगी। तब मनुष्य में आन्तरिक आनंद का उदय हो जाएगा।

पंतजी के काव्य के भावपक्ष के समान ही कलापक्ष भी अत्यंत रोचक एवं आकर्षक है। गीतात्मक मुक्तक शैली में रचे गये आपके काव्य बंगला, अंग्रेज़ी और संस्कृत साहित्य से प्रभावित है। उनकी रचनाओं में जो सरसता, संगीतात्मकता, माधुर्य और व्यंजन शक्ति का समन्वय है वह हिन्दी काव्य जगत् केलिए अनुपम तोफा है। उनकी प्रारंभिक कविताएँ 'वीणा' में संकलित है। आपकी पहली कविता सन् 1916 में प्रकाशित 'गिरजे का घंटा' है। तब से आप निरंतर काव्य साधना में तल्लीन रहे। 1926 में उनका प्रसिद्ध काव्य संकलन 'पल्लव' प्रकाशित हुआ। सन् 1932 में प्रकाशित गुंजन आपका अंतिम छायावादी काव्य संग्रह है। आपके द्वारा संपादित पत्रिका है 'रूपाभ'। आपकी प्रमुख छायावादी रचनाएँ हैं- वीणा, उच्छावास, ग्रंथी, पल्लव, गुंजन, युगांत।

अन्य रचनाएँ हैं-

काव्य संग्रहः 'ग्राम्य', 'युगवाणी', 'युगपथ', 'मुक्ति यज्ञ', 'स्वर्ण किरण', 'स्वर्ण-धूलि', 'उत्तरा', 'तारापथ', 'लोकायतन', 'गीतहंस', 'चिदंबरा', 'कला और बूढा चाँद', 'सौवर्ण', 'मेघनाथवध' आदि।

काव्य नाटकः 'ज्योत्सना', 'शिल्पी', 'रजत-शिखर', 'युग पुरुष', 'सत्यकाम', 'अमिता'

उपन्यासः 'हार'

आत्मकथात्मक संस्मरणः 'साठ वर्षः एक रेखांकन'।

कहानीः 'पाँच कहानियाँ'।

आलोचनाः 'गद्यपथ', 'शिल्प और दर्शन', 'छायावादः एक पुनर्मूल्यांकन'।

इसप्रकार हिन्दी साहित्य जगत को अपने अभूतपूर्व योगदान से संपन्न किये पंतजी कई पुरस्कारों से सम्मानित हुए। "कला और बूढा चाँद" पर साहित्य अकादमी, "लोकायतन" पर सोवियत और "चिदंबरा" पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। सन् 1961 में राष्ट्र ने उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया। आपकी मृत्यू 77 वर्ष की आयु में 28 दिसंबर 1977 को इलाहाबाद में हुई।

3. महादेवी वर्मा (1907-1987)

"आधुनिक मीरा" नाम से जानेवाली महादेवी वर्मा का जन्म

SGOU

फरूखाबाद के संपन्न कायस्थ परिवार में सन् 26 मार्च 1907 ई॰ में हुआ। आपके पिता गोविंद प्रसाद वर्मा और माता हेमरानी देवी थे। माँ-बाप सुशिक्षित होने के कारण ही महादेवी जी की शिक्षा का भी उचित प्रबंध किया गया था। उनकी शिक्षा इन्दौर, भादलपुर, क्राईस्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में हुई। महादेवीवर्मा का विवाह ग्यारह वर्ष की आयु में डॉ. रूपनारायण वर्मा के साथ हुआ। लेकिन उनका वैवाहिक जीवन देर तक नहीं रहा। विवाह के कुछ दिन बाद वह अपने घर वापस आयी और अपनी पढाई जारी रखी। इलाहाबाद विश्व विद्यालय से संस्कृत में एम. ए किया और स्वतंत्रता आन्दोलन के दिनों में प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य बन गयीं। आजीवन इस संस्था से संबंद्ध रही। महादेवी वर्मा जी आरंभ में ब्रजभाषा में कविता लिखती थी बाद में मैथिलीशरण गुप्त से प्रेरणा पाकर खड़ीबोली की ओर आकृष्ट हुई और खड़ीबोली में काव्य रचना करने लगीं और ये कविताएँ हिन्दी काव्य जगत केलिए उत्कृष्ट निधि बन गईं। आप एक कुशल चित्रकार भी है। इसलिए आपकी कविताऔं मे चित्रों जैसी छवि देखने को मिलती है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती" कहा है। अपनी काव्य यात्रा के संबंध में स्वयं लेखिका का कहना है- "..........मेरी कविता-यात्रा तो और भी विचित्र है। मेरी माँ बालिका वधू के रूप में जबलपुर से फरूखाबाद पहूँची तब वे अपने साथ रामचरितमानस ले गई, पूजा-पाठ ले गई और हिन्दी ले गईं। इस प्रकार हमारे परिवार में जो उर्दू और फारसी का ही भक्त था, हिन्दी पहुँची। मैं सबसे बड़ी लड़की थी घर की। इसीलिए उन्होंने पूजा-पाठ में मुझको सम्मिलित कर लिया। पाँच-छह वर्ष की अवस्था से ही कभी मीरा के पद, कभी सूर के पद कभी रामचरितमानस की चौपाईयों का सस्वर गान सुन-सुनकर मैंने भी तुक मिलाना आरंभ किया।"

अन्य छायावादी कवियों से महादेवीजी की कविता का खासियत यह है कि आप जीवनभर छायावादी ही बनी रही। उसने किसी वाद की ओर पलायन नहीं किया। वेदना और पीड़ा आपकी कविताओं का प्राण रहे। उन्होंने खुद स्वीकार किया है कि "दुःख मेरे निकट जीवन के ऐसा काव्य है जो संसार को एकसूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है। मुझे दुःख के दोनों ही रूप प्रिय हैं। एक, वह जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार से एक अविच्छन्न बंधनों में बाँध देता है और दूसरा वह, जो काल और सीमा के बंधन में पड़े हुए असीम चेतना का क्रंदन है।" महादेवीजी अपनी कविताओं में पीड़ा के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए उसमें सुख की झाँकी देखती हैं। सभी छायावादी कवियों के समान महादेवीजी ने भी अपने काव्य में प्रकृति के चित्र प्रस्तुत किये हैं।

महादेवी वर्मा जी ने अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करने केलिए एक नई शैली की रचना की जिसे आध्यात्म से जोड़ा गया, जिसे रहस्यवाद नाम से अभिहित किया। महादेवी वर्मा का रहस्यवादी चिंतन उपनिषदों तथा वेदांत की अद्वैत दर्शन पर आधारित है। किसी अज्ञात अद्देश्य एवं विराट सत्ता के प्रति समर्पण की भावना महादेवीजी की रचनाओं की विशेषता हैं।

महादेवी वर्मा ने अपने भावबोध के आधार पर ही भाषा का गठन किया। माधुर्य उनकी भाषा की मूल निशेषता है। प्रकृति के व्यापक परिदृश्य में ही आपने अपनी रचनाएँ की है। भावों को मूर्त रूप देने में महादेवीजी अत्यंत कुशल थीं। चित्रात्मकता, बिंबविधान, लाक्षणिक शैली आदि आपकी कविताओं की विशेषताएँ हैं।

इसप्रकार भावपक्ष और कलापक्ष दोनों दृष्टि से महादेवी वर्मा की रचनाएँ केवल छायावाद युग का नहीं समस्त काल के हिन्दी साहित्य प्रेमियों केलिए एक वरदान है।

महादेवी वर्मा की रचनाएँ:

काव्य संग्रहः 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा', 'सप्तपर्णा', 'प्रथम आयाम', 'अग्निरेखा'

संकलनः 'आत्मिका', 'निरंतरा', 'परिक्रमा', 'सन्धिनी', 'यामा', 'गीतपर्व', 'स्मारिका', 'हिमालय'

रेखाचित्रः 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी'

निबंध संग्रहः 'श्रृंखला की कडियाँ', 'विवेचनात्मक गद्य', 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध', 'संकल्पिता', 'क्षणदा'।

साहित्य सेवा के साथ-साथ समाज सेवा को भी अपनी जीवनचर्या बनाकर महादेवीजी हिन्दी साहित्य जगत के दीप्तमान नक्षत्र बन गये। उनका जीवन संदेश सभी पाठकगण केलिए प्रेरणास्रोत है- "कला के पारस का स्पर्श पा लेनेवाले का 'कलाकार' के अतिरिक्त कोई नाम नहीं, साधक के अतिरिक्त कोई वर्ग नहीं, सत्य के अतिरिक्त कोई पाबन्धी नहीं, भाव-सौंदर्य के अतिरिक्त कोई व्यापार नहीं और कल्याण के अतरिक्त कोई लाभ नहीं।" ऐसे महान "कलाकार" को हिन्दी साहित्य जगत ने 1943 में मंगलाप्रसाद पारितोषिक एवं भारत भारती पुरस्कार से

सम्मानित किया। सन् 1956 में राष्ट्र ने पद्म भूषण से सम्मानित किया। यामा केलिए सन् 1982 में ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला। ये पहली महिला साहित्यकार थीं जिन्हें 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। 1988 में उन्हें मरणोपरांत भारत सरकार की पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया। ऐसे महान विभूति की विदा 11 सितंबर 1987 में हुआ।

4. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (1899-1961)

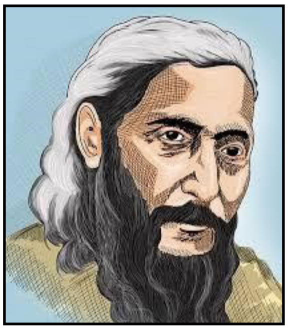

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म 29 फरवरी 1899 ई. में बंगाल के महिषादल रियासत में हुआ। रविवार में जन्म होने के कारण बचपन में उनका नाम सूर्यकुमार रखा। उनके पिता पं.रामसहाय तिवारी महिषादल में सिपाही का काम करते थे। महिषादल के राजघराने में रहकर निराला अंग्रेज़ी, बंगला, संस्कृत भाषाओं को सीखने के साथ संगीत और कुश्ती लड़ने का अभ्यास भी करते थे। ढाई वर्ष की अवस्था में माता की मृत्यू हुई। अतः पिता की देखरेख में ही उनका पालन-पोषण हुआ। चौदह वर्ष की आयु में मनोहरा देवी से उनकी शादी हुई थी। 19 वर्ष के उम्र में दो बच्चों के पिता भी बने। इस वर्ष ही पिता का देहान्त हो गया। कुछ वर्षों के अंदर ही इन्फ्लिएंजा के प्रकोप से पत्नी की भी मृत्यू हुई। अपने बच्चों के अलावा संयुक्त परिवार का भार भी अपने कंधों पर आ पड़ा। यों आपका जीवन बहुत ही कठिनाईयों एवं संघर्षो में बीता। उनके जीवन की खासियत यह है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने सिद्धान्त त्यागकर समझौते का रास्ता नहीं अपनाया, संघर्ष का साहस नहीं छोड़ा। इसलिए हिन्दी जगत् उन्हें “महाप्राण” से संबोधित किया। आपकी रचनाओं में यही संघर्ष हम देख सकते हैं। उनने लिखा-

दुःख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।

सन् 1916 से 1958 तक वे निरंतर काव्य-साधना में तल्लीन रहे। निराला की रचनाओं में जीवन की विविधता का जो चित्रण वह अन्यत्र कहीं नहीं दिखाई देता। आपने छायावादी काव्यान्दोलन को सफलता की चरम सीमा तक पहूँचाया तथा उसे प्रत्यक्षतः समाज से जोड़े रखा। बदलते युग के अनुसार आप यथार्थ के नये स्तरों और आयामों के प्रति सदा सजग रहे। आप एक ओर जुही की कली, संध्या सुन्दरी, तुम और मैं, श्रृंगारमयी जैसी कविताओं में प्राकृतिक सौंदर्य से अप्लावित हैं तो दूसरी ओर भिक्षुक, विधवा, तोड़ती पत्थर, बादल राग जैसी कविताओं में सामाजिक अव्यवस्था के प्रति आक्रोश करनेवाले के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं।

सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली,
मसल दिये गोरे कपोल गोल,
चौक पड़ी युवती

इसप्रकार- जुही की कली में गानेवाले कवि विधवा नामक कविता में पूछ लेते हैं कि -

कौन उसको धीरज दे सके
यह दुःख का भार कौन ले सके?
यह दुःख वह जिसका नहीं कुछ छोर है,
दैव अत्याचार कैसा घोर और कठोर है!

आप पूँजीवाद के विरोधी है। पूँजीवाद को अंत करके सामाजिक समता लाना कवि चाहते हैं और उसकेलिए हथौड़ा लेने का आह्वान भी करते हैं-

गुरु हथौड़ा हाथ
करती बार-बार प्रहार।

इसीप्रकार आपकी कविताओं में जो आत्मविश्वास और अपराजित शक्ति विद्यमान है वह हिन्दी साहित्य जगत के अन्य साहित्यकारों केलिए प्रेरणास्रोत रहा है। चतुर्सेन शास्त्री ने लिखा है- “निराला काव्य के रूप में शक्ति के पुंज है, अडिग आत्मविश्वास से वे ओतप्रोत है, विपरीत विचारधाराओं के तूफानी थपेडों के बीच चट्टान की भाँति स्थिर रहने का सामर्थ्य रखता हैं। उनकी अंतःशक्ति असीम है। उसी के बल पर वे विरोधों के बीच बढते जाते हैं और विरोध को पराजित करते हैं।”

इसीप्रकार अन्य छायावादी कवियों से भिन्न निराला जी भावपक्ष और कलापक्ष दोनों पर अपना अलग पहचान रखते हैं। आप हिन्दी के एकमात्र कवि हैं, जो अपने काव्यशिल्प को निरंतर विकसित करते रहते। वे मुक्तछन्द के प्रथम प्रयोक्ता हैं। छंद की मुक्ति के द्वारा उन्होंने भाषा और कविता को भी मुक्त

किया। 'परिमल' की भूमिका में उन्होंने लिखा है- "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्म के बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन अलग हो जाना है।"

बच्चनसिंह ने 'क्रांतिकारी निराला' नामक अपनी किताब में लिखा- "निराला की विचारधारा मूलतः क्रांतिकारी है। साहित्यिक, दार्शनिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक सभी क्षेत्र इनके एक नवीन उन्मेष, नई उत्तेजना लेकर आते हैं। किसी भी स्थान पर उनके विचारों को देखकर उनकी क्रांतिकारिता का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। समाज की जर्जर व्यवस्थाओं, राजनीतिक गुटबंदियों, धार्मिक रूढियों पर इन्होंने कड़े प्रहार किए हैं।" इसप्रकार साहित्य में सदा चिर नवीनता की खोज करनेवाले निराला वास्तव में निराला ही है। उनकी छायावादी युगीन रचनाएँ हैं - अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास। आपके द्वारा संपादित पत्रिकाएँ हैं - मतवाला, समन्वय, सुधा।

अन्य रचनाएँ:

काव्य संग्रहः 'तुलसीदास', 'कुक्कुरमुत्ता', 'अणिमा', 'बेला', 'नये पत्ते', 'अर्चना', 'आराधना', 'गीतकुंज', 'सांध्य काकली', 'अपरा'

उपन्यासः 'अप्सरा', 'अलका', 'प्रभावती', 'निरुपमा', 'कुल्ली भाट', 'बिल्लेसुर बकरिहा', 'चोटी की पकड़', 'काले कारनामे', 'चमेली', 'इन्दुलेखा'

कहानी संग्रहः 'लिली', 'सखी', 'सुकुल की बीवी', 'चतुरी चमार', 'देवी'

निबंधः 'रवीन्द्र कविता कानन', 'प्रबन्ध पद्म', 'चाबुक', 'चयन', 'संग्रह'।

छायावाद के अन्यकवि

छायावाद काव्य के विकास में कुछ अन्य कवियों का योगदान भी रहा है। ये कवि पूर्णरूप से छायावादी कवि नहीं है। वे मुख्य रूप से अन्य धारा के अंतर्गत आते हैं । किंतु युग और प्रधान साहित्यित धारा के प्रभाव से छायावाद की ओर आकृष्ट हुए हैं। उनमें प्रमुख हैं - माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, भगवती चरण वर्मा, ड़ॉ. रामकुमार वर्मा, मोहनलाल महतो वियोगी आदि।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला- भिक्षुक

कविता परिचयः

भिक्षुक

वह आता-
दो टूक कलेजे को करता, पछताता
पथ पर आता।

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को - भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता -
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया दृष्टि – पाने की ओर बढ़ाए।
भूख से सूख ओठ जब जाते

दाता-भाग्य विधाता से क्या पाते?
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए!

ठहरो! अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा
अभिमन्यू जैसे हो सकोगे तुम
तुम्हारे दुख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।

कठिन शब्द

दो टूक कलेजे	=	हृदय के टुकड़े होना (दुःखी होना)
लकुटिया	=	छोटी लकड़ी
दाता	=	देनेवाला
भाग्य विधाता	=	ईश्वर

भावार्थ

वह आता........... लकुटिया टेक,

संदर्भः प्रस्तुत कवितांश श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित भिक्षुक नामक कविता का है। निराला छायावादी युग के

एकमात्र क्रान्तिकारी कवि हैं।

प्रसंगःनिराला की बहुचर्चित कविता है भिक्षुक। इसमें कवि ने पूरी संवेदना और समवेदना के साथ सड़क पर दिखाई पड़े एक भिखारी का यथार्थ वर्णन किया है।

व्याख्याः कवि कहते हैं कि जब भिक्षुक आता दिखाई देता है, तो उसकी दयनीय दशा देखकर हृदय के टुकड़े होने लगते हैं। मतलब यह है कि भिक्षुक की दयनीय स्थिति अत्यंत वेदनाजनक है। वह स्वयं अपनी दीन-हीन अवस्था को देखकर पछताता है। वह भूख से इतना पीड़ित था कि उसका पेट-पीठ दोनों मिलकर मानो एकदम चिपक कर एक ही प्रतीत होते हैं। वह इतना दुर्बल और कमज़ोर है कि केवल लाठी के सहारे ही चल पाता है। वह अपने दयनीय एवं निस्सहाय जीवन को लेकर पछताता रहता है।

विशेषताएँ -

प्रस्तुत कविता में कवि निराला ने एक भिखारी की विवशता का आँखें देखा रूप उपस्थित किया है। छायावादी कवि होने के नाते ही आपके यथार्थवादी दृष्टिकोण झलकता है यहाँ। साथ ही सामाजिक विषमता असमत्व पर व्यंग्य किया गये है।

मुट्ठी भर दाने.............पथ पर आता।

व्याख्याः कवि कहते हैं कि अपनी भूख मिटाने को एक मुट्ठीभर दाने केलिए भिक्षुक दूसरों के सामने अपनी फटी हुई पुरानी चोली को फैलाता रहता है। कवि आगे जोड़ते हैं कि उसकी दयनीय स्थिति को देखकर संवेदनशील व्यक्ति के हृदय दो टुकड़े होने लगता हैं। सड़क पर चलते भिखारी के साथ दो बच्चे भी हैं जो भिक्षा पाने केलिए हाथ फैलाते रहते हैं। वे बायें हाथ से अपने पेट को मलते हुए अर्थात भूख से उत्पन्न पेट के दर्द को सहलाते हुए चलते हैं तथा दाएँ हाथ से किसी की दया-दृष्टि को तरसते हैं अर्थात भिक्षा केलिए दूसरों के सामने हाथ फैलाये रहते हैं।

भूख से सूख..................... कुत्ते भी हैं अड़े हुए!

व्याख्याः कवि आगे कहते हैं कि भिक्षुक जब भूख से व्याकुल हो जाता है तब प्यास से उसका होंठ सूखने लगता है, उस समय उसकी स्थिति अत्यंत दयनीय बन जाती है। इस दयनीय अवस्था में भी उसका मदद करने केलिए कोई नहीं है। बड़े-बड़े लोगों से भी उसे कुछ नहीं मिलता है। अतः भूख और प्यास से तड़पते भिखारी अपने आँसुओं को पीकर रह जाता है। मानो विवश होकर अपनी वेदना को दबाकर चुप रह जाता है। ऐसे भिक्षुक को देखकर कविमन द्रवित हो जाता है। कवि आगे कहते हैं कि कभी-कभी भिक्षुक सड़क के किनारे होकर जूठी पत्तल चाटते हुए दिखाई देता है, लेकिन उन पत्तलों को चाटने केलिए कुत्ते भी अड़े रहते हैं।

ठहरो! अहो मेरे हृदय.......... हृदय में खींच लूँगा।

व्याख्याः जूठे पत्तल को चाटने केलिए गली के कुत्तों से भी छिना-झपटी या लड़ाई करनेवाले भिखारी की करुणाजनक स्थिति को देखकर कवि का मन करुणा और संवेदना से विगलित हो जाता है। इसलिए वे कहते हैं कि ठहरो, मेरे हृदय में जो अमृत है उससे मैं तुम्हें सींच दूँगा। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। मैं जीवन शक्ति देकर तुम्हारी भूख शांत कर दूँगा। परंतु क्या तुम अभिमन्यू जैसे बन पाओगे। मतलब यह है कि जो साहस अभिमन्यू ने कठिन परिस्थितियों से उभरने केलिए दिखाया था। वह तुम में भी दिखनी चाहिए। कवि यहाँ भिक्षुक को अभिमन्यू के समान संघर्षरत एवं संकल्पनिष्ठ व्यक्तित्व के अधिकारी बनाना चाहते हैं। इसलिए वे कहते हैं कि तुम्हारे सभी दुःखों तथा वेदनाओं को मैं अपने हृदय में खींच लूँगा। अर्थात कवि अपने हृदय की सारी संवेदनाओं को देकर उसे सुखी बनाना चाहते हैं।

कविता की विशेषताएँ

भिक्षुक कविता में निराला ने भिक्षुक की दयनीय दशा का यथार्थ वर्णन करते हुए सामाजिक वर्ग भेद की ओर इशारा करते हैं। कवि समाज की ऐसी व्यवस्था पर अपना आक्रोश व्यक्त करते हैं कि किसी को भीख मांगने या घृणित और अपमानजनक जीवन बिताना पड़ता है। युगीन यथार्थ के प्रति निरालाजी का सजग दृष्टिकोण यहाँ झलकता हैं। समाज की पीड़ितों, दुखियों, दीन-दलितों के प्रति निराला का दिल सदा संवेदनशील रहा हैं। इस कविता में भी निरालाजी भिखारी और उसके दो बच्चों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है। यथार्थ कवि हमेशा वेदना का अनुसरण करता है।

Critical Overview / अवलोकन

हिन्दी साहित्य के विकास में छायावादी युग एवं छायावादी लेखकों का योगदान अतुल्य है। प्रस्तुत काल के लेखक उच्च स्तर के साहित्य रचना में प्रवृत्त रहे हैं और उसके फलस्वरूप अनगिनत श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाएँ प्रकाशित हुए हैं। पूर्ववर्ती युग से भिन्न कई नए प्रवृत्तियों के अनुसार इस कालखंड में साहित्य रचना होते रहे। इस काल के प्रमुख चार रचनाकारों में एक है सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी। उनकी एक सशक्त कविता है- भिक्षुक। समाज की पीड़ितों, दलितों से कवि इस कविता द्वारा अपना संवेदना व्यक्त करते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- छायावाद केलिए अलग अलग विद्वानों ने अलग अलग परिभाषाएँ दिए हैं।
- छायावाद की समयसीमा 1918 से 1936 तक माना जाता है।
- छायावाद शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मुकुटधर पांडेय ने की है।
- मुकुटधर पांडेय ने सन् 1920 में जबलपुर से निकली 'श्रीशारदा' पत्रिका में "हिन्दी में छायावाद" नामक अपने निबंध में व्यंग्यात्मक रूप से इस शब्द का प्रयोग किया था।
- वैयक्तिक अभिव्यक्ति, प्रकृति चित्रण, रहस्यभावना की अभिव्यक्ति, दार्शनिकता, प्रतीकात्मकता आदि छायावाद की मुख्य प्रवृत्तियाँ हैं।
- छायावाद के प्रवर्तक के संबंध में विद्वानों के बीच में मतभेद है।
- छायावाद के चार स्तम्भ हैं।
- छायावाद के चार स्तम्भ हैं - जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा।
- सुमित्रानंदन पंत जी को "चिदम्बरा" केलिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है।
- महादेवी वर्मा को "यामा" के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है।
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की बहुचर्चित एवं संवेदनशील कविता है भिक्षुक।
- भिक्षुक कविता के ज़रिए कवि समाज के दीन दलित एवं दुःखी लोगों को संघर्षरत रहने केलिए प्रेरित करता है और उनके प्रति मानवीय संवेदना को जागृत करता है।

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. छायावाद शब्द का प्रयोग सबसे पहले किसने किया?
2. मुकुटधर पांडेय ने अपने किस रचना में सबसे पहले 'छायावाद' शब्द का प्रयोग किया?
3. छायावाद के चार स्तंभ कौन-कौन हैं?
4. निराला का पूरा नाम क्या है?
5. सरोज स्मृति किसकी रचना है?
6. सरोज स्मृति किसप्रकार की रचना है?
7. भिक्षुक किसकी कविता है?
8. भिक्षुक कविता निराला के किस काव्य संकलन में संग्रहीत है?
9. भीखारी के हाथ से कौन झूठी पत्तल झपट लेना चाहता है?
10. कवि भिक्षुक को किसके समान बनना चाहते हैं?

Answers उत्तर

1. मुकुटधर पांडेय
2. हिन्दी मे छायावाद
3. प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी वर्मा
4. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
5. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
6. शोकगीत
7. निराला
8. परिमल
9. गली के कुत्ते
10. अभिमन्यु

Assignments प्रदत्त कार्य

1. छायावाद के प्रमुख प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए।
2. छायावाद के चार स्तंभों के बारे में लिखिए ।
3. छायावादी युग की प्रमुख रचनाओं पर प्रकाश डालिए।
4. भिक्षुक कविता के आधार पर निराला की रचना घर्मिता पर प्रकाश ड़लिए।
5. भिक्षुक कविता के उद्देश्य पक्ष पर विचार कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी वर्मा की श्रेष्ठ रचनाएँ - वाचस्पति पाठक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. परिमल - पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, गंगा-पुस्तकमाला, लाहोर।
3. निराला - डॉ. इन्दनाथ मदान, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. निराला काव्य का अध्ययन - डॉ. भगीरथ मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल-मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।
6. निराला-रामविलास शर्मा - राधाकृष्ण प्रकाशन
7. आधुनिक कविता- डॉ. शार्दूल विक्रम सिंह - भवदीय प्रकाशन, अयोध्या।

इकाई 2

किरण

जयशंकर प्रसाद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- छायावादी काव्य परंपरा में जयशंकर प्रसाद की भूमिका समझता है
- प्रसाद के काव्यगत विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करता है
- किरण कविता पढ़कर समझता है
- किरण कविता में अभिव्यक्त संवेदना को समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

छायावाद के चार स्तंभों मे एक है श्री. जयशंकर प्रसाद। अनेक विदवानों ने प्रसाद को छायावाद का जनक मानते हैं। छायावादी कविता का वैभव अपनी क्लासिक पूर्णता के साथ प्रसाद की कविताओं में मिलता है। छायावादी कवियों केलिए प्रकृति ही सबकुछ है। उन्हें प्रकृति के अंग-अंग में सौंदर्य के दर्शन होते हैं। प्रसाद की कविता प्रकृति के अनेक रूपों एवं चित्रों से सुशोभित है। प्रस्तुत कविता किरण इसका दिग्दर्शन है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

किरण, छायावाद, परमाणु, बिखेरना, अश्रांत, सरसिज, किंजल्क

Discussion / चर्चा

लेखक परिचय

जयशंकर प्रसाद (1889 - 1937)

अधिकांश विद्वान जयशंकर प्रसाद को छायावादी काव्य धारा के जनक मानते हैं। प्रसाद का जन्म काशी के एक प्रतिष्ठित परिवार में 30 जनवरी 1889 ई. को हुआ था। प्रसाद का परिवार बड़े शिव भक्त थे। ईश्वरीय कृपा से जन्म होने के कारण शैशव में उन्हें झारखण्डी कहते थे। साहित्यिक वातावरण में जन्म होने के कारण साहित्य और कला के प्रति उनमें बचपन से ही रुचि थी और नौ वर्ष की उम्र में उन्होंने कलाधर नाम से कविता लिखकर अपनी प्रतिभा का परिचय किया था। लगभग नौ वर्ष की अवस्था में ही चित्रकूड़, नैमिषार्य, मथुरा, ओंकारेश्वर, धाराक्षेत्र, उज्जैन आदि जगहों को देखने का अवसर उन्हें मिला था। यहाँ की प्रकृति का प्रभाव उनके मन पर पड़ा। 'चित्राधार', 'झरना', 'लहर' जैसी रचनाओं में प्रकृति के इस मोहक रूप का ही चित्रण हमें देखने को मिलते हैं। प्रसाद के काव्यों का प्रथम संग्रह 'चित्राधार' है। सन् 1909 ई में इन्दु में इसका प्रकाशन हुआ। इसके प्रारंभिक संस्करण में ब्रजभाषा और खड़ीबोली की रचनाएँ थीं। लेकिन द्वितीय संस्करण में केवल खड़ीबोली की रचनाएँ थीं जिसका प्रकाशन नवंबर 1914 में प्रेम-पथ नाम से हुआ। बाकी अंश का प्रकाशन

दिसंबर 1914 में चमेली नाम से हुआ। 1909 इनका एकत्रित रूप 'प्रेमपथिक' नाम से प्रकाशित हुआ। प्रसादजी सौंदर्य और प्रेम के कुशल चितेरे हैं। उनके मत में प्रेम के कारण ही यह जगत चेतनामय रहता है।

महाकवि वाल्मीकि, कालिदास, तुलसी, सूर आदि से प्रभावित होकर प्रसाद ने अनेक आख्यानक कविताओं की रचना भी की है। अयोध्या का उद्धार, वनमिलन की कथा प्रेम राज्य ऐसी रचनाएँ हैं। प्रसाद की खड़ीबोली की स्फुट रचनाओं का प्रथम संकलन 'कानन कुसुम' है। इसमें सन् 1909 से लेकर 1917 तक की कविताएँ संकलित हैं। 1918 ई में आपके सुप्रसिद्ध काव्य संग्रह 'झरना' का प्रकाशन हुआ जिसमें प्रसाद की प्रथम छायावादी कविता 'प्रथम प्रभात' भी प्रकाशित हुई थी। विषय, प्रकृति, छन्द, अलंकार, भाव आदि सभी दृष्टि से यह कृति अनुपम है। इस कृति को प्रसाद के साहित्यिक यात्रा का मोड़ मानते हैं। इसलिए ही समीक्षक इसे छायावाद युग का एक महत्वपूर्ण सोपान मानते हैं। सन् 1913 से लेकर 1927 तक प्रसाद द्वारा लिखी गयी कविताओं का संकलन 'झरना' नाम से प्रसिद्ध है। इसमें प्रसाद ने प्रेम और सौंदर्य की अनुभूतियों को वाणी प्रदान की। उनकी छायावादी-रहस्यवादी प्रवृत्तियों का उद्घाटन इस संकलन द्वारा हुआ है। उनके काव्य में सौंदर्य चित्रण के स्थूल और सूक्ष्म चित्र मिलते हैं। 'झरना' के बाद जिन कविताओं और मुक्तक गीतों का लेखन प्रसाद द्वारा हुआ था वे 'लहर' में संग्रहीत है। हिन्दी साहित्य के विरह काव्य की परंपरा में आपका खण्ड़काव्य 'आँसू' का विशेष महत्व रहा है। यह एक स्मृति काव्य है जिसमें कवि के हृदय की पीड़ा आँसुओं के रूप में बरस पडी है। इसकी गणना शोकगीत परंपरा में आती है। छायावादी कवि प्रसाद के काव्य में देश प्रेम का भाव भी देखने को मिलता है।

"अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।"

प्रसादजी के काव्य का मुख्य विषय प्रेम ओर सौंदर्य ही है। प्रकृति के सचेतन अनुभूति के पीछे एक परम सत्ता का आभास उनके काव्यों में सर्वत्र परिलक्षित होता है, यही प्रसाद का रहस्यवाद है-

"सुप्रभात मेरा भी होवे, इस रजनी की दुःख अपार,
मिट जाने जो तुमकों देखूँ, खोलो, प्रियतम खोलो द्वार।"

प्रसाद की रचनाओं की और एक विशेषता है नारी की महत्ता की स्वीकृति। कामायनी में श्रद्धा के रूप में आपने नारी विषयक दृष्टिकोण यों किया है-

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।"

प्रसादजी की काव्य कृतियों में अंतिम और सर्वोत्कृष्ट काव्य है कामायनी। आज के मानव जीवन को उसके समूचे परिवेश में प्रस्तुत करनेवाला यह महाकाव्य पन्द्रह सर्गों में विभाजित है। इसका वर्ण्य विषय आदि मानव मनु की कथा है। प्रसाद को महाकवि और आधुनिक युग का सर्वश्रेष्ठ कवि घोषित करने का आधार कामायनी है। इसमें मानव मनोभाव की अभिव्यक्ति प्रकृति के विभिन्न रूपों से किया गया है-

"मनु निरखने लगे ज्यों-ज्यों यामिनी का रूप
वह अनंत प्रगाढ छाया फैलती अपरूप,
बरसता था मदिर कण सा स्वच्छ सतत अनंत,
मिलन का संगीत होने लगा था श्रीमंत।"

प्रसाद का रचना संसार केवल काव्य जगत तक सीमित नहीं रहा बल्कि आप सफल कहानीकार, नाटककार, उपन्यासकार तथा निबंध लेखक हैं। आपके द्वारा संपादित पत्रिका है इन्दु। आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में आपकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

काव्य: 'चित्राधार', 'कानन कुसुम', 'करुणालय', 'महाराणा का महत्व', 'प्रेमपथिक', 'झरना', 'लहर', 'आँसू', 'कामायनी', 'प्रसाद-संगीत'।

नाटक: 'प्रायश्चित', 'सज्जन', 'कल्याणी-परिणय', 'अज्ञात शत्रु', 'विशाख', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'कामना', 'स्कन्द-गुप्त', 'एक घूँट', 'ध्रुवस्वामिनी', 'चन्द्रगुप्त'।

उपन्यास: 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती'।

कहानी संग्रह: 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आँधी', 'इन्द्रजाल', 'आकाशदीप'

निबंध: 'काव्य और कला तथा अन्य निबंघ'।

कविता का परिचय

किरण

किरण तुम क्यों बिखरी हो आज,
रँगी हो तुम किसके अनुराग,

स्वर्ण सरजित किंजल्क समान,
उड़ाती हो परमाणु पराग।

धरा पर झुकी प्रार्थना सदृश,
मधुर मुरली - सी फिर भी मौन,
किसी अज्ञात विश्व की विकल-
वेदना–दूती सी तुम कौन ?

अरुण शिशु केमुख पर सविलास,
सुनहली लट घूँघराली कांत,
नाचती हो जैसे तुम कौन ?
उषा के आंचल में अश्रांत

भला उस भोले मुख को छोड़
और चूमेगी किसका भाल.
मनोहर यह कैसा है नृत्य,
कौन देता सम पर ताल?
कोकनद मधु-धारा सी तरल,
विश्व में बहती हो किस ओर?
प्रकृति को दैती परमानंद,
उठाकर सुन्दर सरस हिलोर।

स्वर्ग के सूत्र सदृश्य तुम कौन,
मिलाती हो उससे भूलोत ?
जोड़ती हो कैसा सम्बंध,
बना दोगी क्या विरज विशोक!

सुदिनमणि-वलय विभूषित उषा-
सुन्दरी के कर का संकेत-
कर रही हो तुम किसको मधुर,
दिखलाती प्रेम-निकेत ?
चपल! ठहरो कुछ लो विश्राम.
चल चुकी हो पथ शून्य अनंत,
सुमनमन्दिर के खोलो द्वार,
जगे फुर सोया वहाँ वसंत।

कठिन शब्दों के अर्थ

सरसिज	=	कमल
किंजल्क	=	कमल का पराग
मुरली	=	बांसुरी
विकल	=	व्याकुल
लट	=	बाल
उषा	=	प्रभात
अश्रान्त	=	अथकित
कोकनद	=	लाल कमल
विरज	=	विशोक
निकेत	=	घर

काव्यांशों की व्याख्या

किरण तुम........परमाणु पराग।

संदर्भः प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'किरण' नामक कविता का अंश है। यह कविता आपके 'झरना' काव्य संग्रह में संकलित है। प्रस्तुत कविता में किरण को सजीव सत्ता के रूप में देखा गया है। इसमें प्रकृति का मानवीकरण है।

प्रसंगः महाकवि प्रसाद ने प्रस्तुत कविता में सूरज की किरणों की लालिमा देखकर उनसे प्रश्न करते हैं।

व्याख्याः कवि प्रभातकालीन सूर्य किरणों से पूछ रहे हैं कि हे किरण, तुम आज क्यों बिखरी हो और किसके अनुराग में रंगीन होकर इतनी लाल हो गयी हो। आगे कवि पूछ बैठ्ते हैं कि स्वर्ण सरजित मानो स्वर्ण कमल की किंजल्क की भांति परमाणु पराग उडाकर तू क्यों बिखरी हो। इसका मतलब है कि कमल फूल के महीन सूक्ष्म पराग के समान सूर्य रूपी कमल के पराग रूपी किरण प्रभात में उड़ रही है।

विशेषताएँः छायावादी कवियों के संबंध में प्रकृति के प्रत्येक वस्तु अपने काव्य का प्रेरक शक्ति तथा सौंदर्य का विधान है। उदय और अस्तमय के समय किरण का बिखरना तथा सूर्य का लाल होना स्वाभाविक बात है। लेकिन यहाँ कवि पूछते हैं कि हे किरण तुम क्यों बिखरी हो आज, रँगी हो तुम किसके अनुराग

थे। लाल तो अनुराग या प्रेम का रंग है, इसलिए ही कवि ऐसा पूछ रहे हैं जो उनके कल्पनाशक्ति का उत्तम उदाहरण है।

धरा पर झुकी.......तुम कौन

व्याख्याः कवि आगे कहते हैं कि हे किरण तुम्हें देखकर ऐसा लगता है कि तुम तो धरा, याने भूमि पर झुकी प्रार्थना कर रही हो। तुम एकदम मधुर मुरली या बाँसुरी के मौन संगीत के समान धरती पर व्याप्त है। प्रभातकालीन सूर्य जब अपनी स्वर्णिम किरणें बिखेरती है तब प्रकृति के सभी जीवजंतु उनसे अत्यंत प्रभावित होते हैं जैसा कि कहीं से बहते संगीत के सप्त स्वर में मन डूब जाता है। कवि आगे कहते हैं कि यह ब्रह्माण्ड़ अपने में अनंत रहस्य समेटे रहते हैं जिन्हें पूर्ण रूप से पहचानना अभी तक नहीं हुआ हैं। प्रकृति की ओर झुकी हुई किरणों को देखकर कवि को ऐसा लगता है कि ये किरणें विश्व के किसी अज्ञात दुख की बात हमसे बता रही है। किरण दूती का काम करती है

विशेषताएँ: कवि प्रसादजी यहाँ मानवीकरण अलंकार के सुन्दर प्रयोग से सूर्य किरणों के सोन्दर्य का सजीव वर्णन करते हैं।

अरुण शिशु के.............उषा के आंचल में अश्रांत

व्याख्याः कवि यहाँ सूरज को एक शिशु मुख के रूप में चित्रण कह रहे हैं कि ये सुन्दर किरणें उस अरुण शिशु या बालसूर्य के मुख पर सविलास नाचनेवाली घुँघराले सुन्दर बाल है जो उषा या प्रभात सुन्दरी के आंचल में अश्राम या बिना थके ही नाच रही है।

विशेषताएँ: मानवीकरण अलंकार का प्रयोग हुआ है यहाँ। कवि बाल सूर्य के माध्यम से यही सन्देश भी देना चाहते हैं कि हमें अपने कर्तव्य में कभी भी थके या उदास नहीं होना है। नित्य उदय और अस्त होना सूर्य का कर्तव्य है, धर्म है उससे वह कभी भी थका या उदास नहीं होता है।

भला उस.........सम पर ताल

व्याख्याः कवि किरण से पूछते हैं कि हे किरण तुम सूर्य रूपी शिशु के सुन्दर भोले-भाले मुख को छोड़कर किसका माथा या भाला चूमने केलिए नीचे धरती की ओर परमाणु पराग उडाकर आ रही है। तुम्हारा यह आना नृत्य के समान सुन्दर है। लेकिन इसकेलिए आपको कौन सुन्दर ताल बजाता है।

कोकनद मधु..........सरस हिलोर

व्याख्याः कवि एक बार फिर अरुणिमा से युक्त सूर्य किरणों को कोकनद या लाल कमल से उपमित करते हुए कहते हैं कि हे किरण तुम लाल कमल की मधु के समान है। कवि किरण से पूछते हैं कि विश्व में मधुर पराग उठाकर तुम्हारा इसतरह बहना का उद्देश्य क्या है। इस प्रकार तुम्हारा बहना मधुर मुरली के गान की तरह सुन्दर है, मनमोहक नृत्य के समान हे। तुम्हारा बहना अवश्य प्रकृति को सुन्दर सरस हिलोर करती है मानो प्रकृति को परमान्द प्रदान करते है।

स्वर्ग के सुन्दर.........विरज विशोक

व्याख्याः मधुर मुरली के गान एवं सुन्दर नृत्य के समान धरा पर बिखेरते सूर्य किरणों को देखकर कवि कहते हैं कि हे किरण तुम्हारे बिखेरने से मुझे ऐसा लगता है कि तुम स्वर्ग को भूलोक से या घरती से मिलाने का काम करती हो। कवि प्रश्न करते हैं कि तुम स्वर्ग को भूलोक से कैसे मिलाती हो। कवि आगे पूछते हैं कि तुम इसप्रकार स्वर्ग और भूलोक का संबंध जोड़कर क्या धरती को विरज विशोक बनना माने भूलोक के सभी दुःखों और निराशाओं को मिटाना चाहते हो।

सुन्दरीमणि - वलय....................प्रेम निकेत।

व्याख्याः कवि प्रभातकालीन छवि को उषासुन्दरी के रूप में चित्रित करते हुए कहते हैं कि उषा सुन्दरी अपने प्रियतम को हाथों से कोई प्रेम संकेत करते वक्त उसके हाथों के कंकन की चमक से जो आलोक या प्रकाश फैलता है उसके समान सूर्य भी अपने किरणों को बिखेरते हैं। कवि किरण से पूछ रहे हैं कि हे किरण उषा सुन्दरी के समान तुम अपने करों से किसे संकेत कर रही हो। प्रेमी को प्रभातकालीन सूर्यकिरण उषा सुन्दरी के कंकन के चमक के समान है जिससे वह प्रेम का संकेत देती है।

चपल ठहरो......वहां वसेत

व्याख्याः प्रभातकालीन सूर्य किरणों की छवि का विभिन्न प्रकार का वर्णन करने के बाद कवि कहते हैं कि अरे चपल या चंचलचित्तवाली किरण कुछ तो विश्राम कर लो। क्योंकि तू अनंत शून्यपथ की लंबी यात्रा कर चुकी है। सूरज की किरणों का भू पर आना तो बहुतधिक दूरी को तय करने से होता है। इसलिए कवि कह रहा है कि किरण अनंत शून्य पथ की यात्रा कर चुकी है और अब ज़रा विश्राम कर लो। कवि आगे कहते हैं कि हे किरण तुम हमारे सुन्दर मन रूपी मन्दिर का द्वार ज़रा खोलो ताकि वहाँ सोया हुआ वसंत फिर जागें। सूर्य का आगमन सबके मन रूपी द्वार को खोल देता है। सूर्य किरणों की

ऊर्जा से सब प्राणियों के मन की उदासीनता एवं थकेपन दूर हो जाता है। मन की सारी विषमताओं को खोकर नयी ऊर्जा प्रदान करती है।

कविता की विशेषताएँ

छायावादी काव्यधारा के एक प्रतिनिधि रचना है प्रसाद द्वारा रचित 'किरण' नामक कविता। इसमें कवि ने प्रभातकालीन सूर्य किरणों की छवि का अत्यंत सुन्दर ढंग से वर्णन किया है। कवि ने किरण को सजीव सत्ता के रूप में देखा है। प्रकृति का मानवीकरण कविता के मुख्य आकर्षक तत्व रहा है। कविता की अंतिम पंक्तियों में कवि की संवेदना का स्पष्ट झलक है। प्रसादजी यहाँ गुलामी के जंजीर में पड़े तत्कालीन जनता से उद्बोधन करते हैं कि स्वतंत्रता की लड़ाई केलिए जागृत हों। परतंत्रता से मुक्ति पाने केलिए अनेक बुज़ुर्ग लोगों ने काफी पथ की दूरी तय की है। लेकिन बहुत दूरी अभी बाकी है। कवि का कहना है कि इतनी दूरी को तय करने पर वे लोग शायद थके हुए होंगे। अतः उन्हें विश्राम की ज़रूरत है। उनके द्वारा चलाये रास्ते या प्रकाश से हमारे मन रूपी मन्दिर के द्वार खुलें ताकि वहाँ सोया हुआ वसंत जागे। मतलब यह है कि गुलाम रूपी हमारी विपन्नता को दूर करके स्वतंत्रता रूपी वसंत को लाने केलिए प्राप्त बने।

Critical Overview / अवलोकन

छायावाद के चार स्तंभों में एक माने जानेवाले श्री जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से धनी व्यक्तित्व से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि साहित्य के विभिन्न विधाओं में उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है। छायावाद की प्रवृत्तियों के अनुरूप उन्होंने अपने सर्जना को ढाला है। उनकी चर्चित एवं सुंदर कविता है- किरण। इसमे उन्होंने सूर्य किरणों का अतीव मार्मिक एवं सजीव वर्णन किया है।

प्रकृति के हर कण में मानव को देखना, मानवीय विचारों का आरोपण करना छायावादी कवियों का शौक रहा है। प्रस्तुत कविता भी उसी कोटि में आती है। कवि ने सूर्यकिरणों की एक अलग भावभूमि प्रस्तुत की है। चीजों को अलग नज़रिए से देखना उनकी खूबी है। और इसमें वे सफल भी हुए हैं। साथ ही मानव को कार्य करने की प्रेरणा भी देते हैं। सही मार्ग दिखाते हुए सोये हुए लोगों को जगाने की कोशिश भी करते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- श्री. जयशंकर प्रसाद जी को छायावाद के चार स्तंभों में एक माना जाता है।
- अधिकांश विद्वान उन्हें छायावाद का जनक मानते हैं।
- प्रसाद जी के बचपन का नाम झारखंडी था।
- कामायनी उनका महाकाव्य है।
- वे शुरुआत में कलाधर नाम से कविताएँ लिखा करते थे।
- उन्हें प्रकृति के अंग अंग में सौन्दर्य का दर्शन होते हैं।
- किरण उनकी बहुचर्चित कविता है।
- इस कविता में प्रकृति का मानवीकरण हुआ है और यही कविता का मुख्य आकर्षक तत्व रहा है।
- प्रभातकालीन किरणों का विभिन्न प्रकारों में वर्णन किया गया है।
- और अपने कर्मों से कभी उदासीन ना होने का संदेश भी कवि देते हैं।

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. किरण नामक कविता किसने लिखी?
2. किरण नामक कविता किस काव्य संकलन में संग्रहीत है?
3. कवि के मत में किरण किसके समान परमाणु पराग उड़ा रही है?
4. कवि के मत में सूर्य किरणें धरती को क्या प्रदान करती है?
5. कवि क्यों सूरज को विश्राम करने को कहते हैं?
6. कवि किरण से क्या आह्वान देता है?
7. किरण कविता में कवि क्या संदेश देते हैं?

Answers उत्तर

1. जयशंकर प्रसाद
2. झरना
3. स्वर्ण कमल के समान
4. परमानंद
5. भूमि में पहूँचने में सूरज की किरणें को अनंत शुन्यपथ तय करना पड़ा।
6. जनताओं के मन रूपी मन्दिर को जगा दें ताकि वहाँ सोया हुआ वसंत फिर आ जाये।
7. अपने कर्मों से कभी उदासीन न होना।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. किरण कविता के आधार पर प्रसाद काव्य में चित्रित प्रकृति वर्णन पर विचार कीजिए।
2. किरण कविता का सारांश लिखकर उसकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. छायावाद : नामवर सिंह - राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पटना।
2. प्रसाद - साहित्य में प्रेम तत्व - प्रभाकर श्रोत्रिय, नेशनल पब्लिशिं हाउस, दरियांगज, नयी दिल्ली
3. प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी वर्मा की श्रेष्ठ रचनाएँ - वाचस्पति पाठक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ.नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल-मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।
5. कामायनी - जयशंकर प्रसाद लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. जयशंकर प्रसादः आचार्य नन्दुदुलारे वाजपेयी, भारती भणडार लीडर प्रेस, इलाहाबाद।

BLOCK 03

प्रगतिवादी कविता

SGOU

इकाई 1

प्रेत का बयान

नागार्जुन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रगतिवादी कवि नागार्जुन की परिचय प्राप्त करता है
- प्रगतिवाद की प्रवृत्तियों की जानकारी प्राप्त करता है
- 'प्रेत का बयान' कविता का आशय ग्रहण करता है
- कविता द्वारा निम्न-मध्यवर्ग की समस्याओं से परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

छायावाद आधुनिक हिन्दी कविता का स्वर्ण युग था। छायावादी कवियों ने खड़ी बोली हिन्दी को चरम उत्कर्ष प्रदान किया जिस से हिन्दी कविता को नई प्रतिष्ठा मिली। इसके बाद छायावाद की प्रवृत्तियों से सर्वदा भिन्न एवं एक नयी विचारधारा के साथ सामने आनेवाली कालखंड को हम प्रगतिवाद कहते हैं। छायावाद की समयसीमा 1918 से 1936 तक माना जाता हैं। तो छायावाद के अंत से प्रगतिवाद की शुरुआत होती है अतः 1936 से 1943 तक की समय को हम हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद नाम से जानते हैं। पूर्ववर्ती कवियों, रचनाकारों की भाँति कल्पना के क्षेत्र में विचरित होने से ज्यादा प्रगतिवादी कवि एवं रचनाकार यथार्थ की भूमि पर उतरना चाहते हैं। आम जनता की वेदनाओं से, उनकी बिडम्बनाओं से प्रगतिवादी साहित्य ओतप्रोत रहा। प्रगतिवादी साहित्य को मार्क्सवादी साहित्य भी कहा जाता है। शोषण मुक्त समाज की स्थापना, शोषण व्यवस्था के प्रति विद्रोह, जीवन की यथार्थ समस्याओं का चित्रण, शोषित के प्रति सहानुभूति, मार्क्सवाद का प्रभाव आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रगतिवाद, मार्क्सवाद, अभावग्रस्तता, सामाजिक विसंगति, क्रांति, मानवतावाद

Discussion / चर्चा

प्रगतिवाद

मार्क्सवादी विचारधारा से अनुप्राणित साहित्यिक रचनाओं को प्रगतिवादी साहित्य कहा जाता है। प्रगतिवाद नवीन दृष्टिकोण लेकर साहित्य में आया। यह सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति को ही रचना का उद्देश्य मानता है। शोषण का विरोध प्रगतिवाद का मूल तत्व है। प्रगतिवादी कवि उस साहित्य को व्यर्थ मानता है जो समाज का सत्य नकारकर कल्पना के महलों विचरण करता है। प्रगतिवादी रचनाकार धर्म, समाज तथा उस तथाकथित ईश्वर द्वारा निर्मित नियमों और उपनियमों को छिन्न-भिन्न कर देना चाहते हैं। उन्हें अंधविश्वासों, मिथ्या परंपराओं और रूढ़ियों पर प्रखर प्रहार करके मानव को मानव रूप में देखना अभीष्ट है। प्रगतिवादी रचनाकार एक तो अपनी मातृभूमि के लिए लिखते हैं और अपने देश के भिक्षुक, किसान, भूख से पीड़ित तथा मज़दूरों का उद्धार करना चाहते हैं। वे मानवता का उद्धार करना चाहते हैं। इसकेलिए उन्हें पीडित लोगों के प्रति प्यार, करुणा एवं सहानुभूति हैं। वे मानवतावादी हैं और शोषितों के पक्ष में हैं।

छायावाद के समान प्रगतिवाद में भी वेदना का चित्रण है। लेकिन छायावाद में वैयक्तिक वेदना ही अधिक थी। प्रगतिवाद में वैयक्तिक एवं सामाजिक वेदना का चित्रण कवि करते हैं।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

उनके लिए व्यक्ति और समाज एक है। सामाजिक विषमता को दूर करने केलिए यदि हिंसा आवश्यक हो तो प्रगतिवादी उसे बुरा नहीं मानते। समतामूलक समाज की स्थापना करना ही प्रगतिवादियों का प्रमुख लक्ष्य है।

प्रगतिवादी काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ।

(क) प्रगतिवाद में जीवन की विषमता का निवारण कर मानवता की प्रतिष्ठा है।

(ख) इसमें शोषितों का करुण गान सुन सकते हैं।

(ग) यहाँ शोषकों के प्रति घृणा और रोष प्रकट है।

(घ) प्रगतिवाद में क्रान्ति/विद्रोह की भावना दर्शनीय है।

(ङ) मानवतावाद प्रगतिवाद की सबसे बडी विशेषता है। उन्हें संसार के सब पीड़ित लोगों से प्यार एवं सहानुभूति और अत्याचार के प्रति रोष है।

(च) प्रगतिवादी काव्य में वैयक्तिक एवं सामाजिक वेदना दर्शनीय है। सामाजिक वैषम्य दूर करना इसका लक्ष्य है।

(छ) मज़दूर तथा किसान के समान शोषित नारी का चित्रण भी प्रगतिवादी काव्य में है।

(ज) सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण यहाँ मिलता है। जीवन के अनाचार, भूख की पुकार एवं पीड़ितों के हाहाकार का यथार्थ चित्रण प्रगतिवाद में है।

(झ) प्रगतिवादी काव्य भाषा में सरलता और सहजता है। उसमें किसी प्रकार का आडंबर नहीं है।

लेखक परिचय:

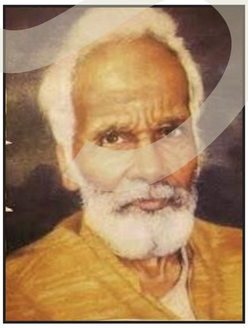

प्रगतिवादी काव्य चेतना को आगे बढानेवाले कवियों में नागार्जुन का महत्वपूर्ण स्थान है। नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र है। इनका जन्म सन् 1911 में तरौनी (दरभंगा, बीहार) में हुआ था। उन्होंने कवि, उपन्यासकार और समीक्षक के रूप में विशेष ख्याति अर्जित की। सहजता नागार्जुन के काव्य की सबसे बडी विशेषता है। इनका काव्य लोकचेतना और यथार्थानुभव से अनुप्राणित है। वे अपना स्वर खेत, खलिहान, किसान तक ले जाते हैं। सहज रागात्मक संबंधों को भी उन्होंने काव्य-वस्तु बनाया। इनकी भाषा में सच्चाई और यथार्थ अनुभूति के साथ-साथ तीखे-गहरे व्यंग्य भी हैं। 'यात्री' नाम से ये मैथिली भाषा में कविताएँ लिखते थे।

प्रकाशित कृतियाँ:

काव्य संकलन: युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ, तुमने कहा था, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, हज़ार-हज़ार बाँहोंवाली, पुरानी जूतियों का कोरस, रत्नगर्भ, ऐसे भी हम क्या-ऐसी भी तुम क्या, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, इस गुब्बारे की छाया में, भूल जाओ पुराने सपने, अपने खेत में।

प्रबंध काव्य: भस्मांकुर, भूमिजा

उपन्यास: रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौधे, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुःखमोचन, कुंभीपाक, अभिनंदन, उग्रतारा, इमरतिया, गरीबदास

कहानी संग्रह: आसमान में चन्द तारे

मैथिली रचनाएँ: चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ, पका है यह कटहल

प्रगतिवाद के अन्य प्रमुख कवि:

शमशेर बहादुर सिंह, मुक्तिबोध, शील, शिवमंगल सिंह सुमन, अंचल, त्रिलोचन, नरेन्द्र शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, रांगेय राघव, रामदयाल पांडेय

मुख्य बिन्दु

'प्रेत का बयान' नामक कविता नागार्जुन द्वारा लिखी गयी है। प्रस्तुत कविता में कवि स्वाधीन भारत की जनता की विपन्नता एवं अभावग्रस्तता का चित्र पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। प्राइमरी स्तर के शिक्षक को केन्द्र बनाकर लिखी गयी यह कविता अनेक सामाजिक विसंगतियों को प्रस्तुत करती है। इसमें स्पष्ट रूप से संकेत किया गया है कि मनुष्य अनिवार्य सुविधाओं के अभाव में नरक समान जीवन बिता रहे हैं। भूख एवं अकाल जैसी भयावह विसंगतियों से जीवन अस्त-व्यस्त

हो रहा है। अतः यह कह सकते हैं कि नागार्जुन का यह काव्य एक चेतन कलाकार का काव्य है।

कविता परिचय

"ओ रे प्रेत
कड़कर बोले नरक के मालिक यमराज
सच-सच बतला !
कैसे मरा तू ?
भूख से, अकाल से ?
बुखार, कालाजार ?
पेचिश, बदहजमी, प्लेग, महामारी से ?
कैसे मरा तू, सच-सच बतला!"
खड़-खड़ खड़-खड़, हड़-हड़-हड़-हड़
काँपा कुछ हाड़ों का मानवीय ढाँचा
नचाकर लम्बी चमचों-सा पँचअँगुरा हाथ
रूखी-पतली किट-किट आवाज़ में
प्रेत ने जवाब दिया:

शब्दार्थः

अकाल	=	Famine
कालाजार	=	विशेष प्रकार का ज्वर
पेचिश	=	dysentery
बदहजमी	=	भोजन न पचना
पँचअँगुरा	=	पाँच उँगलियों वाला हाथ

व्याख्याः

मृत्यु के बाद परलोक में आए प्रेत से नरक के मालिक यमराज यह जानने की कोशिश करते हैं कि उसकी मृत्यु किस कारण से हुई? भूख, अकाल, बुखार, कालाजार आदि कई विपत्तियों का नाम भी वे लेते हैं। आगे यमराज पूछते हैं कि तेरे मरने का कारण पेचिश, भोजन न पचना, प्लेग या कोई महामारी है? इनमें से किस कारण से तू मरा, यह बात सच-सच बता। यमराज का प्रश्न सुनकर मनुष्य का वह हड्डियों का ढाँचा खड़-खड़ और हड़-हड़ शब्द करता हुआ काँप उठा। उस प्रेत का पाँच उँगलियों वाला हाथ लंबी चम्मच के समान था। प्रेत ने रूखी, पतली तथा किट-किट आवाज़ में यमराज को उत्तर दिया।

"महाराज!
सच-सच कहूँगा
झूठ नहीं बोलूँगा
अब हम गुलाम नहीं
नागरिक हैं हम स्वाधीन भारत के
पूर्णिया जिला है सूबा बिहार के सिवान पर
थाना धमदाहा
बस्ती रूपउली
जात का कायथ
उमर कुछ अधि पचपन साल की"

शब्दार्थः

गुलाम	=	परतंत्र
सूबा	=	प्रान्त
थाना	=	वासस्थान
सिवान	=	सीमा

व्याख्याः

प्रेत अपना बयान शुरू करता है। हे महाराज! मैं सब बात सच-सच कहूँगा, झूठ नहीं बोलूँगा। अब हम भारतवासी स्वतंत्र भारत के नागरिक हैं, परतंत्र नहीं हैं। बीहार की सीमा पर पूर्णिया नामक एक जिला है। वहाँ धमदाहा नाम का थाना है। उस थाने के अंतर्गत रूपउली नाम की बस्ती है। मैं वहीं का रहनेवाला हूँ। मैं कायस्थ जाति का हूँ। मेरा उम्र पचपन साल से अधिक है।

"पेशा से प्राईमरी स्कूल का मास्टर था
तनखा थी तीस रुपैया, सो भी नहीं मिली
मुश्किल से काटे हैं
एक नहीं, दो नहीं, नौ-नौ महीने
घरनी थी, माँ थी, बच्चे थे चार
आ चुके हैं वे भी दयासागर, करुणा के अवतार!
आप ही की छाया में
मैं ही बाकी
क्योंकि करमों की पत्तियाँ अभी कुछ शेष थी
हमारे अपने पुस्तैनी पोखर में
मनोबल शेष था सूखे शरीर में...."

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

शब्दार्थः

तनखा	=	वेतन
घरनी	=	घरवाली, पत्नी
पुस्तैनी पोखर	=	वंश परंपरा से प्राप्त छोटा-सा तालाब

व्याख्याः

आगे प्रेत यमराज से अपना परिचय दे रहा है। मैं प्राइमरी स्कूल का मास्टर था। मासिक वेतन तीस रुपया था। वह भी नहीं मिलता था। वेतन के बिना नौ महीने बिताये। घर में पत्नी, माता और चार बच्चे थे। हे दयासागर! करुणा के अवतार! वे सब आपके शरण में आ चुके हैं।' अर्थात वे मर चुके हैं। केवल मैं ही शेष बचा था। इसका कारण यह था कि हमारे वंश परंपरा से प्राप्त छोटे तालाब में करमा बेल की पत्तियाँ थीं। उसे खाकर और मेरे सूखे शरीर में मनोबल भी बाकी होने के कारण मरा नहीं।

"अरे वाह..."
भभाकर हँस पड़ा नरक का राजा
दमक उठी झालरें कम्पमान सिर के मुकुट की
फर्श पर ठेककर सुनहला लौह-दण्ड
अविश्वास की हँसी हँसा दण्डपाणि महाकाल
"बडे अच्छे मास्टर हो!
आये हो मुझको भी पढ़ाने!!
मैं भी बच्चा हूँ....
वाह भाई, वाह!
तो तुम भूख से नहीं मरे?"

शब्दार्थः

भभाकर	=	बहुत ज़ोर से
सुनहला	=	सोने के समान रंग का
दंडपाणि	=	हाथ में दण्ड लिए हुए
महाकाल	=	यमराज

व्याख्याः

प्रेत का उत्तर सुनकर यमराज बहुत ज़ोर से हँसे। यमराज के ज़ोर की हँसी के कारण कंपित सिर के मुकुट की झालरें चमकने लगीं। हाथ में दण्ड वाले यमराज ने अपना सुनहला दण्ड फर्श पर ठेका और अविश्वस की हँसी हँसा। इसके बाद यमराज ने प्रेत से कहा 'तुम बहुत अच्छे अध्यापक हो। तुम मुझे भी पढ़ाने आए हो, क्या मैं भी बच्चा हूँ?' तात्पर्य यह है कि यमराज ने प्रेत की बात का विशास नहीं किया। इसके बाद यमराज ने कहा- 'अरे भाई! तुम्हारी प्रशंसा करनी पड़ेगी। तुम्हारी राय में तुम भूख से नहीं मरे हो।'

हद से ज्यादा डालकर ज़ोर
होकर कठोर
प्रेत फिर बोल बोला-
'अचरज की बात है
यकीन नहीं करते आप क्यों मेरा
कीजिए न कीजिए आप चाहे विश्वास
साक्षी है धरती, साक्षी है आकाश
और और और और और भले
नाना प्रकार की व्याधियाँ हों भारत में
उठाकर दोनों बाँह
किट-किट करने लगा प्रेत-किन्तु
भूख या क्षुधा नाम हो जिसका
ऐसी किसी व्याधि का पता नहीं हमको
सावधान महाराज
नाम नहीं लीजिएगा
हमारे समक्ष फिर कभी भूख का!'

शब्दार्थः

अचरज	=	आश्चर्य
यकीन	=	विश्वस
साक्षी	=	गवाह
क्षुधा	=	भूख

व्याख्याः

अपनी बात पर अधिक ज़ोर डालकर और कठोर होकर प्रेत फिर बोला – "यह आश्चर्य की बात है कि आप मेरा विश्वस क्यों न कर रहे हैं? आप मेरा विश्वास करें या न करें, यह सत्य है। धरती और आकाश साक्षी हैं। हमारे भारत में कई प्रकार की बीमारियाँ हो रही हैं। इसके बाद प्रेत ने दोनों हाथ उठाकर तथा 'किट-किट' शब्द करते हुए कहा- "जिस बीमारी का नाम भूख या क्षुधा है उसका हमें पता नहीं है। अर्थात मैं भूख नाम की बीमारी को नहीं जानता। हे महाराज यमराज! ध्यान रखिएगा। आप मेरे सामने कभी भूख का नाम मत लीजिएगा।

निकल गया भाव आवेश का

तदनन्तर शान्त-स्तिमित स्वर में प्रेत बोला-
'जहाँ तक मेरा अपना संबन्ध है
सुनिए महाराज,
तनिक भी पीर नहीं
दुःख नहीं, दुविधा नहीं
सरलतापूर्वक निकले थे प्राण
सह न सकी आँत जब पेचिश का हमला।'
सुनकर दहाड़
स्वाधीन भारत के
भूखमरे, स्वाभिमानी, सुशिक्षक प्रेत की
रह गये निरुत्तर
महामहिम नरकेश्वर

शब्दार्थः

शान्त-स्तिमित	=	धीमे और सधे हुए
पीर	=	पीड़ा
दुविधा	=	dilemma
आँत	=	intestine
पेचिश	=	dysentery
हमला	=	आक्रमण
दहाड़	=	ज़ोरदार आवाज़

व्याख्याः

इतना कहते-कहते प्रेत का भावावेश समाप्त हो गया और उन्होंने शांत और स्तिमित स्वर में कहा- "जहाँ तक मेरे मरने का संबन्ध है उसके बारे में सुनिए। हे महाराज! मुझे मरने में तनिक भी पीड़ा नहीं हुई। कोई दुःख या संदेह नहीं हुआ। मेरे प्राण अपने शरीर से सरलतापूर्वक निकले थे। मेरे मरने का कारण यह है कि मेरी आँतें पेचिश का आक्रमण सह नहीं सकी थीं। अर्थात मेरी मृत्यु भूख से नहीं। स्वाधीन भारत के भूख से मरनेवाले स्वाभिमानी और सुशिक्षक प्रेत की दहाड़ सुनकर महामहिम नरकेश्वर यमराज निरुत्तर रह गये।

'प्रेत का बयान' - आस्वादन टिप्पणी

नागार्जुन द्वारा रचित 'प्रेत का बयान' युगधारा कविता संग्रह से ली गयी है। प्रगतिवादी काव्य चेतना को आगे बढ़ानेवाले कवियों में नागार्जुन का महत्वपूर्ण स्थान है। वे और उनकी कविता, जनता और उसके दुःख दर्द के पक्षधर थे। उन्होंने अपने सामान्य अनुभवों पर आधारित कविताएँ ही लिखी है। अपने विचारों को व्यक्त करने केलिए उन्होंने तीखे व्यंग्य को ही माध्यम बनाया है। यानी व्यंग्य के तीखेपन को ही उन्होंने अपने रचनाओं में मुखरित किया है। यह नागार्जुन की एक सशक्त कविता है जो आम आदमी का यथार्थ चित्र हमारे सामने रखती है।

प्रेत का बयान कविता में एक स्कूल मास्टर के जीवन पर कवि प्रकाश डालते हैं, जिन्होंने बहुत मुश्किल से, गरीबी झेलकर, अपना जीवन बिताया था। यह स्कूल मास्टर भूख से मरने के बाद नरक के यमराज के पास पहुँच गया। उसी समय यमराज उससे उसके मौत का कारण पूछता है। इस कविता में यमराज और स्कूल मास्टर के बीच हुए संवाद का चित्रण है। इसे व्यंग्य के माध्यम से कवि प्रस्तुत करते हैं। इस कविता के द्वारा स्वाधीन भारत के जनता का दयनीय स्थिति का स्पष्ट चित्र, कवि हमारे सामने प्रस्तुत करते है। यानी कवि स्वाधीन भारत के जनता की विपन्नता तथा अभावग्रस्तता का चित्रण करते हैं। कारण यहीं है कि स्वाधीन भारत की निम्न तथा मध्यवर्ग की जनता की स्थिति शोचनीय एवं दयनीय थी। वे भूख से मर रहे थे। वे मुश्किल से ही जीवन बिताते थे। स्वतंत्रता के बाद सत्ताधारियों ने आम जनता को विकास की खोखले आश्वासन ही दिए थे। इसके फलस्वरूप समाज में मोहभंग, निराशा, गरीबी आदि बढ़ने लगे। भूख, अकाल, दरिद्रता, बेकारी की समस्या आदि कठिनाइयों को झेलकर वे जीवन बिताते थे।

ऐसी स्थितियों को कवि 'प्रेत का बयान' कविता में व्यंग्य के दवारा व्यक्त करते हैं। स्वाधीन भारत की स्थिति पर तीखा व्यंग्य करनेवाली कविता है 'प्रेत का बयान'। कवि ने इस कविता का प्रणयन व्यंग्यात्मक एवं हास्यात्मक ढंग से किया है।

जब प्रेत नरक के मालिक यमराज के पास पहुँचता है तो यमराज प्रेत को 'ओ रे प्रेत' संबोधित करते हुए पूछता है- सच सच बताओ तुम्हारी मौत कैसे हुई? साथ-साथ यमराज प्रेत के सामने कई विकल्प भी रखते हैं और पूछता है कि इनमें से किस कारण से तुम्हारी मौत हुई है? भूख से, अकाल से या फिर बुखार या कालाजार से, पेचिश से, बदहजमी से, प्लेग से या फिर महामारी से? किसप्रकार तुम्हारी मृत्यु हुई है? सच सच बता दें।

जब नरक का मालिक यमराज कड़ककर पूछता है तो हड्डियों से बना एक मानवीय ढाँचा खड़ खड़ हड़ हड़ काँपने लगता है। अपने लंबे चम्मचों का सा पाँचों ऊँगलियों वाला हाथ को

नचाते हुए, अपनी रूखी और पतली आवाज़ में प्रेत ने जवाब दिया कि, 'महाराज, मैं सच सच कहूँगा और झूठ नहीं बोलूँगा। हम अब गुलाम नही है। स्वाधीन भारत के नागरिक हैं।' ऐसे कहते हुए प्रेत यमराज को अपना परिचय देने लगता है। वह अपने स्थान, जाती, उम्र, पेशा, तनख्वाह और घरवालों के बारे में भी यमराज से कहता है। उसका स्थान बिहार के सीमा पर स्थित पूर्णिमा जिला है। उसका प्रदेश का थाना धमदाहा है और बस्ती रूपउली वह ब्रहमण जाती का है और उम्र के बारे में कहते हुए वह कहता है कि उम्र कुछ ज़्यादा है, पचपन।

पेशे से वह प्राइमरी स्कूल का मास्टर था और उसकी तनख्वाह मात्र तीस रूपए था, जो उसे समय पर नहीं मिला। वह आगे कहता है कि उसने अपनी जीवन बहुत मुश्किल से काटा है। तनख्वाह के बगैर एक नहीं, दो नहीं पूरे नौ-नौ महिना उसने बमुश्किल से काटा है। वह अकेला भी नहीं था उसकी पत्नी, माँ और चार बच्चे भी थे।

और आगे वह कहता है कि वे भी, हे दया सागर, करुणा के अवतार, आपकी छाया में आ चुके हैं। मैं ही बाकी था क्योंकि मेरा कुछ कर्म बाकी थे, कर्म की पत्तियाँ खत्म नहीं हुए थे और मनोबल भी शेष था सूखे शरीर में।

इन पंक्तियों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि इनका जीवन कितनी गरीबी में बीता है। स्वाधीन भारत के नागरिक होने पर गर्व का अनुभव करते हुए भी उनका जीवन पीड़ाग्रस्त एवं शोचनीय था।

प्रेत की इस विवरण सुनने पर यमराज कहता है- 'अरे वाह'। यह कहते हुए वह भभाकर हँस पड़ता है। जैसे ही वे हँसे उनके सिर के मुकुट की झालरें दमक उठी और साथ-साथ वह दंडपाणि (हाथों में दंड धारण करनेवाला) अपने सुनहला (स्वर्ण वर्ण का) लोह दंड को फर्श पर ठोककर अविश्वास की हँसी हँसा। उनको प्रेत की बात पर भरोसा नहीं हुआ।

वह कहने लगे- तुम तो बड़े अच्छे मास्टर हो। मुझे भी पढ़ाने केलिए आए हो। मैं भी बच्चा हूं क्या? वाह भई वाह! तो तुम्हारा मृत्यु भूख के कारण नहीं हुई? इसप्रकार व्यंग्य के रूप में यमराज उससे पूछता है।

प्रेत द्वारा कही गई बातों से स्पष्ट है कि उसकी मौत भूख से ही हुआ है। फिर भी प्रेत इस बात का बयान नहीं करता है, क्योंकि वह स्वाभिमानी है। क्योंकि स्वतंत्र भारत के नागरिक को भूख से मरना लज्जा की बात है। इसलिए ही यमराज उनपर व्यंग्यबाण चलाता है।

यमराज का ऐसे पूछने पर प्रेत हद से ज़्यादा ज़ोर डालकर, और थोड़ा कठोर होकर उत्तर देता है कि आश्चर्य की बात है, कि आप क्यों मेरा विश्वास नहीं कर रहे हैं। विश्वास करें या न करें ये आकाश और धरती गवाह है इस बात का। और और और भले ही भारत में नाना प्रकार की व्याधियाँ हो किन्तु, इतना कहकर प्रेत तनिक रुककर अपने दोनों बाँह उठाकर किट किट करते हुए आगे कहा कि, भूख या क्षुधा नाम का किसी भी व्याधि का पता नहीं है हमको। और आप आगे से सावधान रहिए। अब मेरे सामने भूख का नाम मत लीजिए।

इतना कहने के बाद प्रेत का वह आवेग निकल जाता है और शांत स्मित के साथ बोलने लगा कि, जहाँ तक मेरा अपना संबंध है मुझे तनिक भी पीड़ा नहीं हुई, न ही कोई दुःख या दुविधा। सरलतापूर्वक ही मेरे प्राण निकल गए थे। बस पेट की खराबी सह न सकता था, अंत में। बस यही एक परेशानी रह गयी थी। बाकि सबकुछ तो बहुत ही सकुशल था। स्वाधीन भारत के स्वाभिमानी, सुशिक्षित भुखमरे प्राइमरी स्कूल मास्टर के दहाड़ सुनकर, उस प्रेत की दहाड़ सुनकर महामहित नरकेश्वर निरुत्तर हो गए।

यहाँ प्रेत का स्वाभिमान झलकता है। 'हद से ज़्यादा जोर लगाना' इस बात का प्रमाण देता है कि प्रेत अपनी बात को साबित करने की कोशिश करता है। और हद से ज़्यादा जोर लगाने से उसकी अभिव्यक्ति में कुछ अस्वाभाविकता छा जाता है, जिससे पता चल जाता है कि वह झूठ बोल रहा है। और आगे की पंक्तियों में 'साक्षी है धरती, साक्षी है आकाश और और और और' पढ़कर ऐसा लगता है मानो प्रेत अपने बात को साबित करने केलिए कोई गवाह को पेश करना चाहता है और उससे नहीं हो पा रहा तो सीधा 'भूख' को न पहचानने की ढोंग करता है।

इस कविता के द्वारा स्वाधीन भारत की लोगों की शोचनीय एवं दयनीय स्थिति को कवि व्यक्त करता है। वह स्वाभिमानी जरूर है, लेकिन वह भूखा है, तंगग्रस्त है। फिर भी यह मानने को बिलकुल तैयार नहीं। क्योंकि यह बात स्वीकारने से उसकी स्वाभिमान को क्षति पहुँचेगा। और नरकेश्वर सब जानते हुए भी प्रेत के सामने निरुत्तर रह जाता है।

मास्टरजी यह सिद्ध करना चाहता था कि वह भूख से नहीं मरा। स्वादीन भारत में भूख से मरना शासन केलिए अपमान

है। देशभक्त प्रेत ऐसा कहना न चाहता है। उसका सारा परिवार भूख से मरा था और उसकी मृत्यु भी भूख से हुई थी, पर वह इसे स्वीकार नहीं करता है। सचमुच कवि भारत की भूखभरी और प्रशासनिक पराजय की ओर अपनी व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया प्रस्तुत कर रहा है। यह एक सशक्त राजनैतिक व्यंग्य की कविता है। स्वतंत्र भारत के भुखमरे स्वाभिमानी सुशिक्षक प्रेत का बयान सुनकर यमराज ही नहीं हम भी स्तब्ध एवं निरुत्तर रह जाते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

आम जनता के जीवन एवं जीवन परिस्थितियों से सटकर रहनेवाली आधुनिक युग की कविता है प्रगतिवादी कविता। स्वातंत्र्योत्तर भारत में साधारण व्यक्ति का जीवन दुश्वार होता गया। समाज के निचले स्तर का इंसान केवल स्वातंत्र्य प्राप्ति के महत्व का गुणगान ही कर सकते थे ना कि उसका लाभ उठा सकते थे। इस विषय पर लिखी गई प्रगतिवादी कवि नागार्जुन की सशक्त व्यंग्य कविता है 'प्रेत का बयान'। इस कविता में गरीबी एवं भूख के कारण मरकर यमराज के पास आनेवाले भारतीय नागरिक की झूठी स्वाभिमान को दर्शाया है। यमराज के बार-बार पूछने पर भी भुखमरे प्रेत अपने देश के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोलता। उसकी बातों से स्पष्ट है कि उसकी मृत्यु भूख से ही हुई। लेकिन वह इस सच्चाई को स्वीकारना नहीं चाहता। और अंत में वह महामाहित नरकेश्वर को भी निरुत्तर बना देता हैं। स्वातंत्रयोत्तर भारत की नागारिकों की यही स्थिति हैं। और वे झूठी दिखावे एवं स्वाभिमान के पीछे हैं। और कवि इस झूठे परदे का चीरभाड़ करते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रगतिवाद के प्रमुख कवि है नागार्जुन।
- नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र है।
- सहजता नागार्जुन की कविता की सबसे बडी विशेषता है।
- इनकी कविता में यथार्थ अनुभूति के साथ तीखे-गहरे व्यंग्य भी हैं।
- जनवादी कवि नागार्जुन की व्यंग्यात्मक कविता है 'प्रेत का बयान'।
- प्राईमरी स्कूल के मास्टर को केन्द्र बनाकर लिखी गयी कविता है 'प्रेत का बयान'।
- कविता में भूख, अकाल जैसी अनेक सामाजिक विसंगतियों को प्रस्तुत किया है।
- भूख से मरने पर भी स्वाभिमानी प्रेत भूख का नाम न कहता है क्योंकि वह शासन का अपमान न चाहता है।
- प्रेत की राय में मृत्यु का कारण है- आँतें पेचिश का आक्रमण सह नहीं सकी थीं।
- भुखमरे स्वाभिमानी सुशिक्षक प्रेत के उत्तर यमराज एवं संपूर्ण भारत को स्तब्ध करते हैं।

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. नागार्जुन की किन्हीं दो उपन्यासों का नाम बताईए?
2. नागार्जुन किस काल के कवि है?
3. प्रेत का बयान कविता के रचनाकार कौन है?
4. कवि ने प्रेत की उँगलियों की तुलना किससे की है?
5. प्रेत कहाँ के निवासी हैं?
6. प्रेत का उम्र कितना है?
7. प्रेत कहाँ काम करनेवाला था?
8. अपनी बात सिद्ध करने के लिए प्रेत किन-किनको साक्षी कहते हैं?
9. प्रेत को किस बीमारी की जानकारी नहीं है?
10. 'भूख' का समानार्थवाला शब्द क्या है?
11. प्रेत अपनी मृत्यु का कारण क्या कहता है?

Answers उत्तर

1. बलचनमा, वरुण के बेटे
2. प्रगतिवाद
3. नागार्जुन
4. लंबे चम्मच
5. स्वाधीन भारत के निवासी
6. पचपन से कुछ अधिक
7. प्राइमेरी स्कूल में
8. धरती और आकाश
9. भूख
10. क्षुधा
11. पेचिश

Assignments प्रदत्त कार्य

1. 'प्रेत का बयान' कविता द्वारा किन-किन सामाजिक विसंगतियों पर कवि प्रकाश डालते हैं?
2. यमराज ने जब प्रेत की बात पर विश्वास नहीं किया तो उसने यमराज से क्या कहा?
3. कविता के आधार पर यमराज के प्रश्न तथा प्रेत के उत्तर का वर्णन कीजिए?
4. यमराज और प्रेत के बीच में हुए संवाद के आधार पर वार्तालाप तैयार कीजिए।
5. प्रगतिवाद की प्रवृत्तियों पर टिप्पणी लिखिए।
6. प्रेत का बयान कविता का आस्वादन टिप्पणी तैयार कीजिए।
7. नागार्जुन जी की व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए।
8. प्रगतिवाद पर टिप्पणी लिखिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रतिनिधि कविताएँ : नागार्जुन।
2. प्रगतिवाद एक समीक्षा : धर्मवीरभारती।
3. प्रगतिवाद : शिवदान सिंह चौहान।

BLOCK 04

समकालीन कविता

SGOU

इकाई 1

वक्त

अरुण कमल

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- समकालीन कविता के बारे में जानकारी प्राप्त होता है
- समकालीन कविता की प्रवृत्तियों के बारे में पता चलता है
- समकालीन कवि अरुण कमल से परिचय प्राप्त करता है
- कविता द्वारा वर्तमान परिस्थितियों का बोध होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी कविता की विकास परम्परा बहुत पुरानी है। आदिकाल से रीति काल तक की अवधि लम्बी है, परिवर्तन कम। लेकिन आधुनिक काल के छोटे अरसे में हिन्दी कविता ने अनेक मोड़ लिए अनेक वादों, प्रवृत्तियों से गुज़री। भारतेन्दु युग की बालवत्ता से निकलकर, द्विवेदी युग की मर्यादा को समेटकर, छायावाद की रंगीन कल्पनाएँ और हार्दिक अनुभूतियों से छनकर, प्रगतिवाद की क्रान्ति स्वीकार कर आधुनिक हिन्दी कविता प्रयोगवाद तक चली आयी। उसके बाद युगीन परिस्थितियों का सच्चा प्रतिबिंब समकालीन कविताओं में देखने को मिलता है। वर्तमान समाज का खुला चित्रण, अनदिखे पहलुओं का प्रस्तुतीकरण समकालीन कविताओं की पहचान है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

समकालीनता, आर्थिक असंतुलन, समसामयिक युग, अंतरद्वंद

Discussion / चर्चा

'समकालीन कविता', अपने परिवेश के प्रति, अपने समय की चिन्ता के प्रति, विशेष संबन्ध रखती हैं। इसी कारण से उसे 'समकालीन कविता' कहा जाता है। वैसे हिन्दी साहित्य में आठवें दशक की कविता को समकालीन कविता कहा गया है। 'समकालीनता' एक व्यापक और बहुआयामी शब्द है और आधुनिकता का आधार तत्व है। जो समकालीन है, वह आधुनिक भी हो, यह आवश्यक नहीं, किन्तु आधुनिक चेतना से मिश्रित दृष्टि से, वह निश्चित रूप से समकालीन भी हो सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कि समकालीन कविता ने बदलते हुए जीवन मूल्यों को मानवीय स्तर पर ही प्रतिष्ठित किया है। अर्थात समकालीन कविता का सामाजिक बोध अपने समय की मांगों के अनुरूप उभरा है और उसने समय को अपने दायित्वों के प्रति जागरूक बनाया है। समकालीन कविता युगीन यथार्थ और वास्तविकता को अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

समकालीन कविता, आधुनिक कविता के विकास में नयी चेतना, नयी भावभूमि, नयी संवेदना तथा नये शिल्प के बदलाव की सूचक काव्यधारा है। समकालीनता बोध, युग बोध की पहचान का महत्वपूर्ण आधार है।

समकालीन कविता सामाजिक चेतना के साथ-साथ शोषण, गरीबी तथा सामाजिक, आर्थिक असंतुलन पर प्रहार की कविता है। यह आम आदमी के जीवन के संघर्षों, विसंगतियों, विषमताओं एवं विद्रूपता की खुली पहचान है। वास्तव में यह व्यक्ति की पीडा की कविता है। समाज में व्याप्त तमाम मुद्दों एवं उसके कुप्रभाव से समकालीन कविता हमें अवगत कराती हैं।

समकालीन कविताः स्वरूप एवं विश्लेषण

समकालीन कविता युगीन यथार्थ एवं वास्तविकता को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। यह काव्यान्दोलन, अपनी ऐतिहासिकता में समसामयिक युग के अन्तर्विरोधों, अन्तर्द्वन्द्वों, विसंगतियों, विषमताओं एवं विडम्बनाओं का खुला हस्ताक्षर है। समकालीन कवियों में सृजनशीलता के प्रति खतरे को उठा पाने का अपूर्व साहस है।

मोहभंग का शिकार आम आदमी के अन्दर की पीडा, तनाव, विवशता, अबोधता, सहिष्णुता, अकेलापन, खीझ और गुस्से को उसके कटु अनुभवों की समग्रता में सृजनात्मक स्पर्श प्रस्तुत करने में समकालीन कविता का काव्य कर्म छिपा हुआ है। समकालीन कविता में वर्तमान को अतीत की अपेक्षा कुछ अधिक आग्रहपूर्ण स्वीकृति प्राप्त है। इस काव्य धारा का लक्ष्य आम आदमी और समाज की वास्तविकता को प्रस्तुत करना है।

समकालीन कवि यथार्थ सृष्टा है। वह आदर्श का विरोधी है, साथ ही वे परंपरा का विरोधी भी है। समकालीन कविता का सौन्दर्यबोध छोटे परिवेशों के छोटे आदमी की मानवीय संवेदना को स्वीकार करता है। सौन्दर्यबोध आज के लघु मानव की लघुता को स्वीकार कर उसके संदर्भ में नये मूल्यों को विकसित होने की प्रेरणा देता है। प्रकृति के प्रति भी इन कवियों ने स्वस्थ दृष्टि अपनाई है।

समकालीन कविता के प्रमुख कवि

मुक्तिबोध, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुरसिंह, घूमिल, निर्मल वर्मा, आनन्द प्रकाश, अरुण कमल आदि समकालीन कविता के प्रमुख कवि हैं।

समकालीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएँ:-

1. समकालीन आर्थिक एवं सामाजिक चेतना का उद्घाटन।
2. राजनीतिक चेतना का उद्घाटन
3. वास्तविक स्वतन्त्रता की समस्या।
4. विचार आन्दोलन का उद्घाटन।
5. सांस्कृतिक विभिन्नता।

अरुण कमल का जीवन परिचय

अरुण कमल

अरुण कमल आधुनिक हिन्दी साहित्य में समकालीन दौर के प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख कवि है। समकालीन कविता के सुपरिचित कवि अरुण कमल का जन्म 15 फ़रवरी 1954 को बिहार के रोहतास जिल्ले के नासरीगंज में हुआ। आरंभिक शिक्षा-दीक्षा के बाद वे आगे की शिक्षा केलिए पटना गए। पटना के साहित्यिक-राजनीतिक वातावरण ने उनके व्यक्तित्व-कृतित्व के विकास में अहम भूमिका निभाई। इसी दौर में वह समकालीन कवियों और साहित्यिक-वैचारिक गतिविधियों के खुले संपर्क में आए।

उनका पहला कविता-संग्रह 'अपनी केवल धार' 1980 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की 'अपनी केवल धार' शीर्षक कविता की लोकप्रियता आज भी बनी हुई है और उनके परिचय का महत्वपूर्ण अंग है। उनकी कविताओं के नए बिंब, बोलचाल की भाषा, खडी बोली के लय-छंदों के समावेश ने उन्हें एक अलग पहचान प्रदान की है। कविता के अतिरिक्त अरुण कमल ने समय-समय पर आलोचनात्मक निबंध भी लिखे हैं, वक्तव्य दिये हैं एवं विभिन्न विषयों पर टिप्पणियाँ की हैं। वस्तुतः वे मुख्य रूप से कवि ही हैं एवं आलोचना उनके लेखन का अनिवार्य अंग नहीं है। मौलिक लेखन के अतिरिक्त अरुण कमल ने अनुवाद कार्य भी किया है।

'अपनी केवल धार' (1980) 'सबूत' (1989), 'नये इलाके में' (1996), 'पुतली में संसार' (2004), 'मैं वो शंख महाशंख' (2013) और 'योगफल' (2019) उनके कविता संग्रह है। 'कविता और समय' तथा 'गोलमेज़' उनकी आलोचना कृति है। इसके अतिरिक्त, साक्षात्कार की एक पुस्तक 'कथोपकथन', अंग्रेज़ी में समकालीन भारतीय कविताओं का अनुवाद 'वायसेज़' और वियतनामी कवि 'तो हू' की कविताओं तथा टिप्पणियों पर एक अनुवाद-पुस्तिका प्रकाशित है। उनकी कविताएँ अनेक देशी-विदेशी भाषाओं में अनूदित हुए। 'नये इलाके में' कविता संग्रह केलिए वे 1998 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हुए।

कविता परिचयः

ऐसा ही वक़्त आ गया है
जब माँ को बच्चे को दूध भी पिलाना
गुनाह है
वे हाथ में जाब लिए घूम रहे हैं चारों ओर
जहाँ कोई गाय रम्भाई
जहाँ किसी बछड़े ने दूब पर मुँह दिया

कि दौड़े हुए आए और धर लिया

बोलना गुनाह
खाँसना गुनाह
आंगन में औरतों का हँसना गुनाह

छुरा भाँजते गुंडे छुट्टा घूम रहे हैं
और अपने ही घर की चौखट पर
बैठा आदमी
मारा जा रहा है

सड़क पार करते
अचानक किसी बात पर हँसते
कहीं कभी कोई भी कत्ल हो जा सकता है

ऐसा ही वक़्त आ गया है

ऐसा ही वक़्त आ गया है
जब गुंडे बेला के फूलों की माला पहन
जै-जैकार करा रहे हैं
जब ज़हर-माहुर फल-फूल रहे हैं
और फूलों की क्यारियों में जल नहीं...

शब्दार्थः

वक़्त	=	समय
बछड़ा	=	गाय का बच्चा
गुनाह	=	पाप
खाँसना	=	to cough
कत्ल	=	Murder
ज़हर	=	विष

वक़्त कविता का सारांश

अरुण कमल हिन्दी साहित्य के जाने माने लेखकों में से एक हैं। अरुण कमल हिन्दी कविता में तब दाखिल होते है, जब देश में आज़ादी से मोहभंग की निराशा, संशय और आशंका का कोहरा घना हो रहा था। वर्तमान समाज की इस अवस्था को वे अपने कविता का विषय बनाते हैं। अपने वक्त के बारे में कवि यह कहना चाहते है कि आज ऐसा वक्त (समय) आ गया है कि माँ अपने बच्चे को दूध भी पिला नहीं सकती। अपने बच्चे को दूध पिलाना माँ का हक है, कर्तव्य है। लेकिन आज ऐसा समय आ गया है कि माँ का अपने बच्चे को दूध पिलाना गुनाह समझ जाता हैं। गुंडे लोग हाथ में छुरा (चाकू) लेकर धक्का देने केलिए चारों ओर घूम रहे हैं। जहाँ किसी गाय का रंभाना सुनकर जहाँ कोई बछडे को गाय पर मूँह दिखाते देखकर लोग दौड़ते हुए आकर उसे घर ले जाते हैं क्योंकि समय के बदलती परिस्थितियों की वजह से ये सब गुनाह (अपराध) है। बछडे को गाय के पास रहने का अधिकार भी आज नष्ट हो गया है। ये सब उन लोगों के वश (नियंत्रण) में हैं।

ऐसा समय आ गया है कि आजकल बोलना तथा खाँसना भी गुनाह समझा जाता है। आजकल मन खोलकर कुछ बोलना, हँसना, खाँसना आदि नैसर्गिक अवकाश भी नष्ट हो गये, क्योंकि आज ज़माना पूर्ण रूप से बदल गयी है।

जब स्त्रियाँ अपने आँगन में बैठकर बातें करते हैं तथा हँसते हैं तो वह भी गुनाह है। गुंडे लोग छुरा (चाकू) लेकर चारों ओर स्वतन्त्र रूप से घूमते-फिरते हैं। अपने ही घर के चौखट (देहलीज़) में बैठे आदमी इन लोगों के हाथों से मारे जा रहे हैं। ये लोग जो पाप या कत्ल करते है, उसमें कोई गुनाह नहीं है।

जब सड़क पार करते समय अचानक किसी बात पर हँसते है तो कहीं भी किसी का कत्ल हो सकता है। यह कैसा वक्त आ गया है? कवि की राय में अब ऐसा ही वक्त आ गया है कि गुंडे लोग बेला (चमेली जैसा फूल) के फूलों की माला पहनकर जय-जय कहकर अपना विजय मना रहे हैं। अर्थात आज ऐसा समय आ गया है कि पाप कर्म के विजय की माला पहनाते हैं। आधुनिक जीवन का हर वक्त गुंड़ों की बेईमानी का है। वैयक्तिक अवकाशों की हत्या हर वक्त होती है, शासन की व्यवस्था गुंड़ों के हाथ में है।

फलतः समाज में अराजकत्व फैला जाता है, जीना मुश्किल हो जाता है।।

अब ऐसा ज़माना आ गया है कि सब कहीं ज़हर का फल और फूल, हमें देखने को मिलता है। आज जीवन के बदलते परिस्थितियों के कारण सब कहीं ज़हरीला फूल दिखाई देता है। अब ऐसा समय आ गया है कि असली फूलों की जो क्यारियाँ है, वहाँ जल ही नहीं है। अर्थात जहाँ ज़हरीला फूल अच्छी तरह फूलने लगते है तो असली फूल, पानी के बिना मुरझाते हैं। व्यक्ति स्वातंत्र्य पर हर वक्त हमला होता है।

इस कविता के द्वारा कवि ने अत्यन्त मोहभंग के साथ यह बताना चाहते हैं कि आज का वक्त ऐसा हो गया है कि जो सही है, उसे लोग गलत समझते हैं, तथा जो गलत हैं उसे सही समझते हैं। यहाँ कवि की निराशा एवं मोहभंग की झलक दिखाई देता हैं।

Critical Overview / अवलोकन

समकालीन कवि यथार्थ का सृष्टा है। युगीन समस्याओं को कविता का विषय बनाना उन्हें खूब आता है। समकालीन कवि अपने चारों तरफ के कर्मकांडों पर पैनी दृष्टि डालते हैं और अपने कविता रूपी हथियार से उसपर तीखा वार भी करते हैं। अरुण कमल जी भी उसी प्रकार के कवि हैं। वे अपने समाज की ओर काफी ध्यान देते हैं और समाज को चेतावनी देते रहते है।

वक़्त कविता में भी वर्तमान समाज का चित्रण मिलता है। कवि अपनी व्यंग्य भरी वाणी से समाज की आलोचना करते हैं। और वर्तमान समाज में आम आदमी सुरक्षित नहीं हैं। सही को गलत और गलत को सही साबित करने की वर्तमान समाज की शासन व्यवस्था कवि को नहीं भाता है। आम आदमी की जीवन को दुश्वार बनानेवाली रीतियों से उन्हें नफरत है। उसके खिलाफ वे हमेशा अपनी आवाज़ को उठाते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- आठवीं दशक की कविता को समकालीन कविता कहा जाता है।
- समकालीनता आधुनिकता का आधार तत्व है।
- समकालीन कविता आम आदमी के जीवन संघर्षों, विसंगतियों, विषमताओं एवं विद्रूपताओं की खुली पहचान है।
- समकालीन कवि यथार्थ सृष्टा है।
- मुक्तिबोध, त्रिलोचन, धूमिल, निर्मल वर्मा आदि प्रमुख समकालीन कवि है।
- अरुण कमल प्रगतिशील विचारधारा के कवि है।
- अरुण कमल का पहला कविता संग्रह 'अपनी केवल धार' 1980 में प्रकाशित हुआ।
- 'नए इलाके में' कविता संग्रह केलिए उन्हें 1948 के साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
- 'वक्त' कविता में वर्तमान समय की बदलती परिस्थितियों पर कवि अपनी आशंका प्रकट करते है।
- सही को गलत और गलत को सही साबित करने की वर्तमानकालीन प्रवृत्ति पर कवि प्रकाश डालता है।

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य में समकालीन दौर के प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख कवि कौन है?
2. अरुण कमल का जन्म कब और कहाँ हुआ?
3. 'वक्त' किसकी रचा है?
4. अरुण कमल को किस रचना केलिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला?
5. अरुण कमल का पहला कविता संग्रह का नाम क्या है?
6. 'योगफल' किसकी रचना है?
7. अरुण कमल की आलोचनात्मक कृति का नाम क्या है?
8. 'गोलमेज़' किसकी आलोचनात्मक कृति है?

Answers उत्तर

1. अरुण कमल
2. 15 फ़रवरी 1954 को बिहार के रोहतास जिले के नासरीगंज में हुआ।
3. अरुण कमल
4. नये इलाके में (1998)
5. अपनी केवल धार (1980)
6. अरुण कमल
7. कविता और समय
8. अरुण कमल

Assignments प्रदत्त कार्य

1. समकालीन कविता माने क्या है?
2. समकालीन कविता की विशेषताएँ।
3. समकालीन कविता की काव्य प्रवृत्तियाँ।
4. समकालीन कविता की विषय वैविध्य पर टिप्पणी लिखिए।
5. अरुण कमल जी का परिचय दीजिए।
6. 'वक्त' कविता की आस्वादन टिप्पणी तैयार कीजिए।
7. 'वक्त' कविता का उद्देश्य क्या है?

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. समकालीन हिन्दी कविता : अलका जी. यादव
2. समकालीन कविता : नए प्रस्थाव : परमानन्द श्रीवास्तव
3. हिन्दी कविता प्रयोग से समकालीन तक : सम्पादक : एम. एस. जयमोहन

BLOCK 05

हाइकु कविताएँ

SGOU

इकाई 1

कटे जंगल

सुरंगमा यादव

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हाइकु कविता के उद्भव एवं विकास के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- हाइकु कविता की विशेषताओं से परिचय प्राप्त करता है।
- प्रमुख हाइकु कवियों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।।
- प्रसिद्ध हाइकु कवि सुरंगामा यादव के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- हाइकु कविता 'कटे जंगल' के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हाइकु 5-7-5 वर्ण क्रम में तीन पंक्तियों की सबसे छोटी कविता है। हाइकु जैसे छोटे छन्द में गहरे भाव भरना 'अँजुरी में सागर' भरने के समान है। कवि अपनी प्रतिभा से इस छोटे-से छन्द को अर्थ-गांभीर्य से परिपूर्ण करता है। हाइकु में उक्ति वैचित्र्य का गुण होना चाहिए। प्रारंभ में हाइकु में केवल प्रकृति-चित्रण ही होता था तथा ऋतु संकेतों को अनिवार्य माना जाता था। कालांतर में जीवन और जगत के तमाम विषय इसमें समाहित हो गये तथा हाइकु कविता बहुआयामी हो गयी।

हाइकु को जापानी काव्य विधा के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस त्रिपदिक हाइकु छन्द का भारत की काव्यभूमि पर उदार मन से स्वागत हुआ। यद्यपि भारतवर्ष में वैदिक काल से सूत्र एवं सूक्ति पद्धति में काव्य-रचना होने लगी थी। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने जीवनानुभवों को सूत्र रूप में व्यक्त किया है। अतः सूत्रात्मक शैली एवं दार्शनिक चेतना-संपन्न हाइकु छन्द को भारतीय कवियों ने खुलेमन से अपनाया। भारत में काव्य की एक नवीन विधा के रूप में हाइकु अब अपनी विशेष पहचान बना चुका है। हाइकु को हिन्दी साहित्य में विधिवत प्रतिष्ठापित करने का श्रेय जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में जापानी भाषा के प्रथम प्रोफेसर डॉक्टर सत्यभूषण वर्मा को जाता है। विस्तार देने का काम डॉ. भगवतशरण अग्रवाल ने किया है।

हिन्दी हाइकु के लिए मनोयोगपूर्वक काम करने वालों की कमी नहीं है। नए-पुराने अनेक हाइकुकार हाइकु साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। डॉ. सुधा गुप्ता, रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', डॉ. मिथिलेश दीक्षित, डॉ. जगदीश व्योम, प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' आदि हाइकु के प्रचार-प्रसार में प्राण-पण से लगे रहकर न केवल हाइकु साहित्य की श्री वृद्धि कर रहे हैं, बल्कि नए रचनाकारों को प्रकाशित करने का महती कार्य भी कर रहे हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

हाइकु, 'होक्कू', रवीन्द्रनाथ ठाकुर, ताँका, ऋतु संकेत

Discussion / चर्चा

'हाइकु शब्द के विभिन्न पर्याय एवं वर्ण-विन्यास काव्य क्षेत्र में पढ़ने को मिलते हैं। कैनेथ यशुदा के अनुसार 'हाइकु' छंद की संज्ञा, चीनी छंद 'होक्कू' से विकसित हुई है। उनके अनुसार हाइकु का विकासक्रम इसप्रकार है। रेंगा की प्रथम तीन पंक्तियों से हाइकाइ, हाइकाइ से होक्कू, और होक्कू से हाइकु। जापानी हाइकु के सभी समीक्षक, विशेषकर पश्चिमी देशों के समीक्षक, उनके इस मन्तव्य से सहमत नहीं हैं। होक्कू का अर्थ हाइका अर्थात् रेंगा, (याद रखें रेंगा तथा हाइका पर्यायवाची शब्द हैं) एक लम्बी काव्य श्रृंगला का प्रारंभिक पद्य अर्थात 5,7,5 लघ्वक्षरोच्चारणकाल के अंग को बताया गया है और स्पष्ट किया है कि उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में प्रसिद्ध हाइकुकार मासाओका शिकि के द्वारा होक्कु के स्थान पर हाइकु-शब्द को प्रथम बार, एक संपूर्ण, स्वतंत्र कविता के लिये स्थापित किया गया।

अनेक पश्चिमी हाइकु-काव्य के मर्मज्ञ विद्वानों के अनुसार सन् 1880 से पहले के इसप्रकार के काव्य को, जिसमें बाशो, बुशोन, इस्सा तथा उनके सहयोगियों एवं शिष्यों का हाइकु-काव्य आ जाता है, उसे केवल होक्कू कहा जाता रहा था और केवल सुविधा के लिये हम आज उसे हाइकु कहते हैं। इसलिए हाइकु संज्ञा के साथ, जापानी हाइकु का इतिहास शिकि द्वारा नामकरण होने के पश्चात अर्थात लगभग सन् 1880 से शुरू होता है और उससे पहले का इतिहास होक्कू का इतिहास है। (वैसे आज सन् 1880 से पहले लिखे स्वतंत्र होक्कू को भी हाइकु कहा जाता है। किंतु इसके साथ यह स्पष्टता भी मिलती है कि शिकी के पहले के हाइकु अर्थात होक्कू को शास्त्रीय हाइकु और 1892 के बाद के शिकी के द्वारा सुधार किये जाने के बाद के हाइकुओं को आधुनिक हाइकु कहा जाता है। किन्तु इसके बाद भी जापान में दशकों तक हाइकु और होक्कू संज्ञायें समानांतर चलती रहीं। यहाँ तक कि भारत तक में, बीसवीं शताब्दी के दूसरे तीसरे दशक में, तमिल और तेलुगु भाषाओं में, जापानी हाइकुओं के अनुवादों के साथ जो समीक्षाएँ लिखी गईं, उनमें 'होक्कू' संज्ञा का ही प्रयोग किया गया है। हिन्दी हाइकु के क्षेत्र में डॉ. वर्मा ने अपने शोध-प्रबंध में लिखा है कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर जापान से हाइकु लाये और उन्होंने अपने ग्रन्थ 'जापान-यात्री' में दो जापानी हाइकुओं के अनुवाद दिये हैं और उसे संसार की सबसे छोटी कविता कहा है। डॉ. वर्मा ने उन दो हाइकुओं के बंगला अनुवादों को भी दिया है। शांतिनिकेतन से साहित्य-सेतु के संपादक डॉ. रामबहाल तिवारीजी ने, जो हिन्दी एवं बंगला भाषाओं के विद्वान हैं, हाइकु-काव्य मर्मज्ञ नीलमेन्दु सागर को सूचित किया है कि रवीन्द्रनाथ ने अपनी जापान-यात्री पुस्तक में हाइकु शब्द का प्रयोग ही नहीं किया है (शायद होक्कू संज्ञा का प्रयोग किया हो)। जापानी रचनाओं के जो अनुवाद उन्होंने दिये हैं, उन पर चोका, सेदोका आदि शीर्षक दिये हैं। वैसे रवीन्द्रनाथ टागोर के स्फुल्लिंग काव्य संग्रह में अनेक रचनाएँ दो और तीन पंक्तियों की हैं। जापान पर अमरीका की फौजों के कब्जा हो जाने के बाद अनेक अमरीकी साहित्यकारों पत्रकारों चाहिये, जैसेकि भोजपुरी में सैंकड़ों कवि हाइकु रचना कर रहे हैं, उनकी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के साथ, नेपाली भाषा को इस सूची में जोड़ दिया जाये, तो उनकी संख्या शताधिक से कम नहीं होगी। केवल गुजराती भाषा में ही शताधिक कवियों ने हाइकु लिखे हैं।

छंद की दृष्टि से मान्य 'हाइकु' 5, 7, 5 के क्रम में अक्षरीय त्रिपदी रचना है। संस्कृत में एक वर्णीय छंद भी है, इसलिए यह कहना उचित नहीं लगता कि वह संसार की सबसे छोटी कविता है। इसे कैनेथ यशुदा द्वारा 'एक श्वासी काव्य' कहना भी जापानी भाषा के हाइकुओं के लिए ही सच हो सकता है। जापानी हाइकु ऊपर से नीचे लिखा, एक पंक्ति जैसा दिखाई देता है, और यदि उसके साथ उसके भावों को व्यक्त करता चित्र भी हो तो उसे 'हाइगा' कहा जाता है। किन्तु संसार में सभी भाषाओं के अक्षरों का उच्चारणकाल एवं सभी व्यक्तियों के श्वाँस की लम्बाई, एक सी नहीं होती, और न ही संसार की सभी भाषाओं की लिपियाँ ऊपर से नीचे की ओर लिखी जाती हैं।

हाइकु के उद्‌भव के संबंध में एक अन्य मान्यता के अनुसार हाइकु, जापानी छंद ताँका / वाका की प्रथम तीन पंक्तियाँ हैं। ताँका- पाँच, सात, पाँच, सात, सात के क्रम में इकत्तीस अक्षरों, पाँच पंक्तियोंवाला जापानी छंद है, जिसका अर्थ लघुगीत होता है। हिन्दी में भी इन पंक्तियों के लेखक के साथ साथ अन्य अनेक हाइकुकारों ने ताँका छंद में काव्य रचना की है। वास्तव में रेंगा छंद भी दो प्रकार का होता था। एक तो ताँका या वाका के समान, 5,7,5,7,7 के क्रम में 31 लघ्वक्षरोच्चारणकाल का तानरेंगा और दूसरा इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए 100 पंक्तियों का चोरेंगा। इसीलिये यह भ्रम पैदा होता है। रेंगा की प्रारंभिक तीन पंक्तियों को हाइकु के स्थान पर 'हाइकाइ' कहा जाता था, ऐसी भी मान्यता है। आज भी जापानी हाइकु पत्रिकाओं में

रेंकू शीर्षक के अंतर्गत, अलग विभाग में रेंगा जैसी रचनाएँ प्रकाशित होती हैं जबकि पत्रिका का नाम है 'सिम्पली हाइकु' साथ ही इस पत्रिका में ताँका आदि भी प्रकाशित होते हैं।

ताँका, वाका और रेंगा से उत्पन्न हाइकु की शुरुआत हास्यपूर्ण रचनाओं के रूप में हुई। जापानी समीक्षक कोजी कावामोटो के अनुसार, 'वाका' के सख्त नियम और रूढ़ियों के विरोध में हाइकाइ लिखे गए। 'वाका' आमतौर पर प्रेम, शोक और एकाकीपन जैसे गंभीर विषयों पर आधारित होती थी। हाइकु ने साधारण विषयों और हास्य का स्वागत किया।

जैसे-जैसे समय बीता, बाशो जैसे कवियों ने हाइकु को गहनता और विस्तार दिया, जिससे यह एक शिष्ट काव्य-शैली बन गया। बाशो ने यह बताया कि किसी भी विषय पर हाइकु लिखा जा सकता है। उनकी प्रारंभिक रचनाओं की आलोचना होती रही, लेकिन यह भी सही है कि किसी भी कवि की शुरुआत में काव्य-गुणों का अभाव हो सकता है। इससे उनकी महानता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

हाइकु के अंग

जापान के प्रसिद्ध हाइकु समीक्षकों की दृष्टि से उसके आठ अंग माने गये हैं -

1. सोनेयामा - यथावत् चित्रण
2. किरेजी - दंशक शब्द (हा, आह, रे, उफ)
3. गयोमी - सूक्ष्म पर्यवेक्षण
4. होशोमी - टटका मुहावरा
5. किगो - मौसमी शब्दों का प्रयोग धूरी शब्द
6. ओनजी - वर्णनात्मक शिल्प
7. कारूमी - वस्तु का सौंदर्य
8. सैबी तटस्थता

हाइकु-उद्भव एवं विकास

हाइकु के उद्भव और विकास को समझने के लिए ज़ेन दर्शन पर विचार करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि हाइकु के मूल तत्व ज़ेन के दर्शन में निहित हैं।

जेन दर्शनः जेन शब्द का विकास हिन्दी के 'ध्यान' शब्द से हुआ है और यह बौद्ध धर्म के प्रचार से चीन और जापान में लोकप्रिय हुआ, जहां बौद्ध धर्म की अनेक शाखाएँ हैं, लेकिन ध्यान का महत्व सभी में समान है। डॉ. भरतसिंह उपाध्याय के अनुसार, जेन एक ऐसे वृक्ष का फल है जिसकी जड़ें भारतीय भूमि में हैं, लेकिन यह चीन में विकसित हुआ और जापान में फलित हुआ। बौद्ध धर्म की शिक्षा में शील (सदाचार), समाधि (ध्यान), और प्रज्ञा (अंतर-ज्ञान का परम ज्ञान) का महत्व है।

हाइकु, जो 5-7-5 के अक्षर क्रम में लिखी जाती है, में भाव की एकाग्रता और निरपेक्षता होनी चाहिए, बिना किसी टीका-टिप्पणी या अलंकार के। जापान के प्रसिद्ध हाइकुकार बाशो ने अपने हाइकु लेखन के तीसरे चरण में जेन साधक बनकर कहा कि दुनिया में ऐसा कोई विषय नहीं है, जिस पर हाइकु नहीं लिखा जा सकता। हालांकि, बाशो से पहले और बाद के हाइकुकार जेन साधना से जुड़े नहीं थे और उनके हाइकु इस दर्शन के सिद्धांतों से प्रभावित नहीं थे।

भारत में कोई भी हाइकुकार जेन साधना से संबंधित नहीं है, इसलिए इसे एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में समझा जाना चाहिए, जबकि जापान में हाइकु और जेन साधना के संबंध पर कई मत हैं। इस प्रकार, जेन और हाइकु के बीच संबंध को समझना महत्वपूर्ण है, लेकिन यह ध्यान में रखना चाहिए कि भारतीय हाइकुकारों की दृष्टि और अनुभव भिन्न हैं।

हाइकु कविता का विकास

जापान में हाइकु कविता का विकासक्रम विभिन्न युगों के प्रमुख साहित्यकारों द्वारा हुआ।

मुरोमाचि युग (1335-1573) में रेंगा पद्धति से होक्कु की रचना शुरू हुई, जिसमें ऋतु संकेत जरूरी हो गए। सेक्कान और मोरितोक ने होक्कु को स्वतंत्र रूप से हाइकु के रूप में विकसित किया।

बाशो युग (1644-1693) में बाशो ने हाइकु को नई ऊँचाई दी। उनके हाइकुओं में प्रकृति और मानवता का समावेश होता है। बाशो के शिष्यों की संख्या 2000 से अधिक थी, और इस समय को बाशो युग कहा जाता है।

बुसोन ने भी हाइकु में मानवीय अनुभवों को शामिल किया, और उनकी रचनाओं में विविधता थी।

इस्सा का जीवन दुःख और संघर्ष से भरा था, और उन्होंने जीवन के करीब हाइकु लिखे।

शिकी ने एक नए आंदोलन की शुरुआत की और 'हाइकाइ' पत्रिका स्थापित की, जिससे हाइकु समाज को बढ़ावा मिला।

आधुनिक युग में, सामाजिक परिवर्तन के साथ हाइकु में नए प्रयोग होने लगे, जिससे पारंपरिक बंधन टूटने लगे। हाइकु अब केवल ऋतु पर नहीं, बल्कि अन्य विषयों पर भी आधारित होने लगा। कराई सेनरियु ने सामाजिक मुद्दों को लेकर हाइकु

को नया रूप दिया, और उनके हाइकुओं में ऋतु संकेत कम थे, जिससे उन्हें 'सेनेरियु' कहा जाने लगा।

हिन्दी काव्य जगत में हाइकु का प्रारंभ

हिन्दी काव्य जगत में हाइकु का पहला परिचय कवि अज्ञेय ने अपने काव्य संग्रह 'अरी ओ करुणा प्रभामय' के माध्यम से कराया। इस संग्रह के 'चीड़ का खाका' खंड में उन्होंने जापानी हाइकुओं का अनुवाद और 'रूपकेकी' खंड में अपने मौलिक हाइकु प्रस्तुत किए। धीरे-धीरे, यह जापानी काव्य रूप इतना लोकप्रिय हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं के कवियों ने मौलिक हाइकुओं का सृजन शुरू कर दिया।

डॉ. सत्य भूषण वर्मा के अनुसार, नोबेल पुरस्कार प्राप्ति के बाद रवींद्रनाथ ठाकूर ने जब जापान की यात्रा की, तो उन्होंने 1923 में 'जापान यात्री' लिखकर भारत में पहली बार हाइकु की चर्चा की। इसके बाद, हिन्दी की पत्रिकाएँ हाइकु कविताएँ प्रकाशित करती रहीं।

हालांकि, हिन्दी में स्वतंत्र रूप से पहला हाइकु काव्य संग्रह 1987 में डॉ. भगवतशरण अग्रवाल द्वारा प्रकाशित किया गया। हिन्दी के हाइकु के विकास में डॉ. सत्य भूषण वर्मा का योगदान विशेष रहा। उन्होंने हाइकु क्लब की स्थापना की और 'हाइकु' पत्र का प्रकाशन आरंभ किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 'जापानी हाइकु और आधुनिक हिन्दी कविता' नामक शोध ग्रंथ भी प्रकाशित किया।

'हाइकु पत्र', 'हिन्दी सिजो', 'पत्राणु', 'नवांकूर' और 'शब्दाणु' जैसी लघुपत्रिकाएँ भी हाइकु के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। आज, हिन्दी के साथ-साथ अनेक प्रादेशिक भाषाओं में भी हाइकु कविता की वृद्धि देखने को मिलती है। इस प्रकार, जापानी काव्य रूप हाइकु अब भारत में एक महत्वपूर्ण काव्य विधा बन चुका है।

हिन्दी में 'हाइकु' शब्द का वर्ण विन्यास हाइकु, हायकू, हाइकू, हाईकु, हायकू के रूप में मिलता है। उच्चारण की दृष्टि से, जापानी भाषा के उच्चारण के अनुसार हाइकु ही उचित है। हाइकु का यह वर्ण विन्यास केवल भारत में ही बदला गया हो, ऐसा नहीं है। अंग्रेजी की पचासों पत्रिकाओं में हाइकु प्रकाशित होते हैं, जिनमें से एक त्रैमासिक पत्रिका का नाम ही 'HIGH/COO' है। हाइकु 'संज्ञा, विश्वविख्यात काव्य-संज्ञा है और त्रिपदी, त्रिशूल, शब्दाणु, क्षणिका, कणिका, त्रिवेणी आदि नाम देकर, हम उसका भारतीयकरण न करके, उसके विश्व काव्य साहित्य में विलग करने का काम ही करते हैं। वैसे भारत में त्रिपदी छंदों की कमी नहीं है। अपने यहाँ संस्कृत में गायत्री, उर्दू में सलासी, पंजाबी में माहिया, टप्पा, अमीर खुसरो के दोसखुने आदि त्रिपदी छंद सैंकड़ों वर्षों से प्रचलित हैं।

हाइकु एक मुकम्मिल कविता है, जिसके कथ्य का कैनवेस मुक्तक से लेकर महाकाव्य तक का हो सकता है। शुद्ध, सहज, मार्मिक हाइकु में चित्रात्मकता विशेष गुण है, जो आधुनिक काव्य में कहीं कहीं ही दिखाई देता है।

हिन्दी में 'हाइकु' संज्ञा का प्रयोग विभिन्न रूपों में देखने को मिलता है। एक तो कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से शुद्ध हाइकु के रूप में। ऐसे हाइकु का अपना एक अलग अनोखा व्यक्तित्व होता है। वह कालजयी कविता के रूप में होता है और रहीम, कबीर, तुलसी और बिहारी जैसे कवियों के अनेक दोहों आदि छंदों के समान, धीरे धीरे लोक प्रचलित हो जाता है। ऐसा हाइकु 'मोनालिसा' की मुस्कान के समान शाश्वत सौन्दर्य अनुभूति कराकर पाठक का मन हर लेता है। अंग्रेजी की कहावत A Thing of beauty is joy for ever, उस पर पूर्णतया चरितार्थ होती है।

बाशो, मात्सुओ

मात्सुओ बाशो (1644-1694) जापान का प्रमुख हाइकुकार था, जिसका जन्म नाम शिचिरो था। उन्होंने चीनी साहित्य का अध्ययन करते समय 'तोसेइ' उपनाम अपनाया, और बाद में 1681 में एक झोपड़ी में रहने लगे, जिसके बाहर केले का पेड़ था, और उसी से 'बाशो' उपनाम लिया। उनके पिता निम्न श्रेणी के समुराई थे, और जिस लॉर्ड की सेवा करते थे, वह भी हाइकाई लिखता था, जिसका प्रभाव बाशो पर पड़ा। बाशो ने अनेक यात्राएँ की, जिनमें से एक उत्तर दिशा की यात्रा के दौरान उन्होंने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'ओकु नो होसोमुची' (1694) लिखा। अपनी अंतिम यात्रा में ओसाका में उन्होंने देह त्याग किया, और उस समय उनके पास दो हजार हाइकुकार-विद्यार्थी थे। बाशो की कविताओं के तीन विशेष गुण हैं: एकाकीपन, एकाकीपन की संवेदनात्मक अनुभूति, और अभिव्यक्ति की सहजता। डॉ. वर्मा के अनुसार, बाशो के हाइकु केवल शब्दों की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का रूप लेते हैं। हालांकि यह सभी बाशो के हाइकुओं पर लागू नहीं होता, फिर भी हम अक्सर जापानी हाइकुकारों की रचनाओं का गुणगान और अनुवाद करते हैं, शायद इसलिए कि हमारी सोच में अभी भी दासता का प्रभाव बचा हुआ है।

हाइकु कविता की विशेषताएँ

हाइकु कविता की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

लघुता/ संक्षिप्तता

हाइकु साधना की कविता है, जो किसी विशेष क्षण की गहन अनुभूति को कलात्मक रूप में प्रस्तुत करती है। प्रो. सत्यभूषण वर्मा के शब्दों में -'आकार की लघुता हाइकु का गुण भी है और यही इसकी सीमा भी। अनुभूति के क्षण की अवधि एक निमिष, एक पल अथवा एक प्रश्वास भी हो सकता है। अतः अभिव्यक्ति की सीमा उतने ही शब्दों तक है जो उस क्षण को उतार पाने के लिए आवश्यक है। हाइकु में एक भी शब्द व्यर्थ नहीं होना चाहिए। हाइकु का प्रत्येक शब्द अपने क्रम में विशिष्ट अर्थ का द्योतक होकर एक समन्वित प्रभाव की सृष्टि में समर्थ होता है। किसी शब्द को उसके स्थान से च्युत कर अन्यत्र रख देने से भाव-बोध नष्ट हो जाएगा। हाइकु का प्रत्येक शब्द एक साक्षात अनुभव है। कविता के अंतिम शब्द तक पहुँचते ही एक पूर्ण बिंब सजीव हो उठता है।'

हाइकु और ऋतु संकेतः

जापानी हाइकु काव्य में ऋतु का संकेत देना एक आवश्यक अंग माना जाता है। कई समीक्षक, जैसे डॉ. वर्मा, इस बात पर जोर देते हैं कि हाइकुकार को प्रकृति से जुड़ना चाहिए। उनके अनुसार, ऋतु का हाइकु से गहरा संबंध होता है, और अक्सर हाइकु की एक पंक्ति में ऋतु का संकेत होता है। जापान में 'किगो' शब्दों का प्रयोग ऋतु को दर्शाने के लिए किया जाता है, जैसे 'चाँद' हमेशा शरद पूर्णिमा को दर्शाता है। भारतीय हाइकुकार भी प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर रहे हैं। डॉ. सुधा गुप्ता ने षडऋतु और बारहमासों पर हाइकु लिखे हैं, जबकि डॉ. शैल रस्तोगी जैसे कवियों ने प्राकृतिक बिम्बों के माध्यम से हाइकु को समृद्ध किया है।

हालांकि, आज के हिन्दी हाइकु में ऋतुबोधक संकेत का प्रयोग अनिवार्य नहीं है। यदि यह स्वाभाविक रूप से शामिल हो जाए, तो अच्छा है, लेकिन इसे अनिवार्य लक्षण के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। हाइकु की काव्यात्मकता को बनाए रखते हुए यदि कोई हाइकुकार इसे शामिल करता है, तो वह सुंदर है।

हाइकु-कविता : कथ्य

हिन्दी भाषा में लिखे हाइकुओं की समीक्षा करते समय, समीक्षकों के सामने जापानी हाइकु के संबंध में स्थापित सिद्धांतों का निकष रहता है। हिन्दी के अधिकांश हाइकुकारों ने 'हाइकु' को प्रमुखतः सत्रह अक्षरीय 5, 7, 5 के अक्षरक्रम में अतुकांत त्रिपदी रचना के रूप में ही ग्रहण किया है। कथ्य की दृष्टि से हिन्दी के हाइकु- काव्य में व्यक्तिगत जीवन के सुख-दुख; पारिवारिक संबंधों संबंधी विडंबनाएँ; सामाजिक समस्याएँ; राष्ट्रीय विसंगतियाँ; प्रकृति के विविध रूपों के सौन्दर्य के चित्रात्मक अंकन के साथ मानव जीवन और जगत के विभिन्न पक्षों का चित्रण हुआ मिलता है।

हिन्दी हाइकुओं में व्यक्तिगत जीवनदर्शन से लेकर आध्यात्मिक विचारधाराओं तक का समावेश होता है। आधुनिक हिन्दी कवियों ने शायद ही कोई ऐसा विषय छोड़ा है, जिसे हाइकुकारों ने अपनी रचनाओं में न शामिल किया हो। हाइकु कवि अपने सपनों और समसामयिक स्थितियों के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हैं। हिन्दी के अन्य काव्य रूपों के विषय भी हाइकु में चित्रित किए गए हैं, जिससे इसे 'गागर में सागर', 'सूक्ति काव्य' और 'सूत्र काव्य' जैसे विशेषण प्राप्त हुए हैं। इसके बावजूद, जापानी हाइकु की समीक्षा और हिन्दी हाइकु के संदर्भ में उठने वाली शंकाओं का समाधान करने का प्रयास आवश्यक प्रतीत होता है।

सहजता

सहजता, हाइकु का विशिष्ट गुण है। कबीर ने सहज समाधि की बात करी थी। वास्तव में हाइकु से अधिक शुद्ध, सहज कविता दूसरी कोई नहीं है।

वैयक्तिक अनुभूतियों

हाइकु वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की कविता है। जहाँ सीमित शब्दों में गहराई से भावनाएँ व्यक्त की जाती हैं। हाइकु में वैयक्तिगत अनुभवों को संक्षिप्त, सारगर्भित और भावनात्मक रूप से प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया जाता है।

हाइकुः अलंकारिता

जापानी हाइकु के शिल्प में अलंकरण को कोई स्थान नहीं दिया गया है। जो दृश्यमान है, उसी सत्य को, हाइकु में यथावत अभिव्यक्त करना है, साधारणतया यही मान्यता प्रचलित रही। अलंकारविहीन कविता में ही सहज अभिव्यक्ति हो सकती है, यह भी कहा गया है। किन्तु भारतीय भाषाओं में रचे काव्य-साहित्य की पृष्ठभूमि में संस्कृत काव्यशास्त्र की सुदीर्घ एवं सबल परंपरा के कारण भारतीय कवियों का अलंकारिता से

अछूता रहना अपवाद स्वरूप ही संभव था। जिस काव्य-परंपरा में एक संप्रदाय द्वारा अलंकार को काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित करने के प्रयत्न हुए हों और 'भूषन बिना न भावहिं कविता, बनिता वित्त' कहा गया हो और अलंकारों की संख्या इतनी अधिक तथा व्यापक हो कि स्वाभावोक्ति जैसा अलंकार भी हों, साथ में तीसरी, चौथी कक्षा से ही कवियों को अलंकार की शिक्षा मिली हो, ऐसे परिवेश में अलंकारविहीन कविता रचना, भारतीय विशेषकर हिन्दी के कवियों के लिये असंभव जैसा कार्य है। और इसीलिये हिन्दी की हाइकु कविता में बिंबों एवं प्रतीकों के साथ, अलंकार प्रयोग स्वाभाविक रूप से आवश्यकतानुसार निरूपित हुआ प्राप्त होता है। शब्दालंकार एवं अर्थालंकार, दोनों। किंतु कविता में अलंकार स्वाभाविक रूप से आएं, तभी सौंदर्यबोध में सहायक होते हैं।

चित्रात्मकताः

शिशुओं को विभिन्न प्रकार के खिलौनों के माध्यम से, उनसे परिचित कराया जाता है। अधिकांश भाषाओं में बालकों को वर्णाक्षरों का परिचय चित्रों के माध्यम से ही कराया जाता है। जैसे 'अ' से अनार या अनार का 'अ', आदि। एक रंगमंचीय नाटक प्रत्यक्ष दर्शन के माध्यम से अपनी बात सहृदय दर्शक के मन में अनुभूत कराता है तो कवि दो प्रकार से अपनी अनुभूति का संप्रेषण करता है।

1. संवेदनाओं, मनोभावों अथवा कथ्य की रसानुभूति कराकर
2. वह अपने काव्य के माध्यम से अपनी संवेदनाओं को इसप्रकार प्रस्तुत करता है, जिससे कि उसका हूबहू चित्र पाठक या श्रोता के सामने उभरता जाए। हिन्दी के अधिकांश मध्यकालीन काव्य, विशेषकर बिहारी जैसे कवियों के दोहों में यह गुण मिलता है। हिन्दी के आधुनिक काल के काव्य में चित्रात्मकता का यह गुण शुद्ध हाइकुओं के माध्यम से फिर से स्थापित हुआ है। हिन्दी के अनेक हाइकुकारों के अनेक हाइकुओं में चित्रात्मकता के गुण प्राप्त होते हैं।

हाइकुः बिंब-विधान

काव्य की अन्य विधाओं के समान, हाइकु में भी बिंब-विधान का विशेष महत्व है। उद्भव के आधार पर प्रतिमाएँ (बिंब) दो प्रकार की मानी जाती हैं। एक तो स्मृतिजन्य और दूसरे स्वरचित और ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर पाँच दृष्टि, शब्द, गंध, रस और स्पर्श। किन्तु कवि को ऐसे बिंबों का प्रयोग करना चाहिए, जिन्हें सहृदय पाठक आसानी से ग्रहण कर सकें। ऐसे बिंब जो परंपरागत रूप में साहित्य और समाज में प्रचलित हों। यह नूतन प्रतिमा निर्माण या बिंबविधान समस्त काव्य, कला, संगीत और नवनिर्माण का मूलाधार हैं। भाषा और चिंतन के मूल उपादान बिंब ही है। मिल्स के अनुसार हाइकु मूर्त बिंबों की कविता है, अमूर्त की नहीं ।

हाइकु में मिथकः आधुनिक हिन्दी काव्य में तथ्य और कल्पना के साथ साथ कवि कुछ ऐसे तत्वों का सहारा भी लेता है, जो उसके सूक्ष्म अंतर्भावों को उपमा के स्थान पर, सांकेतिक उदाहरण के माध्यम से पाठक के मर्म तक पहुँचा सकें। इन तत्वों में से एक है मिथक। मिथक की कोई एक परिभाषा हमें नहीं मिलती। विभिन्न विद्वानों ने मिथक को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया है। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदीजी के अनुसार- 'मिथक वास्तव में भाषा का पूरक है। सारी भाषा इसके बल पर खड़ी है। आदि मानव में संचित अनुभूतियाँ मिथक के रूप में अभिव्यक्त होने के लिये व्याकुल रहती है। मिथक वस्तुतः सामूहिक मानव की भावनिर्मात्री शक्ति की अभिव्यक्ति है, जिसे कुछ मनोविज्ञानी आर्किटाइटल (आद्यबिंब) कहकर संतोष कर लेते हैं।' किन्तु आज के कवि अनेक बिंबों और प्रतीकों के प्रयोगों के द्वारा अपनी अनुभूतियों को सार्थक माध्यम बनाने में जब सक्षम हो चुके हैं तो मिथक का अर्थ भी सीमित रह गया है। हिन्दी में अंग्रेजी भाषा के मिथ शब्द से बना मिथक शब्द, इसी शब्द से विकसित माइथोलॉजी अर्थात प्रागैतिहासिक, पौराणिक कथाओं के पात्रों एवं घटनाओं के संदर्भ देने के लिये अधिकांश रूप से प्रयोग में होने लगा है। हिन्दी एवं उसकी बोलियों के हाइकुकारों ने केवल पौराणिक कथाओं को लेकर ही हाइकु छंद में खंड-काव्य, महाकाव्यादि नहीं लिखे हैं, बल्कि अपने हाइकु-काव्य में भी इसी अर्थ में उनका प्रयोग किया है।

हाइकु छंद के विविध प्रयोगः

1. हाइकु कविता
2. हाइकु-गजल
3. हाइकु-तेवरी
4. हाइकु-गीत
5. हाइकु दोहा
6. हाइकु-दोहरा
7. हाइकु-प्रबंध काव्य (भँवरगीत, खंड-काव्य एवं महाकाव्य)
8. हाइकु-मुक्तक
9. हाइकु छंद में कुंडलियाँ

हाइकु एक अनूठी काव्यशैली है, जो सत्रह अक्षरों में तीन

पंक्तियों के माध्यम से गहरी भावनाओं और विचारों को संक्षिप्तता के साथ व्यक्त करती है। इसकी संरचना 5-7-5 अक्षरों की होती है, जिसमें संयुक्त अक्षर को एक अक्षर माना जाता है। हाइकु में प्रकृति, व्यंग्य, और हास्य के साथ-साथ मानव अनुभवों की विविधता भी महत्वपूर्ण है।हिन्दी हाइकु को गंभीरता से लेने वाले प्रमुख हाइकुकारों में प्रो. सत्यभूषण वर्मा, कमलेश भट्ट 'कमल', डॉ. भगवत शरण अग्रवाल, और डॉ. आदित्य प्रताप सिंह शामिल हैं। वर्तमान में लगभग 200 हाइकुकार सक्रिय हैं, जो इस विधा को नए आयाम दे रहे हैं।

हाइकु की विशेषताएँ, जैसे लघुता, ऋतु संकेत, व्यक्तिगत अनुभव, चित्रात्मकता और बिंब-विधान, इसे साहित्य में विशिष्ट बनाती हैं। यह न केवल प्रकृति के बारे में है, बल्कि सामाजिक, पारिवारिक, और आध्यात्मिक मुद्दों को भी उजागर करता है। अंततः हाइकु एक संवेदनशील और विचारशील भाषा के रूप में उभरता है, जो मानव अनुभव और प्रकृति के प्रति हमारी संवेदनशीलता को प्रकट करता है। इसकी गहराई और लघुता इसे समकालीन साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है।

हिन्दी में हाइकु को गंभीरता से लेने वालों और हाइकुकारों की लंबी सूची है, जिनमें प्रमुख हैं:

- प्रोफेसर सत्यभूषण वर्माः हाइकु को हिन्दी में विशेष पहचान दिलाने में अग्रणी, इस अभियान में पूरी तत्परता से जुड़े हुए हैं।
- कमलेश भट्ट 'कमल': हाइकु-1989 और हाइकु-1999 का संपादन किया, जो हाइकु के क्षेत्र में अति महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है।
- डॉ. भगवत शरण अग्रवालः हाइकु भारती पत्रिका का संपादन कर रहे हैं और हाइकु पर गंभीर कार्य कर रहे हैं।
- प्रो. आदित्य प्रताप सिंहः हाइकु को लेकर गहरी चिंताओं के साथ लेखन कर रहे हैं, और हिन्दी हाइकु की स्थिति सुधारने के लिए सक्रिय हैं।
- डॉ. जगदीश व्योमः हाइकु दर्पण पत्रिका का संपादन, जो हाइकु की एक महत्वपूर्ण पत्रिका है।
- डॉ. रामनारायण पटेल 'राम': हिन्दी हाइकुः इतिहास और उपलब्धियाँ पुस्तक का संपादन किया, जिसमें हाइकु पर अनेक गंभीर लेख शामिल हैं।
- कृष्णेश भट्टः लखनऊ विश्वविद्यालय से हाइकु पर शोधकार्य किया है।

इस समय, हाइकुकारों की संख्या लगभग 200 से अधिक है, जो गंभीरता से हाइकु लिख रहे हैं, और यह संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

प्रमुख हाइकुकारों में शामिल हैं:

डॉ. सुधा गुप्ता, डॉ. शैल रस्तोगी, कमलेश भट्ट 'कमल', पारस दासोत, डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव, डॉ. आदित्य प्रताप सिंह, डॉ. गोपाल बाबू शर्मा, डॉ. राजन जयपुरिया, डॉ. सुरेंद्र वर्मा, डॉ. सुरंगमा यादव, डॉ. जगदीश व्योम, नीलमेन्दु सागर, और रामनिवास पंथी। हिन्दी हाइकु के विकास में इन सभी का योगदान अनमोल है।

हाइकु : फ्री अथवा नव-हाइकु

जापान में परंपरागत कथ्य तीन पंक्तियाँ तथा अक्षरादि के लक्षणों को बंधन जैसा मानकर, इन लक्षणों में से किसी का विरोध करके लिखी जानेवाली रचनाओं को फ्री हाइकु संज्ञा दी गई। बाद में इन्हीं बातों को लेकर विदेशों में ही नहीं, भारत में भी कुछ रचनाकारों ने इसकी वकालत करी और आज भी कर रहे हैं।

सुरंगमा यादव

डॉ सुरंगमा यादव एक उभरती हुई हाइकुकार हैं। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बदायू जिले में हुआ था। रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय से उन्होंने एम. ए की उपाधी प्राप्त की।

सुरंगमा यादव

सम्प्रतिः असि. प्रो. हिन्दी विभाग, महामाया राजकीय महाविद्यालय, महोना, लखनऊ

प्रकाशन एवं संपादन

- 'अर्णव' (विभिन्न विषयों के उच्च स्तरीय शोध पत्रों का संपादित संकलन) 3 अंक प्रकाशित
- लघुकथा संग्रह, 'अपने सपने सबके अपने' में चयनित लघुकथाओं का प्रकाशन

- प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य
- आधुनिक हिन्दी काव्य संकलन प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप
- हिन्दी भाषा का विकास एवं व्याकरण वंशीधर शुक्ल का काव्य (समीक्षात्मक पुस्तक, प्रथम संस्करण 2016) ई संस्करण 2017
- राजकीय महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका का निरंतर दस वर्षों से संपादन
- विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में अनेक शोध पत्रों एवं लेखों का प्रकाशन (साहित्य भारती-उ.प्र. हिन्दी संस्थान लखनऊ, समकालीन अभिव्यक्ति, यू. एस. एम. पत्रिका, कृतिका, शोध संचार बुलेटिन, शोध सरिता आदि)
- विभिन्न ई पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित (साहित्य कुंज, रचनाकार, साहित्य सुधा, हस्ताक्षर, हिन्दी हाइकु आदि)
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों का आयोजन एवं प्रतिभाग

सम्मान/पुरस्कारः

- 'शिक्षा भूषण' सम्मान, राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास द्वारा 20 वें अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलन गाजियाबाद, 27 एवं 28 अक्टूबर 2012
- लघुकथाओं हेतु 'प्रशस्ति पत्र' प्राप्त
- 'बदायूँ श्री' सम्मान से विभूषित (16 फरवरी, 2013)
- 'अवधि वारिधि' सम्मान-राष्ट्रकवि पं. वंशीधर शुक्ल स्मारक एवं साहित्य प्रकाशन समिति, मन्यौरा, लखीमपुर-खीरी द्वारा (22 जनवरी 2018)
- राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान उ.प्र. द्वारा वर्ष 2017 में आयोजित निबन्ध/लेख प्रतियोगिता में लेख पुरस्कृत (28) जनवरी 2018)

सुरंगमा यादव की हाइकु कविता की विशेषताएँ

हाइकु कविता एक संक्षिप्त और प्रभावशाली रचना होती है, जिसमें गहन भावनाएँ और संवेदनाएँ समाहित होती हैं। इसकी विशेषता यह है कि हाइकु की शैली छोटी होती है, लेकिन इसके भाव बहुत गहरे और सूक्ष्म होते हैं। इस गहराई के कारण पाठक आसानी से लेखक के भावनात्मक अनुभव से जुड़ता है, जिससे कविता और भी प्रभावशाली बनती है। डॉ. सुरंगमा यादव की हाइकु कविताएँ इस विशेषता का बेहतरीन उदाहरण हैं।

डॉ. सुरंगमा यादव के हाइकु उनकी तीव्र भावनाओं से उत्पन्न होते हैं और यह स्पष्ट करते हैं कि उनकी रचनाएँ केवल कल्पना नहीं, बल्कि वास्तविक अनुभवों पर आधारित हैं। उनकी हाइकु पाठकों को न केवल भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं, बल्कि उन्हें विचारों के गहरे समुद्र में भी ले जाती हैं। जब हाइकुकार का संवेदना गहरा होता है, तब उनकी रचनाएँ भी उतनी ही प्रभावशाली होती हैं। यह गहराई उनके हाइकु की आत्मा होती है, जिससे पाठक को एक अनूठा अनुभव मिलता है।

हाइकु का कलेवर सामान्यतः छोटा होता है, लेकिन इस संक्षिप्तता में भाव की सूक्ष्मता का होना अनिवार्य है। सुरंगमा यादव की रचनाएँ इस बात को दर्शाती हैं कि कैसे कम शब्दों में गहन भावनाओं को उजागर किया जा सकता है। उनकी कविताएँ नारी की दयनीय स्थिति, बाढ़ के प्रकोप, दूषित नदियों की चिंता, और बुजुर्गों की मानसिकता जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं।इसके अलावा, उनके हाइकु असमानता, स्वार्थ, निर्धनता, और नशाखोरी जैसी सामाजिक विसंगतियों पर भी गहरी टिप्पणियाँ करते हैं। ये विषय न केवल उनकी कविताओं को साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाते हैं, बल्कि सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाने में भी सहायक होते हैं।

डॉ. सुरंगमा यादव अपने हाइकु में विभिन्न भावनाओं को खूबसूरती से व्यक्त करती हैं। हर हाइकु में अलग-अलग भाव और संदेश होते हैं। कुछ हाइकु में गहन भावनाएँ होती हैं, कुछ में रूढ़ियों का विरोध, और कुछ में प्रतीकात्मक संदेश होते हैं। वे नारी सशक्तिकरण पर भी एक स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं, यह दिखाते हुए कि स्त्री केवल लता नहीं, बल्कि एक मजबूत वृक्ष है। उनका यथार्थवादी दृष्टिकोण यह बताता है कि नारी में कोमलता तो होनी चाहिए, लेकिन उसे मजबूत भी होना चाहिए, क्योंकि आज का युग छुई-मुई बने रहने का नहीं है। उनके हाइकु लाक्षणिक सौंदर्य और गहरे संदेश से भरे होते हैं, जो सामाजिक कुरीतियों पर सवाल उठाते हैं और नए विचारों को प्रोत्साहित करते हैं। उदाहरण के लिए, 'स्वर्णिम धूप लहरों पे बिखरी / दोनों निखरीं' जैसे प्रयोग उनकी हाइकु की विशेषता को उजागर करते हैं।

इस प्रकार, डॉ. सुरंगमा यादव की हाइकु संक्षिप्त होते हुए भी प्रभावी होती हैं। उनके संवेदनाएँ तीव्र और गहन होती हैं, और हाइकु का आकार भले ही छोटा हो, लेकिन भाव की गहराई पाठ्क को रचनाकार के अनुभव से जुड़ने का मौका देती है। उनके हाइकु में केंद्रीय भाव सघन और सूक्ष्म होते हैं, जो वास्तविक अनुभूतियों से उत्पन्न होते हैं, और इनमें विविध भावनाएँ, संदेश, और प्रतीक शामिल होते हैं।

कटे जंगल

कटे जंगल
बढा जंगलीपन
खोया इन्सान

'कटे जंगल' सुरंगामा यादव के हाइकु संग्रह 'गाएगी सदी' (564 हाइकु) के हरित कथा खण्ड में संकलित हाइकु कविता है। 'कटे जंगल' कविता पारिस्थितिक चिंतन से भरपूर है।

सुरंगमा यादव की हाइकु कविता 'कटे जंगल' मानवता और प्रकृति के बीच बढ़ते असमंजस को बखूबी उजागर करती है। इसमें मानवीय गतिविधियों के कारण पर्यावरण के विनाश की गंभीर स्थिति को चित्रित किया गया है। यह कविता हमें दिखाती है कि कैसे अंधाधुंध वनों की कटाई, औद्योगिकरण, और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहा है। यह कविता केवल वनों की कटाई की स्थिति को नहीं बल्कि उस असंतुलन को भी चित्रित करती है, जो इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। आज मानव प्राकृतिक संसाधनों को अत्यधिक या गलत तरीके से उपयोग कर रहा है। जिससे मात्र मानव को नहीं अन्य जीवजंतुओं को भी खतरे में डाल रहे हैं। इन सबसे प्राकृतिक संतुलन बिगड रहा है।

आर्थिक विकास केलिए कारपरेट कंपनियाँ प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग कर रही हैं। वनों की कटाई, खनन, और जल का अत्यधिक दोहन इस असमंजस के प्रमुख कारण बन रहे हैं। यादव की रचनात्मक अभिव्यक्ति यह दर्शाती है कि वनों की कटाई न केवल संसाधनों की कमी का कारण बनती है, बल्कि पारिस्थितिकी तंत्रों को भी असंतुलित करती है।

स्पष्ट है मुनाफे को लक्षय कर कंपनियाँ प्रदूषण, भूमि उपयोग परिवर्तन, और वनों की कटाई जैसी गतिविधियाँ करती हैं, तो यह पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुँचाती हैं। यादव की काव्यात्मक अभिव्यक्ति में यह स्पष्ट है कि औद्योगिकरण और शहरीकरण के कारण बढ़ते प्रदूषण स्तर ने प्राकृतिक संसाधनों की स्थिरता को खतरे में डाल दिया है। जलवायु परिवर्तन के कारण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का स्तर बढ़ रहा है, जिससे मौसम की चरम स्थितियाँ और प्राकृतिक आपदाएँ आम हो गई हैं।

कविता में प्रयुक्त खोया इन्सान जैसे शब्द मरती मानवता की ओर इशारा करते हैं। आज का समाज तेजी से आत्मकेंद्रित होता जा रहा है, जहाँ दया, सहानुभूति, और संवेदनशीलता जैसे मानवीय मूल्य नष्ट हो रहा है। यह स्थिति हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि हमारी व्यस्त जीवनशैली, तकनीकी विकास, और एक-दूसरे के प्रति अनदेखी से प्रभावित होती है। यदि हम संवेदनशीलता और मानवता को बढ़ावा दें, तो हम पर्यावरण की रक्षा में भी अधिक सक्रिय हो सकते हैं।

अंततः 'कटे जंगल' कविता सतत विकास की अवधारणा को अपनाने की आवश्यकता पर बल देती है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग को प्राथमिकता दी जाती है। कवि यह दर्शाते हैं कि हमें दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जहाँ व्यवसायों को तात्कालिक आर्थिक लाभ से अधिक दीर्घकालिक पर्यावरणीय स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करना होगा। इस प्रकार, सुरंगमा यादव की 'कटे जंगल' कविता केवल वनों की कटाई की समस्या को ही नहीं, बल्कि मानवता और प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता को भी दर्शाती है। यह कविता हमें एकजुट होकर प्रकृति की रक्षा और मानवता के मूल्यों को पुनर्जीवित करने की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करती है।

सुरंगमा यादव ने इस कविता के माध्यम से हमें यह सोचने पर मजबूर किया है कि हमारे कार्यों का क्या प्रभाव पड़ रहा है,

और हमें पर्यावरण के प्रति संवेदनशील रहने की आवश्यकता है। यह कविता हमें यह संदेश देती है कि हमें अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए एकजुट होकर काम करना होगा, ताकि हम इस विनाश की खाई से बाहर निकल सकें।

Critical OVerview / अवलोकन

'हाइकु' एक अनूठी जापानी काव्य विधा है, जो आज विश्वभर में लोकप्रिय हो चुकी है और इसे अंग्रेज़ी, हिंदी, और अन्य भाषाओं में लिखा जा रहा है। इसकी लघुता और तीन पंक्तियों में प्रकृति के विविध चित्रों का अंकन इसे कवियों के लिए एक आकर्षक माध्यम बनाता है। समकालीन हाइकु में पारंपरिक शैली के साथ-साथ प्रयोगात्मकता भी देखने को मिलती है, जिसमें छंद और तुकबंदी का उपयोग किया जाता है। हालांकि, हाइकु केवल प्रकृति-चित्रण तक सीमित नहीं है; यह मानव जीवन, अंतर्मन के भावों, और रूपक अलंकार का भी समावेश करता है। लेकिन यह खेदजनक है कि कई रचनाकार हाइकु की परिभाषा का पालन नहीं कर रहे हैं और अपने विचारों को तीन पंक्तियों में फैलाकर इसे हाइकु का नाम दे रहे हैं। इसलिए, आवश्यक है कि रचनाकार इस विधा को गंभीरता से लें और बड़े अभ्यास के बाद ही इस पर हाथ आजमाएँ। हाइकु का सही उपयोग इस काव्य की गरिमा को बनाए रखने में महत्वपूर्ण है।

हाइकु को कुछ पाश्चात्य समीक्षकों ने प्रकृति-काव्य भी कहा है। ऋतु का हाइकु के साथ गहरा संबंध रहा है। प्रकृति-चित्रों की सजीवता ऋतु से जुड़ी रहती है। प्रायः हाइकु की एक पंक्ति में ऋतु का उल्लेख होता है अथवा ऋतु का संकेत-बोधक कोई प्रतीक शब्द होता है। हाइकु दृष्टि मनुष्य को प्रकृति के एक अंग के रूप में देखती है। यहाँ तक कि मनुष्य के कार्य-व्यापार भी न रहकर कहीं-कहीं प्रकृति के साथ जुड़ जाते हैं। हिन्दी हाइकु में एक भिन्न स्वर उभर रहा है। वह स्वर है सामाजिक व राजनीतिक व्यंग्य का। हिन्दी हाइकु ने मूल हाइकु की लघुता और संक्षिप्तता को अपनाया है पर वस्तु बोध उसका अपना है। इसे अस्वीकार करना न तो संभव होगा और न उचित ही। परन्तु केवल एक सूत्र वाक्य अथवा शब्द-क्रीड़ा से रचित किसी भी 17 अक्षरी तीन पंक्तियों वाली रचना को हाइकु की संज्ञा नहीं दी जा सकती। हाइकु की तीन पंक्तियों में प्रत्येक पंक्ति की स्वतंत्र सार्थकता आवश्यक है। प्रत्येक पंक्ति एक समन्वित प्रभाव की सृष्टि करती है। प्रत्येक शब्द साक्षात अनुभव होता है और कविता के अंतिम शब्द तक पहुँचते ही एक पूर्ण बिम्ब, एक गहन भाव-बोध पाठक की चेतना को अभिभूत कर लेता है। हाइकु मूलतः एक भाव या स्थिति के सौंदर्यानुभूति जन्य चरम क्षण की अभिव्यक्ति की कविता है। जापानी कवि बाशो के अनुसार एक अच्छा हाइकु क्षण की अभिव्यक्ति होते हुए भी किसी शाश्वत जीवन-सत्य की अभिव्यक्ति होता है।

डॉ सुरंगमा यादव एक उभरती हुई हाइकुकार हैं। उनकी हाइकु कविता संक्षिप्त होते हुए भी गहन भावनाएँ और सामाजिक मुद्दों पर विचार प्रस्तुत करती हैं। नारी सशक्तिकरण, सामाजिक असमानता, और पर्यावरण संरक्षण। उनकी रचनाएँ पाठकों को भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं और विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से सशक्त संदेश देती हैं।

सुरंगमा यादव की हाइकु कविता 'कटे जंगल' मानवता और प्रकृति के बीच असंतुलन को उजागर करती है, जो वनों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग का परिणाम है। यह कविता आर्थिक विकास के नाम पर हो रहे प्रदूषण और पारिस्थितिक असंतुलन की गंभीरता को दर्शाती है। 'खोया इंसान' जैसे प्रयोग मानवता के मूल्यों में गिरावट की ओर इशारा करते हैं। अंततः यह कविता सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर बल देती है, हमें प्रेरित करती है कि हम प्रकृति की रक्षा और मानवता के मूल्यों को पुनर्जीवित करने की दिशा में काम करें।

Recap / पुनरावृत्ति

- हाइकु एक छोटी कविता है, जिसमें कुल सत्रह (17) अक्षर होते हैं
- इसमें तीन पंक्तियाँ हैं, पहली में 5 अक्षर, दूसरी में 7 अक्षर, और तीसरी में 5 अक्षर होते हैं।
- हाइकु में 5-7-5 का नियम बहुत महत्वपूर्ण है।
- हाइकु संक्षिप्त और प्रभावशाली रचना है ।
- गहन भावनाएँ और संवेदनाएँ व्यक्त करती है।
- पाठक को लेखक के भावनात्मक अनुभव से जोड़ती है।
- सहजता, हाइकु का विशिष्ट गुण है।
- हाइकु की छोटी आकार इसकी खासियत और सीमा दोनों है।
- यह अनुभूति के क्षण को एक निमिष, पल, या सांस में व्यक्त कर सकता है
- शब्दों की संख्या उतनी ही होनी चाहिए जितनी उस क्षण को व्यक्त करने के लिए जरूरी है
- हाइकु में कोई भी शब्द बेकार नहीं होना चाहिए
- डाँ सुरंगमा यादव के हाइकु उनकी तीव्र भावनाओं से उत्पन्न होते हैं और वास्तविक अनुभवों पर आधारित होते हैं
- डाँ सुरंगमा यादव की कविताएँ नारी की दयनीय स्थिति, बाढ़, दूषित नदियाँ, और बुजुर्गों की मानसिकता जैसे सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती है
- डॉ. सुरंगमा यादव की हाइकु संक्षिप्त होते हुए भी प्रभावी होती हैं
- डॉ. सुरंगमा यादव के हाइकु में केंद्रीय भाव सघन और सूक्ष्म होते हैं, जो वास्तविक अनुभूतियों से उत्पन्न होते हैं
- कविता मानवता और प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता को दर्शाती है
- 'कटे जंगल' पर्यावरणीय संकट की गंभीरता को उजागर करती है
- कविता में समाज में संवेदनशीलता की कमी और आत्मकेंद्रित जीवनशैली को दर्शाया गया है
- आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और संतुलित पर्यावरण सुनिश्चित करने का प्रयास की ओर इशारा करता है

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हाइकु शब्द की उत्पत्ति किस चीनी छंद से मानी जाती है?
2. कैनेथ यशुदा के अनुसार हाइकु का विकासक्रम किस प्रकार है?
3. डाँ सुरंगमा यादव को 'बदायूँ श्री' सम्मान कब प्राप्त हुआ?
4. डाँ सुरंगमा यादव का जन्म कहाँ हुआ था?
5. 'हाइकु दैनिक जीवन में अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति है, पर वह सत्य एक विराट सत्य का अंग होना चाहिए।' यह कथन किसका है ?
6. जेन शब्द का विकास किस शब्द से माना जाता है और यह किस साधना पद्धति से संबंधित है?
7. 'कटे जंगल' किस हाइकु संग्रह में संकलित है?
8. 'गाएगी सदी' संग्रह में कुल कितने हाइकु हैं?

Answers उत्तर

1. 'होक्कू'
2. रेंगा की प्रथम तीन पंक्तियों से हाइकाइ, हाइकाइ से होक्कू, और होक्कू से हाइकु ।
3. 'बदायूँ श्री' सम्मान 16 फरवरी 2013 को प्राप्त हुआ।
4. उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बदायू जिले में हुआ था।
5. बाशो
6. जेन शब्द का विकास हिन्दी के ध्यान शब्द से माना जाता है और यह बौद्ध धर्म की साधना पद्धति से संबंधित है।
7. 'गाएगी सदी'
8. 564 हाइकु

Assignments प्रदत्त कार्य

1. हाइकु कविता के उद्‌भव और विकास पर टिप्पणी लिखिए।
2. हाइकु कविता की विशिष्ट विशेषताओं पर आलेख तैयार कीजिए।
3. प्रमुख हाइकु कवियों का परिचय दीजिए ।
4. प्रसिद्ध हाइकु कवि सुरंगामा यादव का विस्तृत परिचय दें ।
5. हाइकु कविता 'कटे जंगल' का विश्लेषण करें और इसके विषयों और महत्व पर चर्चा कीजिए ।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हाइक- काव्य विश्वकोश - डॉ. भगवतशरण अग्रवाल
2. गाएगी सदी - डॉ. सुरंगमा यादव

BLOCK 06

अनुवाद

इकाई 1

अनुवाद : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अनुवाद की व्युत्पत्ति
- अनुवाद शब्द का अर्थ
- अनुवाद की परिभाषा एवं स्वरूप

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अनुवाद एक भाषिक प्रक्रिया है। अनुवाद का अंग्रेज़ी शब्द है Translation। अनुवाद शब्द संस्कृत का है। इसका मूल अर्थ है पुनःकथन या किसी के कहने के बाद कहना ।

Key themes / मुख्य प्रसंग

- अनुवाद स्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में रूपांतरित करने की प्रक्रिया है।
- अनुवाद किये जानेवाली सामग्री को मूलपाठ और रूपांतरित सामग्री को अनुदिन पाठ कहते है।
- अनुवादक को मूल पाठ और अनुदिन पाठ की अच्छी जानकारी की ज़रूरत है।

Discussion / चर्चा

अनुवाद शब्द का मतलब, इसकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ, अनुवाद के संबंध में भारत के एवं पश्चिमी भाषा वैज्ञानिकों के मत।

1. **अनुवाद की व्युत्पत्ति** : अनुअवद्अधञ् से उत्पन्न संस्कृत शब्द है। यह मूलतः संस्कृत के 'वद' धातु से विकसित शब्द है। संस्कृत में 'वद्' धातु में 'धञ्' प्रत्यय लगने से वाद शब्द बनता है। संस्कृत का 'धञ्' प्रत्यय जब किसी धातु अथवा मूल शब्द से जुडता है तो वह 'आ' की मात्रा के रूप में शब्द के पहले अक्षर के साथ युक्त हो जाता है। इसी के फलस्वरूप 'वद्अधञ्' वाद बना। आगे 'वाद' शब्द में 'अनु' उपसर्ग जुडने से 'अनुवाद' शब्द निकला है। भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपरा से संबंध है अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति। गुरु-मुँह से निकली बातों को गुरुकुल के विद्यार्थी दोहराते थे। पुराने ज़माने में गुरु-मुँह से ज्ञान अर्जित करने की रीति सब कहीं प्रचलित थी। पाणिनी की राय में पहले कही गई किसी बात को फिर से कहना ही अनुवाद है। उन्होंने अपने 'अष्टाध्यायी' में यह सुव्यक्त किया है। आचार्य भर्तृहरि ने अपने 'वाक्यप्रदीय' में अनुवाद शब्द का प्रयोग कथन की आवृत्ति के अर्थ में किया है।

2. **अनुवाद शब्द का अर्थ** : अनुवाद का मूल अर्थ है 'पुनः कथन' या 'किसी के कहने के बाद कहना'। अनुवाद का अंग्रेज़ी शब्द है Translation। Translation शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन के शब्द Translation से हुई है जिसका अर्थ होता है- carrying across अथवा, bringing across। Trans का अर्थ है 'पार' और lation 'ले जाने की क्रिया' के अर्थ में आता है। Translation शब्द का अर्थ है एक भाषा के लिखित पाठ को दूसरी भाषा में ले जाना।

3. **अनुवाद की परिभाषा एवं स्वरूपः** एक स्रोत भाषा में अभिव्यक्त विचारों को किसी दूसरी अर्थात् लक्ष्य भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है। किसी एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा के भाषा सामग्री में रूपांतरित कर देना ही अनुवाद है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

पाश्चात्य चिंतकों के अनुसार अनुवाद की परिभाषा देखिए:

डॉ. जॉनसन की राय में 'अनुवाद का तात्पर्य है अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना।' To translate is to change into another language retaining the sense.

ए.एच. स्मित के अनुसार 'अनुवाद का तात्पर्य यह है यथासंभव अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना'।

जे. सी. कैटफर्ड के मत में 'अनुवाद एक भाषा की पाठ परक आदानों का दूसरी भाषा के पाठ परक आदानों में समतुल्यता के आधार पर प्रतिस्थापना है'।

'The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language'.

सिड्नी के अनुसार 'Ideas can be translated but not the words and their associations.'

प्रमुख भाषा वैज्ञानिक डॉ. स्टर्ट के अनुसार 'अनुवाद अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की वह शाखा है जिसका संबंध प्रतीकों के एक सुनिश्चित समुच्चय के अर्थ के अंतरण से है।'

भारत के प्रमुख भाषावैज्ञानिकों की परिभाषा इसी प्रकार है- डॉ. भोलानाथ तिवारी के मत में 'भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद इन्हीं प्रतीकों की प्रतिस्थापना है।' डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर की दृष्टी में 'अनुवाद की प्रविधि एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करने तक सीमित नहीं है। एक भाषा के रूप के कथ्य को दूसरे रूप में प्रस्तुत करना भी अनुवाद है। अनुवाद की प्रविधि के दौरान भाषिक समन्वय हो जाता है।'

रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्णकुमार गोस्वामी के अनुसार 'एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ सामग्री में अंतर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिद्धांत के आधार पर दूसरी भाषा में संगठनात्मक रूपांतरण अथवा सर्जनात्मक पुनर्गठन को ही अनुवाद कहा जाता है।'

डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया के मत में 'अनुवाद वह प्रविधि है जिसके माध्यम से एक भाषा में कही गई बात को, विचार सामग्री को दूसरी भाषा में उसी क्षमता के साथ कह दिया जाना है।'

स्रोत भाषा - लक्ष्य भाषा

अनुवाद का स्वरूप:

भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार अनुवाद के तीन स्वरूप हैं-

1. शाब्दिक अनुवाद 2. भावानुवाद 3. ध्वन्यानुवाद

शब्दानुवाद (Literal Translation)

शाब्दिक अनुवाद वाक्य के स्तर पर होनेवाला अनुवाद है। मूलभाषा से रूपांतरण करते हुए प्रत्येक शब्द, वाक्य, उपवाक्य आदि पर ध्यान देने की ज़रूरत है। स्रोतभाषा के किसी एक शब्द या वाक्य की उपेक्षा नहीं की जाती है। शब्दानुवाद कृत्रिमता से मुक्त होना चाहिए। इसमें असमानता हो तो अनुवाद निष्प्राण होने की संभावना है। इसलिए शाब्दिक अनुवाद पर ज्यादा ध्यान देना ही अच्छा है।

भावानुवाद (Faithful Translation)

भावानुवाद करना मुश्किल बात है। कारण है कि मूल कृति के भावार्थ को दूसरों के सामने रखनी चाहिए। मूलकृति मौलिक रचना होती है। भाषा से संबंधित नियमों पर अच्छी जानकारी होनी चाहिए। इसमें संप्रेषणीयता सबसे महत्वपूर्ण होती है। सर्जनात्मक कृतियों के विषय में भावानुवाद ही उचित है। इसमें अनूदित पाठ मूल पर आधारित मौलिक रचना सी हो जाती है। अनुवादक मूल कति से कुछ आजादी से अपनी इच्छा से अनुवाद करता है अनुवादक का व्यक्तित्व इसमें दिखाई देता है।

छायानुवाद (Free Translation)

छायानुवाद मूल की छायामात्र है। इसमें अनुवाद मूल कृति पढ़ने के बाद जो समझा अथवा उसके मन पर पड़े प्रभाव को लक्ष्यभाषा में रूपांतरण करता है। इस में अनुवादक को पूरी छूट रहती है। छायानुवाद करते वक्त अनुवादक को मूल पाठ के पात्रों के नाम, देशकाल आदि में अपनी इच्छा के अनुसार रूपांतरण करने का अवकाश है। अंग्रेज़ी के Merchant of Venice के अन्टोणियो को अनंत, बसानिया को बसंत, पोशिया को पुरश्री के रूप में रूपांतरण कर सकता है। भारतेन्दु ने Merchant of Venice का अनुवाद 'दुर्लभ बन्धु' नाम से किया था।

साहित्यिक अनुवाद

साहित्यिक अनुवाद में अर्थ की सत्ता नष्ट होने की संभावना अधिक है। पारिभाषिक शब्दों को छोड़ने का अधिकार है।

लक्ष्यभाषा में अनुभूति और रसात्मकता नष्ट नहीं होना चाहिए। साहित्यिक अनुवाद आत्मनिष्ठ अनुवाद है। वह व्यक्तिनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ है। शैली की समस्या साहित्यानुवाद में ही आनी हैं।

साहित्यिक अनुवाद के अंतर्गत काव्यानुवाद, नाटकानुवाद एवं कथा साहित्य का अनुवाद है।

यह प्रायः सूचना प्रधान अनुवाद है वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य में जहाँ तथ्यात्मक तथा पारिभाषिक शब्द अधिक होते हैं वहाँ शाब्दिक अनुवाद किया जाता है। लेकिन भाषा की स्वाभाविकता नष्ट नहीं होना चाहिए।

काव्यानुवाद

अनुवादक की सबसे बडी चुनौती काव्यानुवाद है। क्योंकि मूल कृति की शैली और सौन्दर्य को लक्ष्य भाषा में बनाए रखना असंभव कार्य है। कविता का संगीत, विशिष्ट संस्कार, परिवेश तथा भाव और रस का सम्मिश्रण सबकुछ अनुवादक केलिए चुनौती हैं। काव्यानुवाद अनुवादक की निजी क्षमता पर निर्भर है। कविता के संदर्भ में यह प्रक्रिया पुनःसृष्टि ही है।

भाषावैज्ञानिकों के अनुसार काव्यानुवाद मुश्किल है। काव्यानुवाद में मूल तत्वों का कुछ अंश जुड़ जाता है साथ ही साथ कुछ छूट जाता है। काव्यानुवाद में छंद एवं अलंकारों की अनुवाद कठिन ही है। स्रोत और लक्ष्यभाषा में समान शब्दों की कमी है। अनुवादक के व्यक्तित्व का झलक दर्शनीय है। काव्य सर्जनात्मक प्रक्रिया है। उसमें तथ्य और विचार मूर्त रूप में नहीं होते बल्कि भाव और कल्पना की आश्रय लेकर तरल रूप में अभिव्यक्त हैं। काव्य की प्राण शक्ति लक्षणा और व्यंजना से स्पष्ट होती है। लय, छंद, अलंकार आदि का अनुवाद अत्यंत कठिन है।

नाटकानुवाद

नाटक दो प्रकार के होते हैं- पठनीय एवं अभिनय प्रधान। उपन्यास, कहानी आदि का स्थान पठनीय के अंतर्गत है। अभिनेय में काफ़ी दिक्कत है क्योंकि रंगमंचीय ज्ञान पर पूरा ध्यान देने की जरूरत है। नाटक सृजनात्मक एवं संवेदनात्मक है। भाषा, ध्वनि-संयोजना, प्रकाश-प्रसरण, शब्द, शैली, पात्र आदि पर सूक्ष्म ध्यान रखना चाहिए। नाटक के कार्य (action) का विकास अधिकतर पात्रों के संवाद से होता है। समाज के कई चरित्र पात्र के रूप में आते है जिनकी भाषा, शैली, आचार-व्यवहार आदि एक दूसरे के भिन्न है। ये अनुवादक की चुनौतियाँ है।

कथा साहित्य का अनुवाद

कथा साहित्य के अनुवाद ने विश्व साहित्य को साकार बनाया है। उदाहरण के रूप में शेक्सपीयर, रबीन्द्रनाथ आदि लेखक अपनी भाषा की सीमा को पार कर अन्य देश-विदेशी भाषाओं पर अपना प्रभाव उभार दिया। हिन्दी के नामी साहित्यकार प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय, मलयालम के तकषी, एम. टी. वासुदेवन नायर, बंगला के ताराशंकर, पंजाब के अमृता प्रीतम आदि अनुवाद के माध्यम से विश्व साहित्य में अमिट प्रभाव डाल दिये। इनकी अनूदित रचनाओं में सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक जीवन-मूल्यों की झाँकी मिलती है। कथा साहित्य का अनुवाद करते समय हरेक भाषा की लोकोक्ति एवं मुहावरों पर अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है। मूल पाठ के संदेश को अनूदित पाठ में अंतरित करते समय समतुल्यता के सिद्धांत का पालन अनुवादक को करना है।

वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद

वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद कठिन है। अनुवादक को स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा एवं पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दों पर बल देना पड़ता है। भाषिक स्पष्टता नहीं तो वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद को स्तर नहीं मिलेगा। लक्ष्यभाषा में मानवीकृत (Standardised) पारिभाषिक शब्दावली का उपयोग करना चाहिए। मूल विषय के सही संप्रेषण में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग महत्वपूर्ण होता है। इस विधा के अनुवादक को तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दों का पूरा ज्ञान होना चाहिए।

अनुवाद के उपर्युक्त प्रकार के अलावा जनसंचार, माध्यम, कार्यालय अनुवाद, मशीनी अनुवाद, मुहावरे और लोकोक्तियों का अनुवाद आदि भी हैं। इनके अलावा Gist translation (मूल पाठ का छोटे रूप में लक्ष्य भाषा में अन्तरित करना) Interpretation (आशुअनुवाद) Instant translation (तुरंत अनुवाद) आदि अन्य प्रकार के अनुवाद है।

Critical OVerview / अवलोकन

अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक भाषा में प्रकट की हुई आशय को उसी अर्थ में दूसरी भाषा में प्रकट किया जाता है। इसका अर्थ है मूल पाठ के अर्थ को संरक्षित करते हुए दूसरी भाषा में प्रकट करना। अनुवाद की परिभाषा में भाषाई, सांस्कृतिक और संदर्भगत बारिकियों को ध्यान में रखना है। विभिन्न विद्वानों ने अनुवाद की कई परिभाषाएँ दी है। अनुवाद एक रचनात्मक कार्य है जिसमें भाषाई और सांस्कृतिक समझ की आवश्यकता होती है।

Recap / पुनरावृत्ति

- अनुवाद का अर्थ
- शब्द की व्युत्पत्ति
- परिभाषा एवं स्वरूप

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अनुवाद का अंग्रेज़ी शब्द क्या है?
2. अनुवाद शब्द का मूल अर्थ क्या है?
3. अनुवाद किस भाषा का शब्द है?
4. अनूदित किये जानेवाली सामग्री को क्या कहते हैं?
5. अष्टाध्यायी का लेखक कौन है?
6. छायानुवाद का अंग्रेज़ी शब्द क्या है?

Answers उत्तर

1. Translation
2. पुनःकथन
3. संस्कृत
4. मूलपाठ
5. पाणिनी
6. Free translation

Assignments प्रदत्त कार्य

1. अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति पर आपका मत क्या है?
2. अनुवाद शब्द के अर्थ की समीक्षा कीजिए।
3. ए. एच. स्मित के अनुसार अनुवाद क्या है?
4. अनुवाद के दो परिभाषाओं पर प्रकाश डालिए।
5. अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अनुवाद : भाषाएँ-समस्याएँ : डॉ. भोलानाथ तिवारी।
2. अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार : अज्ञेय।
3. अनुवाद विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी।

इकाई
2

अनुवाद का महत्व और उद्देश्य

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अनुवाद के महत्व के बारे में समझता है
- अनुवाद के उद्देश्य के बारे में समझता है
- विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद का योगदान समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भारत जैसे देश में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। किसी भाषा में अभिव्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथावत प्रस्तुत करना अनुवाद है। मूल पाठ का प्रभाव ठीक रूप से अनूदित भाषा में भी आए तो वह सफल अनुवाद है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

महत्व, उद्देश्य, प्रशासनिक

Discussion / चर्चा

अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डालना। अनुवाद के उद्देश्य पर विचार करना और सफल अनुवादक के गुण की चर्चा।

अनुवाद का महत्व

अनुवाद में समाज की या मानव की एकता और वैयक्तिकता की झलक अनुभूत कर सकते हैं। अनुवाद सर्वदा पाठकों के मन में मूल पाठ का प्रभाव ज़रूर डालें। वास्तव में अनुवाद एक कला है जिसके द्वारा स्पष्टता से स्रोतभाषा के विचार को लक्ष्य भाषा तक पहुँचाता है। अनुवाद लेखन का एक दूसरा रूप है। इसके द्वारा एक भाषा के विचारों को दुनिया के किसी दूसरी भाषा में पहूँचा सकते हैं। मतलब है कि संचित ज्ञान का आदान-प्रदान इसके द्वारा संभव होता है।

अनुवाद का महत्व कई क्षेत्रों में देख सकते हैं:

निरंतर परिवर्तनशीलता का नाम है संस्कृति। यह समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों का रूप है। संस्कृति मानव का अनमोल निधि है। यह मनुष्य के ज्ञान, विश्वास, कला, कानून, रीति- रिवाज़ क्षमताओं और आदतों का पूर्ण रूप है। यह मानव समाज के धार्मिक, दार्शनिक, कलात्मक, परंपरागत प्रथाओं, खान पान, संस्कार आदि का समन्वित रूप है। हमारे समाज में एक दूसरे को समझने केलिए भाषा की ज़रूरत है। भारत के अधिकतर लोग हिंदी बोलनेवाले हैं, लेकिन अन्य भाषा-भाषियों को यह समझने केलिए अनुवाद की ज़रूरत है। हर देश की अपनी संस्कृति है। अनुवाद के द्वारा संस्कृति का आदान-प्रदान संभव है। भाषा की बाधा को दूर कर देश-काल की सीमाओं को पार करने में अनुवाद का योगदान महत्वपूर्ण है। आधुनिक युग में संस्कृति के विकास केलिए अनुवाद एक अनिवार्य साधन है। अनुवाद सांस्कृतिक सेतु है।

अनुवाद का उद्देश्य

आधुनिक मानव को देश की भाषा भाषियों के आलावा अन्यदेशों के भाषा भाषियों से संबन्ध स्थापित करना जरूरी है। अन्य देश के लोगों के साथ सामाजिक सांस्कृतिक, राजनीतिक और व्यापार का संबन्ध स्थापित करने के लिए अनुवाद का आश्रय लेना पडता है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र को विस्तृत करने के लिए अनुवाद की आवश्यकता है।

अनुवाद के द्वारा ज्ञान के क्षेत्र को व्यापक बनाने से अनुवादक

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

एक विशिष्ट प्रकार की सर्जनात्मक भूमिका निभाता है। अनुवादक केलिए सृजनात्मकता और कल्पनाशीलता अनिवार्य है। अनुवाद की बहुआयामी उपयोगिता अनुवाद के कार्य का महत्व प्रकाशित करता है। उदाहरण केलिए यु.एन.ओ में जो भी करतव्य पढा जाता है उसका अनुवाद तुरंत विश्व की अनेक भाषाओं में उपलब्ध कराया जाता है।

राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र में:

देश की प्रगति केलिए नागरिकों के बीच एकता होना अनिवार्य है। अनुवाद के द्वारा एकता संभव होता है। अनुवाद के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर का संदेश भिन्न भाषा - भाषियों तक पहूँचा सकता है जिससे राष्ट्रीय एकता कायम रख सकती है।

साहित्यों में:

विश्व के संपूर्ण साहित्यिक रचनाओं का परिचय हम आज अनुवाद के माध्यम से ही प्राप्त कर सकते हैं। साहित्य के अनुवाद से विभिन्न देशों के लोगों, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन के अधिक निकट हो जाते हैं जिससे हमारे जीवन का दृष्टिकोण व्यापक हो जाता है। पंचतंत्र का अनुवाद विश्व का अनेक भाषाओं में हो चुका है। कालिदास, तुलसी, टागोर, मलयालम के तकषि आदि साहित्यकारों की रचनाओं का खूब प्रचार अन्य देशों में अनुवाद से ही हुआ है। अनुवाद एक भाषा के जीवन और संस्कार का दूसरी भाषा में होनेवाला आदान - प्रदान है।

दुनिया के लोगों को दूसरे लोगों के साहित्य को पढने और समझने केलिए अनुवाद की ज़रूरत है। इसके द्वारा विभिन्न देश के लोगों को विश्व साहित्य की पूरी जानकारी मिलती है। नये साहित्य और ज्ञान का विपुल भंडार किसी एक देश तक सीमित नहीं है। अनुवाद के द्वारा साहित्य अपनी सीमा को पारकर पूरे संसार में पहूँचता हैं। विश्व साहित्य के विकास में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। विदेशी भाषाओं में लिखे बाइबिल, कुरान आदि ग्रन्थों की जानकारी अनुवाद के द्वारा प्राप्त कर सकते हें। अंग्रेज़ी साहित्य के कई नाटक, उपन्यास, कहानी एवं निबंधों का अनुवाद अन्य भाषाओं में उपलब्ध हैं। यह अनुवाद का योगदान है। अनुवाद से कई साहित्यिक विधाओं का परिचय ओर महत्व हमें प्राप्त होता है ।

शिक्षा के क्षेत्र में:

सांस्कृतिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में जो-जो नई विधाएँ चलती रहती है इनका संपूर्ण झलक शिक्षा क्षेत्र में द्रष्टव्य है। शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का स्थान बहुत ऊँचा है। उसके अधिकांश विधाओं में अनुवाद का योगदान महत्वपूर्ण ही है। अनुवाद विकासशील शैक्षिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विश्व स्तर पर शैक्षिक उपलब्धियों को प्रदर्शित करने का माध्यम अनुवाद ही है। हमारी शिक्षा प्रणाली को दूसरों के सामने प्रस्तुत करने और विदेशियों की रीति सीखने-सिखाने की प्रविधि है अनुवाद। विश्व स्तर पर प्राप्त ज्ञान को शिक्षा में समाहित करना अनुवाद का महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रशासनिक क्षेत्र में:

प्रशासनिक हिन्दी सामान्य हिन्दी से भिन्न है। अनुवाद के माध्यम से प्रशासनिक हिन्दी का भंडार समृद्ध हुआ है। इससे विकसित प्रशासनिक हिन्दी में औपचारिकता अधिक है। हमारे संविधान में हिन्दी को राजभाषा (official language) का पद भी दिया है परंतु प्रशासनिक बातें अंग्रेज़ी में चल रही है। सफल अनुवादक सरकारी काम-काज का अनुवाद करते हैं।

प्रशासन, कानून, शिक्षा, वाणिज्य, व्यवसाय और कृषि के क्षेत्र के नये-नये स्पंदन को सामान्य जनता तक पहुँचाने केलिए अनुवाद अनिवार्य है। जो भी हो सारे के सारे क्षेत्र में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है।

Critical OVerview / अवलोकन

अनुवाद भिन्न भाषाओं के बीच होनेवाली एक भाषिक प्रक्रिया है। मानव को अपने देश वासियों के अलावा अन्य देश वासियों से भी संबंध स्थापित करना पडता है। विज्ञान के विकास ने देशों के दूरी कम कर दी है। अन्य देशों के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और व्यापार का संबंध स्थापित करना अनिवार्य हो गया है। अन्य देशों की संस्कृति और साहित्य की जानकारी केलिए अनुवाद महत्वपूर्ण है।

अनुवाद के द्वारा ज्ञान के क्षेत्र को व्यापक बनाने में अनुवादक एक सर्जनात्मक भूमिका निभाता है। देश-विदेश के महान साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद यथासमय हो जाता है और मानव एक दूसरे से अधिक निकट का संपर्क स्थापित करता है। भूमण्डलीकरण के इस युग में व्यापार, पर्यटन आदि सभी क्षेत्रों में अनुवाद की बडी माँग है। राष्ट्रीय एकता कायम रखने में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत बहुभाषी देश हैं। इन विभिन्न भाषा भाषी लोगों के बीच अनुवाद से

ही भावात्मक एकता कायम रख सकती है। शिक्षा, कानून, प्रशासन, चिकित्सा, वाणिज्य, कृषि, पर्यटन आदि क्षेत्रों में भारतीयों को एक सूत्र में बाँध कर रखने का कार्य अनुवाद द्वारा होता है। अनुवाद भारत की विभिन्नता में एकता की स्थापना करता है। अन्तर्देशीय मंच पर, संस्कृति के विकास में, साहित्य के अध्ययन में तथा प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद का अपना विशिष्ट स्थान है।

Recap / पुनरावृत्ति

- अनुवाद के महत्व और उद्देश्य की झाँकी

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. किसी देश के लोगों को अन्य देश के साहित्य को पढ़ने और समझने केलिए किसकी ज़रूरत है?
2. 'राजभाषा' का पर्यायवाची अंग्रेज़ी शब्द क्या है?
3. अनुवाद किन-किन क्षेत्रों में उपयोगी है?
4. अन्य देशों के लोगों से संबन्ध स्थापित करने का माध्यम क्या है?

Answers उत्तर

1. अनुवाद
2. Official language
3. शिक्षा, प्रशासन
4. अनुवाद

Assignments प्रदत्त कार्य

1. अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डालिए।
2. प्रशासनिक क्षेत्र के अनुवाद के महत्व पर विचार कीजिए।
3. शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का योगदान क्या है?
4. साहित्य में अनुवाद का महत्व कम है या नहीं? मत प्रकट कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अनुवाद : भाषाएँ-समस्याएँ : डॉ. भोलानाथ तिवारी।
2. अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार : अज्ञेय।
3. अनुवाद विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 3

अनुवाद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अनुवाद करने की क्षमता बढ़ता है
- हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद करने की रीति समझता है
- अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद करने की पद्धति से परिचित होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अनुवाद का पर्यायवाची अंग्रेज़ी शब्द है- च्ध्द्रठ्ठदद्मथ्ठ्ठद्यत्दृद । आजकल अनुवाद का हर क्षेत्र में बहुत बड़ा स्थान है। इसलिए अनुवाद करने की क्षमता का विकास करना आवश्यक है। यद्यपि अनुवाद एक कला है। वह विज्ञान भी है और इस कला- विज्ञान की कौशल को अभ्यास से विकसित कर सकते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अनुवाद, अंग्रेज़ी से हिन्दी, हिन्दी से अंग्रेज़ी

Discussion / चर्चा

अभ्यासार्थ गद्यांश

English to Hindi

1. Arabia is well – known for its camels and horses. The Arab finds the camel particularly useful. It can go without water for weeks and as you know, there are many deserts in Arabia, where it is difficult to find water. So, the Arabs use the camel for travelling and for carrying goods over the deserts. It has broad flat feet with which it can walk easily over the desert sands. Because it is useful for travelling in deserts, the camel is called 'The ship of the desert'.

[Arabia - अरब; well-known - सुप्रसिद्ध; camel - ऊँट; particularly - खासतौर पर; desert - रेगिस्तान; flat - फैला हुआ; sand - रेत, बालू]

2. Vidyasagar was a very generous and charitable man. From his earliest years he helped the poor and needy to the utmost of his power. As a boy at school, he often gave the food he had to eat to another boy who had none. If one of his school -fellows fell ill little Eshwar would go to his house, sit by his bed and nurse him. His name became a household word in Bengal. Rich and poor, high and low, all loved him alike. No begger ever asked him for relief in vain.

[generous - उदार; charitable - दानशील; needy - ज़रूरतमन्द; utmost of his power - अपनी सम्पूण शक्ति से; school-fellows - सहपाठी; to nurse - परिचर्या; relief - सहायता]

3. During summer the whole of India is very hot. At that time, it is very difficult to do any work. People usually go to the hill stations to escape from the heat. Kodaikanal is a popular summer resort in south India. It is situated on the

Palani hills. You have to get down at Kodaikanal Road station of the Southern Railway to go to Kodaikanal. This station is between Tiruchirappalli and Madurai. After about 35 miles on the plains, one has to go up the hills. There is a well laid road on the hills. Kodaikanal town is situated at a distance of about 30 miles up the hills

[Whole of India - सारा भारत; usually - सामान्यतया; hill station - पर्वतीय स्तान; popular - लोकप्रिय; situated - बस बुआ; well laid road - पक्की सडक; plain - समतलः hill - पहाडी]

4. After Babr had ruled over Delhi for four years, his hear and only son fell ill. In spite of the best treatment his illness became worse and worse. At last Babar called his courtiers and asked them, "Please tell me what I should do, so that my son may regain his health". One of the courtiers said, if you sacrifice one of the things dearest to you, he will get well". On this Babr said, "In this world what can be dearer to one than his own life? Yes, I am ready to sacrifice my life to save my son". So, saying, he went near Humayun's bed and prayed God. God heard his prayer. Humayun began to improve from then and Babar feel ill and died a few days later

[dear - प्यारा; only son - इकलौता बेटा; to rule over - शासम करना; in spite of - के दावजूद; courtiers - दरबारी; to sacrifice - त्याग करा; to improve - सुघरना]

5. In order to keep our bodies strong and healthy we should take regular exercise. Foot-ball, cricket, running, jumping, walking is almost useful for keeping us in good health. And when we enjoy a game, we get pleasure as well as health from it. So, you should all take part in the games that are played at school, for it is as much our duty to keep our bodies strong as it is to fill our minds with knowledge.

If our bodies are weak and sickly our minds too are likely to be sickly and unhealthy. A good brain should have healthy body to live in.

[Regular -नियमित; exercise - व्यायाम; walking - टहलाना; sickly - बीमार; unhealthy - एस्वस्थ; brain - मस्तिष्क]

Hindi to English

1. आजकल कागज़ बहुत महंगा हो गया है। इसका दाम पहले की अपेक्षा तीन गुना लगता है। कभी-कभी मिलता ही नहीं है। कागज़ का उपयोग करने में सावदान रहना चाहिए। अब में बताऊँगा कि कागज़ के विषय में गाँधीजी कितने सावधान थे। प्रतिदिन वे सैकडों चिट्ठियाँ पाते थे। गाँधीजी उन रत्रों को फेंकते नहीं थे। वे उनकी पीठ पर अपने पत्रों के मसौदे लिखते थे। वे अपने उपयोग केलिए कागज़ बिलकुल नहीं खरीदते थे।

[कागज़ - paper, महंगा - costly, दाम - price, सावधान - careful, सौंकडों - hundreds of, मसौदा - Draft]

2. दक्षिण भारत में हिन्दी की प्रगति देखकर मुझे असीम प्रसन्नता होती है। समूचे भारत केलिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में अनेक सुविधाएँ हैं। सारे भारत को एक डोरी में बांधने केलिए हिन्दी एक सूत्र है। कुछ लोगों की शिकायत है कि दूसरी भाषाएँ सीखना मुश्किल है। वास्तव में इसमें कोई कठिनाई नहीं है।

[प्रगति - progress, सामान्य - common, डोरी - string, बांधना - to connect; शिकायत - complaint, मुश्किल - difficult]

3. स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक होते हैं। एक दूसरे के बिना दोनों का जीवन अपूर्ण होता है। भारतीय आदर्शों के अनुसार गृहिणी है। नारी के बिना गृह गृह ही नहीं रहता। वह घर की व्यवस्था करती है। बच्चे की सर्वप्रथम गुरु उसकी माँ ही होती है।

[अपूर्ण - incomplete, आदर्श - culture, गृहिणी - housewife, व्यवस्था - arrangement, गुरु - teacher]

4. दूरदर्शन का आविष्कार इग्लैंड में सन् 1921 में हुआ। भारत में यह 1951 में पहुँचा। यह मनोरंजन का साधन है। इसके द्वारा ज्ञानवर्धन भी होता है। दूरदर्शन में प्रसारित खबरें अपढ़ और वृद्धजनों केलिए वरदान है। शैक्षिक विशयों की नई जानकारी विद्यार्थियों को इसके द्वारा मिलती है। संगीत, साहित्य और कला के प्रचार में दूरदर्शन का बड़ा हाथ है।

[मनोरंजन - entertainment, आविष्कार - discovery, खबर - news, अपढ़ - illeterate, वरदान - Blessing,

प्रचार - broadcasting]

5. श्री. हरिवंशराय बच्चन हिन्दी के नामी कवि हैं। उनकी पहली कविता 1920 में लिखी थी, जब उनकी आयु केवल तेरह बरस की थी। वे हिन्दी फिल्मी क्षेत्र के राजा अमिताभ बच्चन के पिता हैं। उन्होंने 1930 के सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया। वे हालावादी कवि हैं। उन्होंने हिन्दी कविता को अलग रास्ता दिखाया।

[नामी - famous, आयु - age, बरस - year, आंदोलन - fight, रात्ता - road]

Recap / पुनरावृत्ति

- आज के दौर में हर क्षेत्र में अनुवाद प्रमुख स्थान है।
- अनुवाद बहुत उपयोगी है।
- अंग्रेज़ी एवं हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता बढ़ाना चाहिए।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. 'भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है, जहाँ विभिन्न धर्म, भाषाएँ और रीति-रिवाज़ हैं। यहाँ के लोग मेहमाननवाज़ हैं और परंपराओं को महत्व देते हैं। भारत की प्राकृतिक सौंदर्यता और ऐतिहासिक स्थल दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। हिमालय की चोटियाँ, गंगा की धाराएँ और राजस्थान के मरुस्थल यहाँ की प्राकृतिक विविधता को दर्शाते हैं। भारत की सांस्कृतिक धरोहर और ऐतिहासिक महत्व इसे विश्व का एक अनोखा देश बनाता है।'
   1. विविध - Diverse, Various
   2. मेहमाननवाज़ - Hospitable, Welcoming
   3. रीति-रिवाज़ - Customs, Traditions
   4. प्राकृतिक - Natural
   5. सौंदर्यता - Beauty
   6. ऐतिहासिक - Historical
   7. मरुस्थल - Desert
   8. सांस्कृतिक - Cultural
   9. धरोहर - Heritage
   10. धाराएँ - Streams, Flows
   11. चोटियाँ - Peaks, Summits
   12. अनोखा - Unique
2. "The sun rises over the mountains, casting a golden light on the valley. The birds sing their sweet melodies, filling the air with joy. A gentle breeze rustles the leaves of the trees, creating a soothing sound. In this peaceful atmosphere, people come to relax and unwind. They breathe in the fresh air, feeling refreshed and rejuvenated. The beauty of nature has a calming effect on the mind and soul."
   1. Casting - फेंकना/डालना

2. Golden - सुनहरा
3. Melodies - सुरीली
4. Rustles - खरखराहट/सरसराहट
5. Soothing - शांत/सुखद
6. Unwind - आराम करना/तनाव मुक्त होना
7. Rejuvenated - नवीनीकृत
8. Calming - शांत/प्रसन्न)

SGOU

Model Question Paper Sets

SGOU

Model Question Paper

Set - 01

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ....

Reg. No : ....

Name : ....…

FOURTH SEMESTER HINDI LANGUAGE CORE COURSE
EXAMINATION

B21HD02LC - हिन्दी पद्य साहित्य और अनुवाद

(CBCS - UG)

2022-23 - Admission Onwards

Time:3 Hours | Max Marks: 70

SECTION - A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखिए। एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. कबीरदास किस धारा के कवि है?
2. महादेवी वर्मा को किस रचना केलिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?
3. छायावाद के चार स्तंभ कौन-कौन है?
4. हाइकु शब्द की उत्पत्ति किस चीनी छंद से मानी जाती है?
5. छायानुवाद का अंग्रेजी शब्द क्या है?
6. 'योगफल' किसकी रचना है?
7. 'नये इलाके में' प्रकाशन वर्ष?
8. 'कटे जंगल' किसकी रचना है?
9. 'सरोज स्मृति' किसकी रचना है?
10. 'किरण' नामक कविता किस काव्य संकलन में संग्रहीत है?
11. 'ओ रे प्रेत
    कड़कर बोले नरक के मालिक यमराज
    सच-सच बतला' किसकी पंक्तियाँ है?
12. 'भिक्षुक' किसकी कविता है।
13. छायावाद का प्रयोग सबसे पहले किसने किया?
14. अष्टछाप के संस्थापक कौन है?
15. 'प्रेत का बयान' कविता का रचनाकार कौन है? (1x10=10)

SECTION -B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। दो या दो से अधिक वाक्यों में उत्तर लिखिए।

16. हाइकु शब्द की उत्पत्ति किस से हुआ है?
17. छायावाद के प्रमुख प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए।
18. कबीर के माँ-बाप कौन है?
19. अनुवाद शब्द का मूल अर्थ क्या है?
20. अरुण कमल के कविता संग्रह का नाम लिखिए।
21. कृष्ण के प्रति सूरदास की भक्ति कौन-सी है?
22. अरुण कमल का जन्म कब और कहाँ हुआ?
23. 'वक्त' कविता का उद्देश्य क्या है?
24. प्रसाद की रचनाओं का नाम लिखिए।
25. तुलसीदास का रचनाओं का परिचय दीजिए। (2x5=10)

SECTION -C

किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर लिखिए। एक परिच्छेद में उत्तर लिखिए।

26. प्रमुख हाइकु कवियों का परिचय दीजिए।
27. रामचारित मानस की विशेषताएँ लिखिए।
28. 'वक्त' कविता पर टिप्पणी लिखिए।।
29. पठित पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि सूर एक अग्रणी कृष्ण भक्त कवि हैं?
30. 'किरण' कविता का सारांश लिखकर उसकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
31. अनुवाद का महत्व एवं उद्देश पर लिखिए।
32. कबीर की भक्ति भावना पर विचार कीजिए।
33. 'प्रेत का बयान' कविता द्वारा कौन-कौन सामाजिक विसंगतियों पर कवि प्रकाश डालते है?
34. अनुवाद शब्द के अर्थ की समीक्षा कीजिए।
35. 'कटे जंगल' कविता पर आलेख लिखिए।
36. समकालीन कविता की काव्य प्रवृत्तियाँ।
37. नागार्जुन की व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर टिप्पणी तैयार कीजिए। (5 x 6 =30)

SECTION -D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 200 शब्दों के अन्दर उत्तर लिखिए।

38. हाइकु कविता की विशेषताएँ।
39. अनुवाद शब्द की उत्पत्ति एवं प्रकार पर विचार कर लीजिए।
40. प्रगतिवाद की प्रवृत्तियों पर टिप्पणी लिखिए।
41. तुलसीदास की दार्शनिकता। (10 x 2 =20)

Model Question Paper

Set - 02

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ....

Reg. No : ....

Name : ....

FOURTH SEMESTER HINDI LANGUAGE CORE COURSE EXAMINATION

B21HD02LC - हिन्दी पद्य साहित्य और अनुवाद

(CBCS - UG)

2022-23 - Admission Onwards

Time:3 Hours

Max Marks: 70

SECTION - A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखिए। एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. 'कटे जंगल' किस हाइकु संग्रह में संकलित है?
2. 'सरोज स्मृति' किस प्रकार की रचना है?
3. कबीर का जन्म कहाँ हुआ?
4. नागार्जुन किस काव्यधारा के कवि हैं?
5. अनुवाद किस धातु का विकसित शब्द है?
6. अरुण कमल का पहला काव्य संग्रह का नाम क्या है?
7. 'गाएगी सदी' हाइकु-संग्रह में कुल कितने हाईकु है?
8. तुलसीदास के बचपन का नाम?
9. छायावाद शब्द का सबसे पहला प्रयोग किसने किया?
10. 'शिक्षक' कविता निराला के किस काव्य संग्रह में संकलित है?
11. 'किरण' नाम की कविता किसने लिखा?
12. वह आता
    दो टूक कलेजे को करता, पछताता।
    पथ पर आता। यह पंक्तियाँ किसकी है?
13. तुलसीदास की भाषा कौन सी है?
14. 'अष्टछाप' के स्थापक कौन हैं
15. अनूदित किये जानेवाली सामग्री को क्या कहते हैं?

(1x10=10)

SECTION -B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। दो या दो से अधिक वाक्यों में उत्तर लिखिए।

16. कबीरदास के गुरु कौन है?
17. प्रगतिवादी कविता की दो विशेषता लिखिए?
18. 'फ्री' अथवा 'नव-हाइकु' से तात्पर्य क्या है?
19. निराला की रचनाओं के नाम लिखिए?
20. नागार्जुन का असली नाम क्या है?
21. हाइकु कविता में कितने अक्षर है?
22. सुमित्रानंदन पंत के चार काव्यसंग्रह का नाम लिखिए?
23. प्रसाद के कहानी संग्रहों का नाम लिखिए?
24. अरुण कमल को किस रचना केलिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था?
25. सधुक्कड़ी भाषा से तात्पर्य क्या है? (2 x 5 =10)

SECTION -C

किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर लिखिए। एक परिच्छेद में उत्तर लिखिए।

26. छायावाद के चार स्तंभ।
27. कबीर की रचनाओं की विशेषता लिखिए।
28. समकालीन कविता की विशेषताएँ लिखिए।
29. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
    Every morning, the sun rises and brings light to the world. Birds begin to sing, and the air is filled with fresh energy. People start their day by having breakfast and preparing for work or school. Children go to school with their backpacks, and adults head to their jobs. The streets become busy with cars and people. By the end of the day, everyone returns home, where they relax and enjoy their evening with family. It is a daily routine that brings a sense of normalcy and structure to our lives.
30. सुरंगमा यादव की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।
31. हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए।
    श्री. हरिवंशराय बच्चन हिन्दी के नामी कवि हैं। उनकीपहली कविता 1920 में लिखी थी, जब उनकी आयु केवल तेरह बरस की थी। वे हिन्दी फिल्मी क्षेत्र के राजा अमिताभ बच्चन के पिता हैं। उन्होंने 1930 के सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया। वे हालावादी कवि हैं। उन्होंने हिन्दी कविता को अलग रास्ता दिखाया।
32. 'भिक्षुक' कविता की आलोचना कीजिए।
33. 'प्रेत का बयान' कविता पर टिप्पणी लिखिए।
34. गुरू गोविन्द दोऊ खडे, काके लागूं पाय।
    बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय। व्याख्या कीजिए।
35. अनुवाद का स्वरूप पर आलेख लिखिए।
36. तुलसी का राम।
37. चरण-कमल बंदौ हरि राई।
    जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कुछ दरसाई।।
    बहिरौ सुनै, मूक पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।
    सूरदास स्वामी करुणामय, बार-बार बन्दौं तेहि पाई।। इस पद का व्याख्या प्रस्तुत कीजिए। (5 x 6 =30)

SECTION -D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 200 शब्दों के अन्दर उत्तर लिखिए।

38. सूरदास की भक्ति भावना पर आलेख लिखिए।
39. अनुवाद के अर्थ एवं स्वरूप पर टिप्पणी लिखिए।
40. हाइकु कविता के उत्भव एवं विकास पर टिप्पणी लिखिए।
41. समकालीन कविता पर आलेख लिखिए। (10 x 2 =20)

SGOU

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

हिन्दी पद्य साहित्य और अनुवाद

COURSE CODE: B21HD02LC

SGOU

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841

ISBN 978-81-970303-8-3
9 788197 030383